

सच की दृष्टिक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

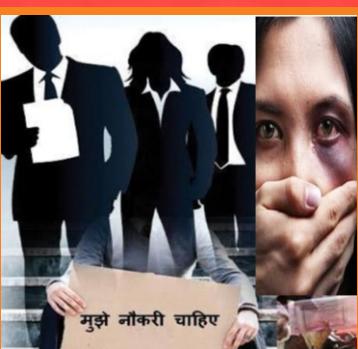


यूपी

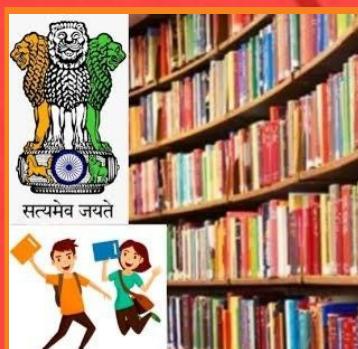
ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट
का विश्लेषण



कलम इनकी जय बोल
कैप्टन लक्ष्मी सहगल



वोटों की राजनीति में
निराश होते युवा



नयी शिक्षा नीति
कितनी कारगर



तुर्की - सीरिया
भूकंप से लें सीख?

रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें! रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें!

चंद्रेश्वर जयसवाल

चेयरमैन पद

(नगर पालिका परिषद पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर)
के प्रबल दावेदार

प्रदेश मंत्री उत्तर प्रदेश युवा उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल
अध्यक्ष - परिवर्तनशील सेवा समिति
वरिष्ठ उपाध्यक्ष - रामनगर औद्योगिक एसोसिएशन



श्री दर्शन वेला
मेरेज लॉन
आपणा लार्डिंग
च्यागत करता है

बुकिंग प्रारम्भ

मैट्रिज अटेन्जमेंट
दिंग सेटेमनी
किंड्री पार्टी
बर्थ-डे पार्टी
कानफेस मीटिंग
वेल्कम एण्ड फेयरवेल पार्टी

एवं इमी तरह के कार्यक्रम के लिए
सम्पर्क करें - 8858978616

P पार्किंग की
उत्तम सुविधा

पता - देशनी पलिक टकूळ के पीछे,
हसिंचांकसुर, मुगलसराय चन्दौली।

रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें!



सरदार अवतार सिंह



पतंजलि



पतंजलि आरोग्य केन्द्र

यहाँ पर सभी प्रकार के रोगों का ईलाज होता है और
(पतंजलि के सभी घरेलु सामान व औषधियाँ मिलती हैं)

मो० : 9565312100

परमार कटरा के सामने, मुगलसराय चन्दौली

रंगो के पर्व होली
की शुभकामनायें!



सच की दरतक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 07, अंक : 11, फरवरी, 2023

संपादक

ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक

आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक

मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक

शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार

दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर

बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी

अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी

अजय राय

अशोक शर्मा

जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स

संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय

सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी

पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)

म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)

मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी ठोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।



स्टेट ब्यूरो प्रभारी

- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
- दीपाली सोढ़ी - असम
- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
- श्री रामकृष्ण सहस्रबुद्धे - महाराष्ट्र
- डा. जय राम झा - बिहार

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
- सुनील मित्तल जिला प्रभारी धौलपुर (राजस्थान)
- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी.)
- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी.)
- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी.)
- साहिल भारती प्रभारी लखनऊ (यू.पी.)
- राकेश शर्मा जिला प्रभारी चन्दौली (यू.पी.)
- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखण्ड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/- (डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak

A/c. No. : 13751652000024

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

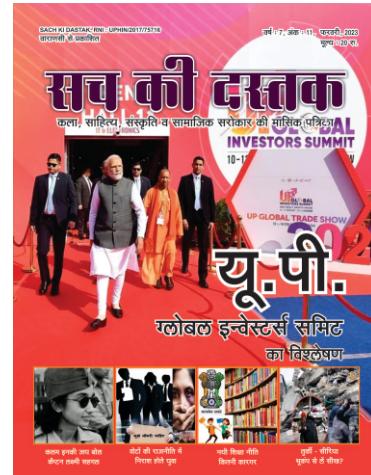
सच की दरताक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स. लेख

1. संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक
2. धरोहर - काका हाथरसी
3. ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का विश्लेषण - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक
4. कलम इनकी जय बोल - कृष्णांत श्रीवास्तव
5. वोटों की राजनीति में निराश होता युवा - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज एडीटर
6. परशुराम और चिरकारी - मुकुंद नीलकण्ठ जोशी
7. भारत माता के अमर सपूत्र - लल्लन सिंह 'ललित'
8. संवेदना - छगन लाल गर्ग विज्ञ'
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक परिदृश्य - डॉ. निशा अग्रवाल
10. नयी शिक्षा नीति कितनी कारगर - डॉ. जयराम झा
11. लुंगी - डॉ. विद्या सिंह
12. गीत - शिव मोहन सिंह, उपसंपादक सच की दस्तक
13. ग़ज़ल - बलविंद्र 'बालम'
14. बसंत गीत - प्रो. राजेश तिवारी विरल
15. इश्क का नूर - मंजु श्रीवास्तव 'मन'
16. इश्क करना गुनाह नहीं अश्लीलता गुनाह - भावना ठाकर 'भावु'
17. आजाद ख्याली पर मज़हब पर भारी - सोनम लववंशी
18. वैलेंटाइन और अकेलापन - सुशील उपाध्याय
19. घर पर बनायें पेठा - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क
20. तुर्की-सीरिया भूकम्प से लें सीख - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क
21. मैं बागी नहीं - मनोज उपाध्याय, खेल संपादक
22. फिल्म शहजादा का जलवा- सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क
23. कॉमेंट करने का नतीजा - राजेन्द्र कुमार सिंह
24. राज कपूर नरगिस लव स्टोरी - बृजेश श्रीवास्तव मुन्ना



पेज न.

03
05
06
08
11
16
19
23
25
27
29
31
32
33
34
37
39
42
45 -
46
48
50
52
54

संपादकीय



प्रिय पाठक बंधुओं !

आप सभी को शिवरात्रि की देर सारी शुभकामनाएँ। हम सब के लिये यह प्रसन्नता की बात है कि 'सच की दस्तक' आने वाले मार्च में अपने प्रकाशन के 6 वर्ष पूरा करने जा रही है। इसकी सफलता के पीछे निश्चित रूप से प्रिय पाठकों, सम्मान्य रचनाकारों, शुभचिंतकों व हमारी पूरी टीम का भरपूर सहयोग रहा है। आप सभी को हार्दिक बधाई !

आइए अब बात की जाय देश के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश की, जिसके मुख्यमंत्री हैं - योगी आदित्यनाथ जी। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के माध्यम से निवेशकों की पहली पसंद बनाने में प्रदेश के मुख्यमंत्री का सबसे बड़ा हाथ रहा है। प्रदेश की योगी सरकार का लक्ष्य उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनाने की है। पिछले 6 वर्षों में यूपी ने कई सुधार किए हैं। कुछ ही सालों के भीतर यूपी ने अपनी एक नई पहचान स्थापित कर ली है। उत्तर प्रदेश दुनिया का सबसे बड़ा श्रम बाजार बना है। योग्य व स्किल्ड युवा यहाँ की पहचान हैं। उत्तर प्रदेश सरकार की 25 सेक्टोरियल नीति के तहत उद्यमी यहाँ निवेश के लिए आकर्षित हो रहे हैं। निवेश के लिए सिंगल विंडो सिस्टम लागू की गई है, जो सफलता का कारण है। निवेशकों को समय से इंटैट मिल सके, ये लागू करने के कारण आज निवेशक उत्तर प्रदेश की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इस अंक में आप सभी को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट को समझने का अवसर मिलेगा।

'कलम इनकी जय बोल में' इस बार कैप्टन लक्ष्मी सहगल की चर्चा करेंगे। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर अपना योगदान दिया है। इनमें से कुछ महिलाओं ने जहाँ गांधी जी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा का मार्ग अपनाया, वहीं कुछ महिलाओं ने चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों के साथ का मार्ग भी अपनाया। इन क्रांतिकारियों में से एक कैप्टन लक्ष्मी सहगल थीं, जिन्होंने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया बल्कि स्वतंत्रता उपरांत भी कई सामाजिक मुद्दों पर प्रखर रूप से अपनी सहभागिता निभाई।

इसी अंक में बेरोजगारी की स्थिति पर भी चर्चा की गई है। चुनाव लोकतंत्र की नीव होती है लेकिन लोकतंत्र के रखवाले होते हैं मतदाता। मतदाता युवा हो तो उसकी बात ही निराली है। लोग कहते हैं - जिस ओर जगानी चलती है उस ओर जमाना चलता है। लेकिन इस लोकतंत्र को मजबूत करने वाले युवा बेरोजगारी की मार भी झेल रहा है। नेता भी उन्हें अपने गोटों के लिए गुमराह करते रहते हैं। युवा बेरोजगारों की दर्द पर दृष्टिकोण आपको पढ़ने को मिलेगा।

बढ़ती हुई शिक्षित बेरोजगारी और शिक्षा के बाजारीकरण पर नियंत्रण हेतु 34 वर्ष के बाद 29 जुलाई 2020 को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई है, जो इसरो के अध्यक्ष के, कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्रीत्व में हुई है। जिसका मुख्य उद्देश्य

कुशलता और दक्षता हासिल कराना है। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा नई सोच के साथ नए पाठ्यक्रम से उपलब्ध कराना है। पढ़ाई का मानसिक और शारीरिक बोझ कम करके बच्चे को मनोरंजन के साथ रुचिगत क्षेत्र की ओर अग्रसर करना है। खेल शिक्षण पद्धति द्वारा बच्चों में शिक्षा को रुचिकर बनाना है। इस अंक में नई शिक्षा नीति पर भी व्यापक चर्चा की गई है।

इसी अंक में तुर्की में आए भूकंप पर जानकारी दी गई है। तुर्की में 7.8 तीव्रता का भूकंप इतना तेज था कि इसने पृथ्वी को दो टुकड़ों में तोड़ दिया। इसमें भूकंप के बाद धरती में आई एक विशालकाय दरार को देखा जा

सकता है। भूकंप के बाद बनी यह विशालकाय दरार करीब 100 फीट गहरी और 650 फीट चौड़ी है। दरार कई किमी लंबी है और इसने तुर्की के हाते हवाई अड्डे के इकलौते रनवे को भी बर्बाद कर दिया था। इस खौफनाक मंजर को जिसने झेला उस पर क्या गुजरी होगी वो वही जानता होगा।

प्रिय बंधुओं, आप का साथ इसी तरह बना रहे, इसी आशा के साथ आप सभी को एक बार पुनः महापर्व शिवरात्रि की ढेरों बधाई व शुभकामनाएँ।

ब्रजीश कुमार

काका हाथरसी



दहेज की बारात

जा दिन एक बारात को मिल्यौ निमंत्रण-पत्र
फूले-फूले हम फिरें, यत्र-तत्र-सर्वत्र
यत्र-तत्र-सर्वत्र, फरकती बोटी-बोटी
बा दिन अच्छी नाहिं लगी अपने घर रोटी
कहँ 'काका' कविराय, लार म्हाई सॉं टपके
कर लडुअन की याद, जीभ स्याँपन सी लपके

मारग में जब है गई अपनी मोटर फ़ेल
दौरे स्टेशन, लई तीन बजे की रेल
तीन बजे की रेल, मच रही धक्कम-धक्का
दो मोटे गिर परे, पिच गये पतरे कक्का
कहँ 'काका' कविराय, पटक दूल्हा ने खाई
पंडितजू रह गये, चढ़ि गयौ ननुआ नाई

नीचे को करि थूथरौ, ऊपर को करि पीङ्ग-
मुर्गा बनि बैठे हमहुँ, मिली न कोऊ सीट
मिली न कोऊ सीट, भीर में बनिगौ भुरता
फारि लै गयौ कोउ हमारो आधौ कुर्ता
कहँ 'काका' कविराय, परिस्थिति विकट
हमारी
पंडितजी रहि गये, उन्हीं पे 'टिक्स' हमारी

फक्क-फक्क गाड़ी चलै, धक्क-धक्क जिय
होय

एक पन्हैया रह गई, एक गई कहुँ खोय
एक गई कहुँ खोय, तबहिं घुस आयौ ठी-ठी
मांगन लाग्यौ टिक्स, रेल ने मारी सीठी
कहँ 'काका', समझायौ पर नहिं मान्यौ भैया
छीन लै गयौ, तेरह आना तीन रूपैया

जनमासे में मच रहौ, ठंडाई को सोर
मिर्च और सक्कर दई, सपरेटा में घोर
सपरेटा में घोर, बराती करते हुल्लड़
स्वादि-स्वादि में खेंचि गये हम बारह कुल्हड़
कहँ 'काका' कविराय, पेट हो गयौ नगाड़ौ

निकरौसी के समय हमें चढ़ि आयौ जाड़ौ

बेटावारे ने कही, यही हमारी टेक
दरबज्जे पे ले लऊँ नगद पाँच सौ एक
नगद पाँच सौ एक, परेंगी तब ही भाँवर
दूल्हा करिदौ बंद, दई भीतर सौं सॉकर
कहँ 'काका' कवि, समधी डोलें रुसे-रुसे
अर्धरात्रि है गई, पेट में कूदें मूसे

बेटीवारे ने बहुत जोरे उनके हाथ
पर बेटा के बाप ने सुनी न कोऊ बात
सुनी न कोऊ बात, बराती डोलें भूखे
पूरी-लडुआ छोइ, चना हू मिले न सूखे
कहँ 'काका' कविराय, जान आफत में आई
जम की भैन बरात, कहावत ठीक बनाई

समधी-समधी लड़ि परै, तै न भई कछु बात
चलै घरात-बरात में थप्पड़- घूँसा-लात
थप्पड़- घूँसा-लात, तमासौ देखें नारी
देख जंग को दृश्य, कँपकँपी बँधी हमारी
कहँ 'काका' कवि, बाँध बिस्तरा भाजे घर को
पीछे सब चल दिये, संग में लैकं वर को

मार भारई पै परी, बनिगौ वाको भात
बिना बहू के गाम कों, आई लौट बरात
आई लौट बरात, परि गयौ फंदा भारी
दरबज्जे पै खड़ीं, बरातिन की घरवारीं
कहँ काकी ललकार, लौटकें गापिस जाओं
बिना बहू के घर में कोऊ घुसन न पाओं

हाथ जोरि माँगी क्षमा, नीची करकें मोंछ
काकी ने पुचारिकें, आँसू दीन्हें पौंछ
आँसू दीन्हें पौंछ, कसम बाबा की खाई
जब तक जीऊँ, बरात न जाऊँ रामदुहाई
कहँ 'काका' कविराय, अरे वो बेटावारे
अब तो दै दै, ठी-ठी वारे दाम हमारे



ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का विश्लेषण

टाटा एंड संस ग्रें चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने कहा कि कानून व्यवस्था में सुधार के बाद विदेशी पर्यटकों के लिए यूपी पहली पसंद है क्योंकि यहां कई धार्मिक, ऐतिहासिक और वाइल्ड लाइफ सेंचुरी है। पीएम मोदी के नेतृत्व में देश केवल आर्थिक ग्रोथ ही नहीं, बल्कि 360 डिग्री डेवलपमेंट करेगा। रिलायंस इंडस्ट्रीज के प्रमुख मुकेश अंबानी ने कहा कि 2014 में नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने। उसके बाद से देश का विकास बहुत तेजी से हुआ है।



ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक



उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा सूबा कहा जाता है लेकिन कुछ वर्ष पहले तक इन्हें बीमार राज्य के रूप में लिया जाता था। अक्सर यह देखा जाता रहा की यहां के लोग दूसरे राज्यों पर रोजगार के लिए निर्भर रहते रहे। लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नाथ ने जब से कमान संभाली है निश्चित तौर पर इस राज्य को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश हुई उसका नतीजा रहा की आज देश विदेश के पूँजीपत इस राज्य में निवेश करने की की पहल करते दिख रहे हैं। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की है ऐसे में सभी राज्य आत्मनिर्भर बनते हैं तो निश्चित ही यह विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में एक अच्छा कदम होगा। उसी की सोच के तहत ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया गया।

ऐसे देखा जाय तो निवेश के माहौल

को और बेहतर करने के लिए नियमों में समयानुकूल बदलाव करते हुए यूपी सरकार ने राज्य की नई औद्योगिक नीति तैयार की है। फ्रूट प्रोसेसिंग, हैण्डलूम, पॉवरलूम, आई0टी0, बायोफ्यूल, फिल्म एण्ड मीडिया, टूरिज्म, सोलर एनर्जी, इलेक्ट्रिक वाहन, एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट, गेमिंग और कॉमिक इण्डस्ट्री, खिलौना निर्माण, सिविल एविएशन, हाउसिंग एण्ड रियल एस्टेट सहित विभिन्न सेक्टर्स में औद्योगिक जगत की जरूरतों के मुताबिक नीतियां तैयार कर ली गई हैं।

यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट ने करीब 25 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव को आकर्षित किया है। करीब 18 हजार एमओयू प्रस्ताव आए हैं। सरकार का मक्सद इसकी मदद से कम से कम 10 लाख करोड़ का निवेश प्राप्त करना है। अगर यह निवेश आ जाता है तो आने वाले समय में डायरेक्ट और इन-डायरेक्ट रूप

से करीब 2 करोड़ रोजगार पैदा होंगे। जिससे रोजगार सृजन के लिए कारगर कदम माना जा सकता है।

यूपी की पहचान बेहतर कानून व्यवस्था, शांति और सुशासन की है। वर्तमान समय में यह देश का वो राज्य है जहां 5 इंटरनेशनल एयरपोर्ट हैं। अब इस प्रदेश की पहचान अब वेल्थ क्रिएटर्स के रूप में हो रही है। यह पूरे देश के लिए आशा और उम्मीद बन चुका है। अगर भारत दुनिया के लिए निवेश का प्रमुख स्थल बनता है तो निश्चित उत्तर प्रदेश उसका ग्रोथ ड्राइवर होगा। इसकी वजह उत्तर प्रदेश का कुशल नेतृत्व है जो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पास है।

प्रदेश की योगी सरकार का लक्ष्य उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनाने की है। देखा जाय तो पिछले 6 वर्षों में यूपी ने कई सुधार किए हैं। कुछ ही सालों के भीतर यूपी ने अपनी एक नई पहचान स्थापित कर ली है। इसके लिए प्रत्येक जिले को मुख्यमंत्री ने आत्मनिर्भर बनाने के लिए ठान ली है।

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में 434 निवेशकों ने लगभग 1.37 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव दिए हैं। खास



रिलायंस समूह के मुकेश अंबानी हैं।

ने 75,000 हजार करोड़ के निवेश का ऐलान किया है, जबकि हिंदुजा ग्रुप ने 25,000 करोड़ के निवेश का ऐलान किया है। इसी के साथ आदित्य बिरला ग्रुप ने भी 25,000 करोड़ के निवेश का ऐलान किया है।

उत्तर प्रदेश को 33 लाख 50 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। ये पहली बार हुआ है। पहले निवेश का मतलब एनसीआर होता था, लेकिन आज निवेश प्रदेश के सभी 75 जनपदों में हुए हैं। पूर्वांचल कभी विकास से अनभिज्ञ था, लेकिन पूर्वांचल में 9 लाख करोड़ का निवेश प्रस्ताव आया है। हम इस निवेश के जरिए उत्तर प्रदेश के 93 लाख युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होगा।

सबसे बड़ी बात यह है की इसमें नीदरलैंड, डेनमार्क, सिंगापुर, जापान, साउथ कोरिया, इटली, यू ए ई के बिजनेसमैन योगदान दे रहे

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के माध्यम से नए भारत के विकसित उत्तर प्रदेश के रूप में स्थापित करेगा। इस इन्वेस्टर्स समिट के अवसर पर

टाटा एंड संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने कहा कि कानून व्यवस्था में सुधार के बाद विदेशी पर्यटकों के लिए यूपी पहली पसंद है क्योंकि यहां कई धार्मिक, ऐतिहासिक और वाइल्ड लाइफ सेंचुरी है। पीएम मोदी के नेतृत्व में देश केवल आर्थिक ग्रोथ ही नहीं, बल्कि 360 डिग्री डेवलपमेंट करेगा। रिलायंस इंडस्ट्रीज के प्रमुख मुकेश अंबानी ने कहा कि 2014 में नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने। उसके बाद से देश का विकास बहुत तेजी से हुआ है। आदित्य बिरला ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और सीएम योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश का कायापलट हो गया है।

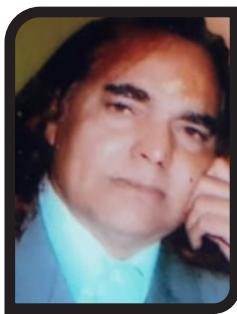


एशिया की पहली महिला कर्नल कैप्टन लक्ष्मी सहगल

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव ने एक आत्मीय अपील की है कि हम सब को संकल्पित होना होगा ताकि स्वर्णिम महोत्सव तक हमारा देश विश्व गुरु के साथ सर्वभुखी विकसित राष्ट्र भी बन सके। इस संकल्प में कलमकारों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है ताकि वे आजादी के वीर सपूत्रों की गाथा को जन-जन तक पहुंचा कर स्मृति पटल पर जागरूक करते रहें। उल्लेखनीय है कि पिछले कई महीनों से चंदौली जनपद (वाराणसी) के दीनदयाल उपाध्याय नगर (मुगलसराय) के निवासी वरिष्ठ नागरिक-स्तंभकार वृष्णकांत श्रीवास्तव जी की कलम इस विषय पर निरंतर चल रही है। प्रस्तुत है इस अंक में एशिया की पहली महिला कमांडर लक्ष्मी सहगल की वीर गाथा.....



संपादक



कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

ब्रिटिश हुक्मत के खिलाफ भारत निभाई।

की आजादी की लड़ाई में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर अपना अमूल्य योगदान दिया है। इसमें कुछ महिलाओं ने अहिंसा का रास्ता अपनाया तो कुछ महिलाओं ने क्रांतिकारी रास्ता। महिला क्रांतिकारियों में एक थी कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन सहगल।

जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और आजादी के बाद कई सामाजिक मुद्दों पर अपनी सहभागिता

जन्म-ड 24 अक्टूबर 1914 को मद्रास (चेन्नई) के एक प्रांत में परंपरावादी तमिल ब्राह्मण परिवर में हुआ।

डमाता पिता-ड पिता का नाम डॉ. सुखराम स्वामीनाथन और माता का नाम एवी अमुक्कुट्टी (अम्मू) स्वामीनाथन। मां एक सामाजिक कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी थी।

डशिक्षा-ड लक्ष्मी स्वामीनाथन ने कीवीन मैरी कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करने के



बाद 1938 में मद्रास मेडिकल कॉलेज से मेडिकल की पढ़ाई कर शैंए की डिग्री ली। गायनाकोलॉजिस्ट और ऑफिसियल्स में डिलोमा किया। महिला रोग विशेषज्ञ बनी और चेन्नई (मद्रास) के एक सरकारी अस्पताल में सेवा देने लगी।

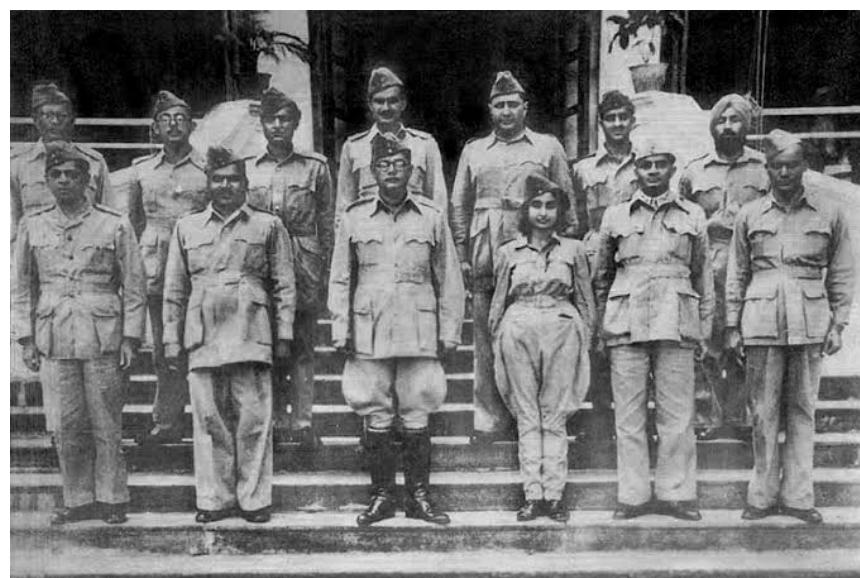
लक्ष्मी स्वामीनाथन बचपन से ही राष्ट्रवादी आंदोलन से प्रभावित थी। जब महात्मा गांधी ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन चलाया था तो लक्ष्मी सहगल ने उसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया था। लक्ष्मी स्वामीनाथन का विवाह पी. के. एन. राव के साथ हुआ। पर कुछ ही समय बाद यह विवाह संबंध टूट जाने के बाद

वर्ष 1940 में लक्ष्मी स्वामीनाथन ने एक डॉक्टर की हैसियत से सिंगापुर जाने का फैसला किया। 1942 में जब जापानी सेना द्वारा सिंगापुरी इंपीरियल को गिरा दिया गया तो उस समय हुए युद्ध में घायल कैदियों की एक डॉक्टर की हैसियत से उन्होंने सहायता की। सिंगापुर में ही प्रवासी भारतीयों के लिए एक मेडिकल कैंप लगाया और वहां के गरीब भारतीयों का इलाज करने लगी।

2 जुलाई 1943 में जब सुभाष चंद्र बोस सिंगापुर आए तब जापानियों ने एक विदेशी सेना बनाने की योजना बनाई। सुभाष चंद्र बोस ने पुरुषों के साथ-साथ इच्छुक महिलाओं को भी इस सेना में शामिल होने के लिए आह्वान किया। सुभाष चंद्र बोस की इस भर्ती योजना की खबर सुनकर लक्ष्मी स्वामीनाथन ने उनसे मुलाकात की और आजादी की लड़ाई में भाग लेने की अपनी इच्छा व्यक्त की। लगभग एक घंटे तक चली इस मुलाकात में लक्ष्मी स्वामीनाथन की दृढ़ इच्छाशक्ति को देखकर सुभाष चंद्र बोस ने 12 जुलाई

1943 आजाद हिंद फौज में एक महिला रेजिमेंट की स्थापना की घोषणा की जिसका नाम 'रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट / झांसी की रानी रेजिमेंट' रखा गया। इसका नेतृत्व लक्ष्मी स्वामीनाथन के हाथों में दिया गया। 8 जुलाई 1943 को लक्ष्मी स्वामीनाथन ने आजाद हिंद फौज में महिलाओं की भर्ती शुरू की और अपने कठिन परिश्रम से 1500 से अधिक महिलाओं को झांसी रेजिमेंट में शामिल किया। वे इस रेजीमेंट की प्रमुख बनी और उन्हें 'कैप्टन' के नाम से उन्हें संबोधित किया जाने लगा। उनकी मजबूत इच्छाशक्ति, वीरता और साहस को देखकर उन्हें 'कर्नल' का पद दिया गया। उस समय एशिया में वे पहली महिला थीं जिन्हें कर्नल का पद दिया गया था। हालांकि वे 'कैप्टन लक्ष्मी' के नाम से ही लोकप्रिय रहीं।

जब सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में अस्थाई आजाद हिंद सरकार की स्थापना की तो वे कैबिनेट में वह प्रथम महिला सदस्य के रूप में शामिल हुईं। उन्हें



अंतरिम सरकार में महिला मामलों और झांसी रेजिमेंट की रानी का पोर्टफोलियो सौंपा गया।

आजाद हिंद फौज ने जापानी सेना के साथ मिलकर वर्मा को आजाद कराने के लिए 1944 में यू-गो ऑपरेशन शुरू

किया पर इंफाल के विनाशकारी युद्ध के बाद उन्हें पूर्वोत्तर भारत से पीछे हटने के लिए विवश होना पड़ा। आजाद हिंद फौज की हार के कारण ब्रिटिश सेना ने आजाद हिंद फौज के सैनिकों की धरपकड़ शुरू कर दी। मई 1945 में ब्रिटिश सेना ने कैप्टन लक्ष्मी को बर्मा में पकड़ लिया। मई 1945 से मार्च 1946 तक कैप्टन लक्ष्मी को बर्मा में ही रखा गया। वर्मा के जेल में कैद रहने के बाद उन्हें मुकदमों के ट्राइल के लिए दिल्ली (भारत) भेज दिया गया। दिल्ली में हुए इस ट्रायल को 'लाल किला ट्रायल' के नाम से भी जाना जाता है। इस ट्रायल ने स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवाद और लोकप्रियता को नई लहर दी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के बढ़ रहे दबाव के कारण ब्रिटिश सरकार ने कर्नल लक्ष्मी को रिहा कर दिया।

अपनी पहली शादी टूटने के सात



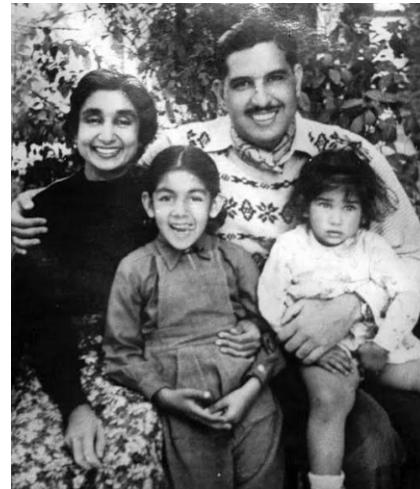
साल के बाद वर्ष 1947 में लक्ष्मी स्वामीनाथन ने लाहौर में कर्नल प्रेमकुमार सहगल से शादी कर ली जिससे उनके नाम में सहगल जुड़ गया। वे बन गई लक्ष्मी सहगल और कानपुर आकर बस गई।

भारत की आजादी के बाद भी लक्ष्मी सहगल का सफर जारी रहा। वे कानपुर में मेडिकल प्रैक्टिस करने लगी। उन्होंने देश के विभाजन के कारण बड़ी संख्या में भारत आने वाले शरणार्थियों की जरूरत के अनुसार सहायता की, उनका इलाज किया। उन्होंने भारत विभाजन को कभी स्वीकार नहीं किया और अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती खाई का हमेशा विरोध करती रही।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने 1981 में ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक वूमेंस एसोसिएशन की स्थापना में भी शामिल रहे। 1984 में हुए भोपाल गैस कांड में उन्होंने राहत कार्य में बचत भूमिका निभाई। 1984 में हुए सिख दंगों के समय कानपुर में शांति स्थापना करने में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया। स्वतंत्रता आंदोलन और समाज सेवा में उनके महत्वपूर्ण योगदान और संघर्ष को देखते हुए भारत सरकार ने 1988 में उन्हें पद्मविभूषण सम्मान से सम्मानित किया।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल के समर्पण का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2006 तक, 92 साल की उम्र में भी वे कानपुर के अस्पताल में नियमित रूप से मरीजों का इलाज करती रही थी।

आजाद हिंद फौज की महिला इकाई की पहली कैप्टन रही महान वीरांगना लक्ष्मी सहगल ने गंभीर दिल का



दौरा पड़ने के कारण 23 जुलाई 2012 को अपनी अंतिम सांस ली और आजाद भारत की धरती को अलविदा कह दिया।

मां भारती की इस बेटी को कोटि-कोटि नमन-

आजादी प्राप्ति की कीमत भी खून ही थी,
और आजादी को बनाए रखने की कीमत भी सिर्फ और सिर्फ खून ही है।

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा.....



वोटों की राजनीति में निराश होते 'युवा'

अब उन बे आौलाद बेरोजगार तलावशुदा लड़कियाँ जो ओवरएज की कगार पर हैं या ओवरएज हो चुकीं। जिनका दूसरा विवाह भी नहीं हो रहा। हे! सरकार आप ही बताइए अब वह सब कहाँ जायें? क्या करें? क्या आपके पास इन मजबूर बहन-बेटियों के लिए कोई योजना है? एक दिन था जब यह युवा हुआ करतीं थीं अब बस गुमनामी में जिंदगी बस्तर कर रहीं। ऐसी ही कुछ हालत लड़कों की भी है। यहां, युवा शब्द में लिख रही हूँ जबकि इसी समय इसी पल, लाखों युवा, बुजुर्ग की श्रेणी में पहुंच चुके होंगे।



आकांक्षा सक्सेना
न्यूज एडीटर सच की दस्तक



जब जीविका विवादित और जीवन बाधित है तो कैसे होगा विकास और कैसे होगा विकसित भारत का सपना साकार?

मेरे कहने का स्पष्ट आशय यह है कि दीवानी न्यायालयों में किस लेवल पर भूमि विवाद फाईलों में कैद है। कैद भी ऐसी कि पीढ़ियों को न्याय का इंतजार करा दे। तब तक वह भूमि का छोटा सा दुकड़ा बंजर वीरान पड़ा रहे। अगर यह भूमि विवाद निपटान गति को भी झ़रा बढ़ा दिया जाये तो गरीब की जीविका जो उसका अपना खेत - प्लॉट-दुकान है, उस पर वह अपना और अपने युवा बच्चों के लिए रोजगार का साधन बना सके। देश में कितने ही मकान 'भुतगा' अंधविश्वास के चलते बंद बाधित पड़े हैं, कितनी ही गवर्नमेंट प्रोपर्टी जिनसे रोजगार मिल सकता था वह सब अनेकों विवादों से लिपटी बाधित पड़ी है। अब रही बात जीवन बाधित की तो देखिये! कितने ही बेकसूर युवा कसूरवार युवकों की काली

भीड़ का काला हिस्सा बनकर जेलों में पड़े हैं। जब देश की जवानी जोकि देश की रीढ़ होती है वो जेलों में बर्बाद होगी तो आप कैसे कह सकते हैं कि भारत युवाओं का देश है। आप कानून कठोर कीजिये जिससे युवा अपराध से सदा दूरी बरते क्योंकि बिना भय के सुधार सम्भव नहीं है। दूसरी तरफ आप देखिए! कि घरेलू हिंसा, यौन शोषण, दहेज़, मेंटीनेंस तलाक तक पहुंचते - पहुंचते वो लड़की आती तो गुड़िया जैसी पर कोर्ट के चक्कर काटते-काटते, तारीख पर तारीख की कभी कोर्ट में चुनाव, कभी जज छुट्टी पर, कभी हड़ताल आदि के चलते भी पीड़िता इस तरह की भी यातना भोगती रहती है। जिन वर्षों में वह कैरियर पर फोकस कर सकती थीं उन वर्षों को न्याय में मिली देरी से मानसिक तनावग्रस्त होकर पीड़िता मानसिक रोगी बन जाती है। बाद में फिर नये जीवन की शुरूआत तब तक वह 40-45 साल की हो चुकती तब एक और दर्द कि इस उम्र में बेरोजगार माँ बनकर कैसे

बच्चे को अच्छी शिक्षा दे सकेगीं। न्यायव्यवस्था क्यों नहीं टाईम मैनेजमेंट पर ध्यान देती? कि यदि किसी को तलाक चाहिये तो ज्यादा से ज्यादा 6 महीने में उसको प्री कर दो। यह नहीं कि दस साल तक चल ही रहा है। कभी-कभी जेलों में जाकर भी सर्वे करना चाहिए कि जेलों में जो युवा-युवतियां बंद हैं उनके नाम किसी आपसी रंजिश में लिखवाकर कहीं उनका जीवन तो बर्बाद नहीं किया जा रहा? अनेकों मामलों में देखा गया है कि वर्षों से जेल में पड़ा फलानां मुजरिम तो निर्दोष था। अब उसकी बर्बाद जवानी का इल्ज़ाम किसे दिया जाये? जेल प्रशासन को सजगता से विचारना चाहिए कि छोटी-छोटी चोरी में या झगड़े में पकड़ा गया युवा जेल में रहकर किस तरह का सकारात्मक कार्य करके अपनी सजा कम कर सके और देश के विकास की मुख्य धारा से जुड़ सके। क्योंकि करोड़ों के घोटाले करके तथाकथित नेता जेल में भी ऐश करते देखे गये हैं और भयंकर अपराधी आतंकी फांसी से इतर उप्रकौद में तब्दील किये गये हैं। यह तो बात हुई न्यायव्यवस्था की। इसके इतर बात करते हैं राजनीति व्यवस्था की तो इसकी तो माया ही अपरम्पार है। हो भी क्यों न टीवी पर सबसे ज्यादा नेता ही चमकते दिखते हैं, अखबारों की सारी ऊर्जा नेता ही सोखते दिखते हैं। कम लागत और मुनाफा ज्यादा जैसी स्कीम देख आज का अधिकतर युवा नेता बनना चाहते हैं कि उन्हें लगता है कि इसमें न कोई पढ़ाई, न लिखाई सिर्फ़ मलाई ही मलाई। ग्राम प्रधान, नगरपालिका, वार्ड मेम्बर में भी युवा बढ़ - चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। ऐसा हो भी क्यों नहीं कालेजों में छात्र संघ चुनाव,



न्यायालयों में चुनाव, धर्म जातिगत के बाद सहायक टीचर को प्राईमरी संगठनों में चुनाव, गांव, जिला, शहर, जूनियर दोनों स्कूलों के हैंड की जिम्मेदारी थमा दी गयी है। पर वेतन सिर्फ़ एक स्कूल का सहायक शिक्षक वाला बस। और उस सहायक को ऑनलाइन मीटिंग्स, ऑफलाइन मीटिंग्स, चुनाव में ड्यूटी, इंटर कॉलेज परीक्षा में ड्यूटी, संडे की छुट्टी में जयंती है तो भी उसकी ड्यूटी, सरकारी योजनाओं को गांव में पहुंचाने वास्ते जागरूकता रैली में ड्यूटी, मिड मील में बाजार सब्जी आटे दाल की ड्यूटी, ऊपर से जो डीएलएड के प्रशिक्षु जिन्होंने नियमित स्कूल न आकर भी बला टाल ली अब उन्हीं प्रशिक्षकों को सरकारी स्कूलों में बच्चों की निगरानी सर्वेक्षण की लिए भेजा गया अब हैंडमास्टर बनाम सहायक का ध्यान उस प्रशिक्षु पर जिन्हें उन्होंने बेदाग रखने की ड्यूटी निभाई, उसके बाद गांव वालों की शिकायत कि बच्चों का पैसा नहीं आया? बच्चों को डांट कैसे दिया? कर दी योगीजी के पोर्टल पर शिकायत, अब शिकायत पर निर्दोष होते हुए भी माफीअर्जी की ड्यूटी। इसके अलावा सभी विषयों के शिक्षकों की कमी होने पर एक हैंडमास्टर है भी तो उसके रिटायर्मेंट सभी विषयों का पाठ्यक्रम पूरा कराने की



ड्यूटी, लाईब्रेरियन बनकर लाईब्रेरी किसी ने एक न सुनी। इसके अलावा सजाने की ड्यूटी, माली बनकर क्यारी सरकारी स्कूलों में बढ़ती चोरी की घटनाएं सजाने की ड्यूटी, स्वतः स्वच्छता कर्म की ड्यूटी। कहीं स्वास्थ्य चेतना और पुलिस व न्यायिक प्रक्रिया में उलझकर वादी-प्रतिवादी की ड्यूटी। सरकारी स्कूल का मास्टर यदि स्कूलों में ही रहा करे - सो जाया करे, स्वयं चौकीदार बन जाये तब शायद यह चोरियां रुक जायें। शायद यहि और बचा है। सरकार यदि यह चाहती है तो वह देश के सभी सरकारी मास्टरों को उनके स्कूलों में ही मुफ्त सरकारी टीचर कॉलेजी यानि सरकारी क्वाटर बना एलॉट कर दें। हे! सरकार जी! आप लोगों ने सरकारी स्कूलों के मास्टर, सहायक शिक्षक उर्फ हैंडमास्टरों को निचोड़ के रख दिया है। जबकि प्राईमरी जूनियर स्कूलों के विभिन्न कार्यों के लिए अनेकों युवाओं की बम्पर भर्तियां रोजगार दिया जा सकता है जिससे सरकारी स्कूलों के मास्टरों का तनाव कम हो और वह बच्चों को पूरी तसल्ली से पढ़ा सकें। तब आपको निश्चित ही 'शिक्षा में गुणवत्ता' देखने को मिलेगी। क्योंकि दाल प्रैसर कुकर में पक सकती है परन्तु खोया यानि मावा को

धीरे-धीरे कढ़ाई में ही बनाया जाता है। अब बात करते हैं वन विभाग की, कि इस फ़िल्ड में वायोलॉजी/कृषि वाले स्टूडेंट्स की बम्पर भर्ती की जा सकती है जिससे वह क्लाईमेट चैंज जैसे वैश्विक मुद्दे पर अपनी जबर्दस्त उपस्थिति बतौर कर्म दर्ज करा सकें और जंगल बचाओ की जगह जंगल सजाओ मुहिम के वाहक बन सकते हैं। आपने गांव-गांव तालाब बनाने और समुचित व्यवस्था करने की जिम्मेदारी विधायकों को सौंपी है पर आप चाहें तो उन तालाबों में कमल और कमल से मखाने का कारोबार स्पीड पकड़ सकता है, सिंघाड़ की बेल जिसमें मिगी का कारोबार, मछली पालन तथा शाम के समय रंगीन फ़ब्बरे लगाकर राष्ट्रीय, सांस्कृतिक कार्यक्रमों से स्थानीय कलाकारों को रोजगार मुहैया कराया जा सकता है। आपने एक जिला एक प्रोडक्ट से बहुतों को रोजगार की चमक दी है परन्तु यह बात भी गौर करने लायक है कि जिले का हर बच्चा उम्दा कलाकार और कुशल व्यापारी तो नहीं बन सकता। कुछ बच्चों का सपना सरकारी नौकरी का है जोकि वैकेंसी ऊंट में जीरे के समान आप लोगों ने की हुई है। हर बच्चे को हम जबरन आत्मनिर्भर नहीं बना सकते। कुछ बच्चे सरकारी नौकरी के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और सभी परीक्षाओं में सफल होने के बावजूद उन्हें पता चलता है कि यह भर्ती का रिजल्ट कोर्ट में फंस गया? यह परीक्षा के सवालों को लेकर मामला कोर्ट में? सरकार कह रही कोर्ट जाने। कभी परीक्षा का पेपर आउट। एक सच्चा स्टूडेंट्स रोये भी तो कहाँ? उसके ही अपने आरक्षी दोस्त जो उससे आधे नम्बर लाये आज वह सरकारी नौकरी

करके मुँह चिढ़ा रहे। और उसे बिजनेस 'आत्मनिर्भर' बनने का ज्ञान दे रहे। 'आत्मनिर्भर' बनने की बात गलत नहीं परन्तु जिन माता-पिता का पूँजी डिप्री डिलोमा में लग चुकी, बहन बेटी के दहेज़ में खर्च हो चुकी। आखिर! उनके पास व्यापार के लिए रूपया कहां से आया? बेरोजगार मार्केट में दुकान भी ले तो दस लाख की पगड़ी देनी पड़ती है। अब वह इतने पैसे कहां से लाये? सरकारी लोन ले तो चुकाने की रिस्क कौन से माता-पिता अपनी बुढ़ापे की लाठी उनकी अंतिम पूँजी, तोड़ना चाहेंगे? हर व्यक्ति कि अपनी मजबूरियां हैं जोकि यह तथाकथित वोटमुग्ध आत्ममुग्ध नेता कभी नहीं समझ सकते। यही युवा डिप्रेशन के शिकार होकर गुमनामी में आत्महत्या कर रहे हैं जोकि उन्हें नहीं करनी चाहिए। कोटा - इलाहाबाद - बिहार हर जगह कितना स्टूडेंट्स सरकारी नौकरी की आस में टूट कर बिखर कर जी रहा है। यह कम्पटीशन फेस करने वाला ही जानता है। और सबसे ज्यादा बदहाली में जनरल कैटगरी के स्टूडेंट्स हैं। जनरल स्टूडेंट्स इसलिए भयंकर अवसाद में है कि उसे न एडमिशन में डिस्काउंट मिलता, न किसी तरह के कोटे का डिस्काउंट, न उम्र में कोई डिस्काउंट। राजनीति में न पक्ष न विपक्ष उनके लिए कुछ बोलता है। बाकि जिन जनरल परिवार में एक मेम्बर कमाने वाला है आप लोग उस कमाने वाले की भी पुरानी पैशन में ग्रहण लगाये पड़े हो। बताइये जनरल वाले भी आप सब के ही बोटर हैं, उनके साथ कुछ तो रियायत बरतिये। कम से कम जनरल स्टूडेंट्स की उम्र सीमा ही बढ़ा दीजिये। दूसरी तरफ पहाड़ी बेरोजगार युवाओं को सेजी-रोटी



संघर्ष में कुछ वीजा फ्रॉड के जरिये खाड़ी युवाओं को पूरी तरह गुमराह कर दिया देशों में भेजकर उनसे हाड़ तोड़ मजदूरी है। उन्हें जाति-धर्म के ऊपर उठ कर करायी जाती है। वहीं देश का मज़बूर मानवता धर्म, शिक्षा सभ्यता विकास धर्म नागरिक दुर्बई में जाकर मजदूरी करने को भी धुंधला दिखाई पड़ता है। अंततः, वह विवश है। तथा यहां का मेहनती हतास निराश होकर झूग्स, नशे के आदि प्रतिभाशाली स्टूडेंट्स अमेरिका, रूस आदि विदेशों में जाकर बस गया है। हास्यास्पद तब होता है जब वही युवा या उसका अंश - वंश विदेशों में नाम कमाता है तब यहां के नेता 'भारतीय मूल' का कहकर गर्व से छाती चौड़ी करते हैं। दुःखद है कि देश का सबसे ज्यादा पैसा नेताओं के ठाठ-बाट और उनकी चुनावी रैलियों आदि पर फूँका रहा है मगर युवाओं को नौकरी-रोजगार के लिए खजाना सूख जाता है। हर विभाग में पद खाली पड़े हैं पर नेताओं की जुगाड़ प्रणाली ने हर जगह अस्थायी मित्र भर रखे हैं। जिससे उन्हें कम सैलरी में काम भी पूरा की दोमुंही सोच युवाओं को गुमराम करती दिख रही है यानि हींग लगे न फिटकरी और रंग आये

चोखा। दूसरी तरफ तथाकथित नेताओं ने जाति-धर्म की राजनीति में के गढ़े मुर्द उखाड़ते रहिये। नज़ारा देखो!

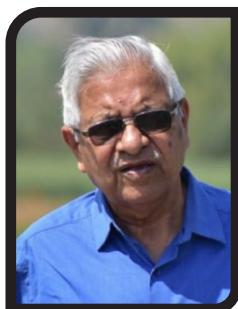
पक्ष विपक्ष को खोद रहा, विपक्ष पक्ष को खोद रहा... आप दोनों मिलकर यह खुदाई जारी रखो जब तक गड़ा, कुआं और कुआं, खाई न बन जाये और पूरी देश की मासूम जनता उस खाई में न गिर जाये। जनता की समस्याओं पर कोई डीप स्टडी नहीं.. कुछ पुरानी खुदाई रोजगार के मुद्दे पर भी करो मिलकर। आप नेहरू जी को रोते रहो और वह आरएसएस को रोते रहो। इससे आगे बढ़कर आज को देखो! आज युवाओं की हालत पर बात हो। आप उन बेटियों का जीवन देखो कि जिनकी वैकंसी के इंतजार में उम्र 45 हो चुकी। अब न उनकी शादी हो रही और हो भी गयी तो उम्र के ढ़लान मां बनने में प्रोलेम। देश में ऐसी भी लाखों लड़कियां हैं जिनकी बीएड, बीटीसी, टैट, पाँली टे गिर्नार, बाँटे वार, नर्सिंग, आर्किटेक्ट, डिग्री डिप्लोमा देख कर शादी तो हुई परन्तु नौकरी न मिलने पर उन्हें उनके पति ने जबरन तलाक दे दिया। यहां तक कि लालच के कारण उनसे मां बनने तक का अधिकार छीन लिया। अब उन बैलौलाद बेरोजगार तलाकशुदा लड़कियाँ जो ओवरऐज की कगार पर हैं या ओवरऐज हो चुकीं। जिनका दूसरा विवाह भी नहीं हो रहा। हे! सरकार आप ही बताइए अब वह सब कहाँ जायें? क्या करें? क्या आपके पास इन मजबूर बहन-बेटियों के लिए कोई योजना है? एक दिन था जब यह युवा हुआ करतीं थीं अब बस गुमनामी में जिंदगी बसर कर रहीं। ऐसी ही कुछ हालत लड़कों की भी है। यहां, युवा शब्द में लिख रही हूँ जबकि इसी समय इसी पल, लाखों युवा, बुजुर्ग की श्रेणी में पहुंच चुके होगें। जिनके न घर बस सके न जीवन गति पकड़ सके। अब

अगर ऐसे ओवरऐज बेरोजगार युवा मीडिया में कदम रखते हैं या अपना यूट्यूब चैनल बनाकर नेताओं को लताड़ते हैं तब बड़ी ही शर्मिंदगी की बात है कि तथाकथित नेता उनके यू-ट्यूब चैनल तक बंद कराकर उनके पेट पर लात मारते हैं। अब कुछ अनपढ़ नेता उस काबिल पत्रकार से पूछते हैं कि पत्रकारिता कहां से की? तो याद रखिए! कि सच लिखने और बोलने के लिए भारतीय संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार हर नागरिक के लिए समान रूप से दर्ज है। और सच को सच कहने के लिए किसी को पत्रकार बनने की जरूरत नहीं। प्रत्येक नागरिक सच लिखने-बोलने के लिए स्वतंत्र है। इसलिये हे! सत्ताप्रेमी आप रोजगार प्रेमी कब बनेंगे। सर! वे निर्दोष युवा आपसे जवाब चाहते हैं, जोकि राजनीति से दूर, न पक्ष में हैं और न विपक्ष में। वह सिफ़े इज़्ज़त की जिंदगी चाहते थे जिन्हें ज़िल्लत भुगतनी पड़ रही। अब आप कहेंगे कि बेरोजगार के केन्द्र में जनसंख्या बड़ी समस्या है। और अनेकों विवादों से संसद उलझी पड़ी है। तो सर! जनसंख्या नियंत्रण कानून, समान नागरिक संहिता कानून का शुभारंभ कीजिये परन्तु युवाओं को कृपा करके भ्रमित मत कीजिये। वैसे भी ओवरऐज बेरोजगार हो चुके युवा जिनका भविष्य किसी बृद्धाश्रम में या फुटपाथों पर आंसू न बहाये इसके लिए गम्भीरता से 'मिशन रोजगार' योजना का शुभारंभ करना होगा। वरना देश में एक बड़ा समूह 'नोटा प्रेमी' भी है जो सभी पार्टियों को नकार चुका है। इसी उथल-पुथल को दूर करने हेतु मैंने समाज में निकल कर अनेकों अनेकों युवाओं से बात की है। युवा कहते

हैं कि नौकरी मिली नहीं ओवरऐज हो चुके और फलां पार्टी के कार्यकर्ता हैं। अब उस पार्टी कि सोच- विचारधारा बुरी हो या अच्छी, हमारी मजबूरी है, हम उनकी जिंदाबाद करेंगे। वरना हम यहां से भी हटे तो करेंगे क्या? हम कौन से बड़े नेता हैं जो दूसरी पार्टी हमें तुरंत बुला लेगी। मतलब बहुत से युवा बहुत सी पार्टियों में पापी पेट की मजबूरीवश जुड़े हैं। हमने कहा पहले तो आप यह विचारधारा पसंद नहीं करते थे तो बोले, अब भी नहीं करते परन्तु देश की तथाकथित राजनीतिक पार्टियों ने जाति-धर्म की राजनीति में युवाओं को पथभ्रष्ट कर दिया है। वह अंदर से तो चाहते हैं कि अपने नेता से रोजगार के मुद्दे पर बहस करें पर वह जानते हैं कि 'नौकरी - रोजगार' नाम सुनते ही तथाकथित नेताओं ने अनेकों युवा कार्यकर्ताओं को पार्टी से बाहर कर दिया और कुछ तो गुमनाम ही हो गये। हमने अन्य युवाओं से भी बात की तो वह सब एक स्वर में बोले कि वर्तमान 'मोदी सरकार' 'बेहतरीन' है बस वह 'रोजगार' पर भी गम्भीरता से फोकस करें। तब ही साकार होगा 'रोजगार युक्त' 'उन्नत भारत' 'विकसित भारत' का खूबसूरत सपना। सही भी है वर्तमान सरकार ने बहुत से नामुकिन से दिखने वाले कार्यों को मुमुक्षिन कर दिखाया है। इसलिए देश की जनता को सारी उम्मीद 'मोदी सरकार' से ही ज्यादा है। वैसे हमारी महान भारतीय संस्कृति में कहा भी गया है कि सुबह का देखा सपना, साकार अवश्य होता है और 'रोजगार युक्त' भारत का सपना हर युवा के सुबह के देखे सपने जैसा ही है। बाकि भविष्य तो सदा ही समय की बंद मुद्दी में कैद रहा है... ■ ■ ■

परशुराम और चिरकारी

महर्षि जमदग्नि का क्रोध शांत हो गया। वे परशुराम पर बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें मुँहमाँगा वरदान देने की बात कही। तब परशुराम ने क्या माँगा? मेरी माँ को जीवित कर दीजिये; मेरे भाइयों की जड़ता समाप्त कर दीजिये और ऐसा कीजिये कि माता तथा भाइयों को यह घटना स्मरण ही न रहे। महर्षि ने प्रसन्न होकर ये सभी वरदान दे दिये। यह बात दूसरी है कि पुराणों में यह कथा लिखी गई है और परशुराम की निंदा करने वाले उन्हें मातृहंता या माँ का हत्यारा कहते रहते हैं।



मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी



पुराणों में परशुराम और चिरकारी इन दो पात्रों की कहानियाँ आती हैं। परशुराम की कहानी से बहुत लोग परिचित हैं परन्तु चिरकारी की कहानी उतनी बहुज्ञात नहीं है। इन दोनों ही व्यक्तियों के सामने लगभग एक समान स्थिति आई। दोनों ने एकदम परस्पर विपरीत निर्णय लिये फिर भी फल दोनों के लिये ही सही रहे। जो स्थिति उनके सामने आई उसी प्रकार की स्थितियों से कई बार हम सबका भी सामना होता है। उस समय हमें क्या करना चाहिये इस विषय पर इन दो कथाओं की पृष्ठभूमि में कुछ विचार यहाँ व्यक्त कर रहा हूँ। इनसे

सबका सहमत होना आवश्यक नहीं पर सभी इस पर सोच विचार कर अपनेअपने निर्णय ले सकते हैं।

हम जानते हैं कि परशुराम के पिता भार्गव वंश शिरोमणि, परम तपस्वी, परम सिद्ध किंतु परम क्रोधी महर्षि जमदग्नि थे। जमदग्नि का क्रोध इतना प्रचंड होता था कि आज भी अति क्रोधी व्यक्ति को प्रत्यक्ष जमदग्नि या जमदग्नि का अवतार कहने की परंपरा पड़ गई है। एक बार वे किसी कारण से अपनी पत्नी रेणुका पर ही भड़क गये। उन दंपति को पाँच पुत्र थे। बड़ा लड़का सामने था। जमदग्नि ने उसे आदेश दिया कि माँ को मार डालो। पिता

के आदेश का पालन करना पुत्र का कर्तव्य होता है। परन्तु माँ की हत्या? वह बेचारा पशोपेश में पड़ गया। पिता की आज्ञा का उल्लंघन गलत है। पर यदि पिता की आज्ञा ही अधर्मयुक्त हो तो? उस बेटे ने जमदग्नि की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। क्रोध में भरे ऋषि ने पुत्र को जड़ हो जाने का शाप दे दिया। फिर जमदग्नि जी ने वही आज्ञा क्रम से अपने अन्य तीनों पुत्रों को दी। उन्होंने भी नहीं मानी और वे भी पिता के कोपभाजन होकर जड़ हो गये। पाँचवें परशुराम उस समय कहीं बाहर गये थे। वे उसी समय लौटे तो पिता ने वही आदेश उन्हें भी दिया। परशुराम ने आव देखा न ताव। उठाया अपना परशु और काट डाला माँ का सिर।

महर्षि जमदग्नि का क्रोध शांत हो गया। वे परशुराम पर बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें मुँहमाँगा वरदान देने की बात कही। तब परशुराम ने क्या माँगा? मेरी माँ को जीवित कर दीजिये; मेरे भाइयों की जड़ता समाप्त कर दीजिये और ऐसा कीजिये कि माता तथा भाइयों को यह घटना स्मरण ही न रहे। महर्षि ने प्रसन्न होकर ये सभी वरदान दे दिये। यह बात दूसरी है कि पुराणों में यह कथा लिखी गई है और परशुराम की निंदा करने वाले उन्हें मातृहत्या या माँ का हत्यारा कहते रहते हैं।

चिरकारी महर्षि गौतम का पुत्र था। उसका नाम ही चिरकारी इसलिये पड़ा था कि वह हर काम बहुत देर से करता था। मैं यह काम करूँ कि न करूँ यही सोचने में बहुत समय बिता देता था। उसके साथ भी ऐसी ही घटना हुई। महर्षि गौतम किसी कारण से अपनी पत्नी पर बहुत कुद्ध हो गये और उसी क्रोध के प्रभाव में उन्होंने पुत्र चिरकारी को आज्ञा दे

दी कि अपनी माँ को मार डालो। आज्ञा देकर वे तो चले गये जंगल। पर चिरकारी तो चिर कारी ही था। वह वहाँ से निकला और एक पेड़ के नीचे बैठ कर सोचने लगा कि उसका धर्म क्या है। पिता की आज्ञा का पालन करना या माँ की हत्या न करना। दोनों ही बातों के पक्ष-विपक्ष पर चिंतन करने में उसने बहुत समय बिता दिया। हम नहीं जानते कि उसे परशुराम की कहानी पता थी कि नहीं। वह बस सोचता ही रहा और उसने काम कुछ भी नहीं किया। इधर कुछ समय बाद महर्षि गौतम का क्रोध अपने आप शांत हो गया और तब उन्हें लगा कि उन्होंने कितना अन्यायपूर्ण और गलत आदेश दिया है। वे पछताने लगे और मन ही मन मनाने लगे कि चिरकारी ने अपने नाम तथा स्वभाव के अनुरूप कुछ भी न किया हो। वे तेजी से घर लौटे और लगे चिरकारी को खोजने। जब उन्हें पता लगा कि बेटे ने सारा समय सोचने में ही बिता दिया और प्रत्यक्ष कुछ भी नहीं किया तो वे बड़े प्रसन्न हुए और पुत्र को तमाम वरदान देने लगे।

अब प्रश्न उठता है कि सही कौन था। परशुराम या चिरकारी? जमदग्नि और गौतम दोनों ने ही अपने अपने पुत्रों को एक ही प्रकार की आज्ञा दी थी। एक ने उसका तुरत पालन किया; दूसरे ने नहीं किया। भला दोनों का ही हुआ। दोनों के पिता प्रसन्न हुए और दोनों ने अपने अपने पुत्रों को वरदान दिये।

ऐसे प्रसंग हममें से किसी के भी सामने खड़े हो सकते हैं। बड़ों की आज्ञा का पालन; वह आज्ञा उचित है या अनुचित इस बात का बिना विचार किये; तुरत करना चाहिये यह नीति या नियम है। परन्तु क्या वास्तव में यह सही है? या क्या वास्तव में यह गलत है? युद्ध भूमि में

सेनापति किसी विशेष योजना के साथ कुछ करना चाहता है। योजना गुप्त है। उस योजना के अनुसार वह अपने अधीन सैनिकों को कुछ आदेश देता है। सैनिकों का कर्तव्य क्या है? आदेश का अक्षरशः पालन करना या योजना की सफलता-असफलता आदि पर विचार करना? हम कहेंगे कि विचार करना सैनिकों का काम नहीं है। उन्हें तो आदेश का पालन करना चाहिये। परन्तु मान लीजिये कि किसी सैनिक को पता चला कि सेनापति शत्रु से मिला हुआ है और उसका यह आदेश देश तथा राज्य का विरोधी है तो? क्या सैनिक को अपनी बुद्धि लगानी चाहिये। तब हम ही कहेंगे कि सैनिक को आदेश का पालन नहीं करना चाहिये। लेकिन बाद में पता चला कि सेनापति शत्रु से मिले होने का नाटक राजा की सम्मति से ही शत्रु को चकमा देने के लिये कर रहा था। सैनिक के बीच में अपनी बुद्धि लगाने से राजा और सेनापति की योजना असफल हो गई और राज्य की बहुत बड़ी हानि हो गई। तब हम फिर उस सैनिक को चुपचाप आज्ञा पालन न करने के लिये दोषी ठहरायेंगे। लेकिन यह तो बाद की बात हुई। प्रश्न यह है कि उस समय सैनिक को क्या करना चाहिये था।

हमारी प्राचीन कथाओं में हमें दोनों पक्षों को मान्यता देने वाले बहुत उदाहरण मिल जायेंगे। महाराज दशरथ के आदेश से राम वन को छले गये। फिर दशरथ की मृत्यु हो गयी। राजगुरु महर्षि वसिष्ठ ने भरत को ननिहाल से बुलवाया और आज्ञा दी कि अब तुम्हें राजगद्दी पर बैठ कर राज्य चलाना है। यही तुम्हारे पिता की इच्छा थी और यही धर्म है। लेकिन भरत ने क्या किया? गुरु का आदेश, पिता की इच्छा या माता के वचन सबका उल्लंघन किया और राम को वापस लाने का प्रयत्न

करने का अपना अलग ही मार्ग निकाला। हम गुरु की आज्ञा न मानने के लिये भरत को दोषी ठहराते हैं क्या? नहीं, बल्कि हम तो भरत के गुण गान करते हैं। महाभारत में युधिष्ठिर को उनके ताऊ महाराज धृतराष्ट्र ने आज्ञा दी कि आओ और मेरे लड़के दुर्योधन के साथ जुआ खेलो। युधिष्ठिर को हम धर्मराज कहते हैं। धर्म के सैद्धांतिक तत्त्वों के बहुत बड़े ज्ञाता थे वे। उन्होंने क्या किया? बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिये इस धर्म का पालन करने के लिये जुआ खेलने चले गये। बाद में धर्म के सच्चे स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण ने धर्मराज को इस बात के लिये बहुत खरी खोटी सुनाई। तो भरत सही थे कि युधिष्ठिर? बड़ों की आज्ञा बिना विचार किये माननी चाहिये कि नहीं माननी चाहिये?

यह तो हुई पुराणों की बातें। लेकिन इतिहास भी ऐसे प्रसंगों से भरा पड़ा है। इतिहास में जब जब भी क्रांतियाँ हुईं तब तब वे बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन करके ही या फिर बड़ों के विरुद्ध विद्रोह करके ही हुईं हैं। मगाथ के राजकुमार अजातशत्रु ने अपने पिता बिंबिसार की हत्या कर दी और राजा बन गया। राजा सेनापति से बड़ा होता है न? परन्तु मौर्य सप्राट बृहद्रथ को उसीके सेनापति पुष्यमित्र ने मार दिया और मौर्य साम्राज्य का अंत कर दिया। गुप्त सप्राट समुद्रगुप्त के बाद सप्राट बने उसके कायर बेटे रामगुप्त ने तो शत्रु से समझौता करने के लिये अपनी पत्नी धूरस्वामिनी ही शत्रु राजा को अर्पण करने का आदेश अपने छोटे भाई चंद्रगुप्त को दे दिया था। चंद्रगुप्त ने क्या किया? क्या बड़ों की आज्ञा मानी? नहीं मानी। उसने शत्रु राजा को मार दिया। फिर अपने कायर बड़े भाई को भी मार दिया। उसकी पत्नी से विवाह भी कर लिया और स्वयं

सप्राट बन गया। इतिहास में सबसे यशस्वी सप्राट माना जाता है चंद्रगुप्त विक्रमादित्य। हम उसके बड़ों की आज्ञा न मानने के कार्य का समर्थन ही करते हैं।

इन सब बातों से हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं? भरत सही थे, युधिष्ठिर नहीं। चिरकारी सही था। परन्तु परशुराम गलत थे ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। वे भाइयों द्वारा आज्ञा न मानने का परिणाम देख चुके थे। वे अपने पिता के सामर्थ्य को भी जानते थे। इसलिये उन्होंने बुद्धिमत्तापूर्ण मार्ग निकाला। लेकिन वे हमारे आदर्श नहीं हो सकते। बड़ों का आदेश मानना चाहिये यह ठीक है परन्तु उस आदेश के औचित्य-अनौचित्य पर अपनी बुद्धि से विचार अवश्य करना चाहिये।

रामकिंकर जी भरत का प्रसंग बताते समय अपना एक उदाहरण देते थे। वे बताते थे कि उनके गुरुजी भांग का सेवन किया करते थे। एक बार भांग के नशे में ये गुरु काशी की गलियों में शिष्य के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में स्मशान पड़ा। स्मशान देख कर गुरुजी वहीं बैठ गये और शिष्य से बोले कि मैं मर गया हूँ। मुझे जला दो। रामकिंकर जी श्रोताओं से पूछते थे कि मुझे क्या करना चाहिये था? गुरु की आज्ञा का पालन या उसका उल्लंघन? वे कहते थे कि मुझे अपनी बुद्धि का प्रयोग करना था, जो मैंने किया। मैंने देखा कि यह आज्ञा गुरुजी के मुँह से भले ही आ रही थी पर गुरुजी नहीं बोल रहे थे। बोल रही थी भांग। अतः ऐसी आज्ञा न मानना ही उचित था।

समग्र क्रांति आन्दोलन के समय जयप्रकाशनारायण जी ने पुलिस तथा सेना को यही कहा था कि सरकार की भी

क्यों न हो पर अन्यायपूर्ण आज्ञा को मत मानो। अर्थात् अपनी बुद्धि का प्रयोग करो। यह सलाह अनुशासन के विरोध में जाती है। जयप्रकाश जी की इस सलाह पर इंदिरा जी तथा उनके समर्थकों ने जयप्रकाश जी की बहुत निंदा की। हम जानते हैं कि बाद में आपात काल लगा। अत्याचार भी हुए। जब वह आपात काल समाप्त हुआ तो चुनावों में जनता ने इंदिरा जी का सत्ता का मद चूर कर दिया। उस समय एक बार अडवानी जी ने कहा था कि जिनको सिर झुकाने के लिये कहा गया था उन्होंने सिर झुकाया तो कोई बात नहीं; परन्तु कहा गया था सिर झुकाने को और जो घुटनों पर बैठ गये उनके विरुद्ध कार्रवाई की जायेगी। अर्थ क्या है? आज्ञा पालन करने में भी बुद्धि का प्रयोग करना है।

बहुत बार हम देखते हैं कि भ्रष्ट मंत्री अपने अधीन अधिकारियों को कुछ गलत काम करने के आदेश मौखिक रूप से या टेलीफोन आदि पर देते हैं। वे स्वयं अपने विरुद्ध कोई साक्ष्य नहीं छोड़ते। फँसता है उन गलत आदेशों का पालन करने वाला अधिकारी। न्यायालय तो यही मानता है कि जिसके विरुद्ध सबूत हैं वह दोषी। इसका तात्पर्य क्या है? तात्पर्य एक ही है कि चाहे बड़े ने कुछ भी आदेश क्यों न दिया हो उसको कार्यान्वित करने से पहले पूर्ण रूप से उसका औचित्य-अनौचित्य सोच लेना चाहिये। न्यायालय भी कहता है कि वरिष्ठ का आदेश चाहे कुछ भी हो तो भी उसका पालन तभी करना चाहिये जब वह कानून सम्मत हो। अर्थात् अपनी बुद्धि का प्रयोग अवश्य करना चाहिये। हम परशुराम केवल तभी हो सकते हैं जब हमें आज्ञा देने वाले जमदग्नि पर संपूर्ण विश्वास हो; अन्यथा चिरकारी होने में ही भला है।

भारतमाता के अमर सपूत्र : प्रियव्रत नारायण सिंह

ललन बाबू ने अपने चाचाजी प्रियव्रत नारायण सिंह के साथ कदम से कदम मिलाकर अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। देवी बाबू के एक ही सुपुत्र कुमार राजेन्द्र प्रसाद सिंह उर्फ़ ललन बाबू हुए। प्रियबाबू के दो पुत्र कुमार विरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ़ रामजी बाबू और कुमार धीरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ़ लखन बाबू हुए। इनकी आरंभिक शिक्षा गेट हाई स्कूल एवं सेंट कोलम्बस, हजारीबाग (झारखंड) से हुई।



ललन सिंह 'ललित'
रोहतास, बिहार

बिहार प्रान्त के औरंगाबाद जिले में सोनौरा नामक गाँव है। यह माली महाराज गाँव छागनाँ हुआ गाँव रहता था। माली औरंगाबाद जिले की एक बड़ी रियासत थी। आज भी विशाल किले का खँडहर एक बड़े पहाड़नुमा भूखंड पर बिखरा पड़ा है तथा इस कहावत को चरितार्थ करता नजर आता है कि

'खँडहर बता रहे हैं कि कभी इमारत बुलंद रही होगी'। माली से पहले इनके वंशज 'पवई गढ़' से आये थे जो औरंगाबाद के पास ही स्थित हैं तथा अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिए मशहूर हैं। पवई के राजा नारायण सिंह

एक उल्लेखनीय स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं। इस तरह से प्रियव्रत नारायण सिंह के वंशज पहले पवई फिर माली और माली से अंत में सोनौरा गढ़ आये। माली महाराज के बड़े भाई नागेश्वर प्रसाद सिंह माली से पाँच कोशा दूर सोनौरा स्थित अपनी छावनी पर आकर बस गये। अपने छोटे भाई राजा हरिहर प्रकाश सिंह को स्वेच्छा से माली महाराज की गद्दी पर बिठाये और स्वयं सोनौरा बस गये। उनके दो पुत्र कुमार देवी प्रसाद सिंह और कुमार प्रियव्रत नारायण सिंह हुए। प्रियव्रत बाबू का जन्म सन् 1913 में हुआ। सोनौरा गढ़ की अलग से बारह गाँव की जमींदारी थी।

प्रियव्रत बाबू के बड़े भाई बाबू देवी प्रसाद सिंह की कचहरी लगती थी। वे रियासत के कामों में व्यस्त रहने लगे। इनके संरक्षण में सोनौरा में मेला भी लगता था।

प्रियव्रत बाबू ने जिले के सबसे प्रतिष्ठित विद्यालय, गेट हाई स्कूल से हायर सेकेंड्री की परीक्षाओं अंकों से पास की और इंटरमेडिएट भी उस जमाने में अच्छे नंबर से पास की। उस जमाने के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी। गेट हाई स्कूल आज भी जिले का सबसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है। प्रियव्रत बाबू बचपन से ही बड़े जिद्दी स्वभाव के थे और दासता की बेड़ियाँ उनको मंजूर नहीं थीं। उन्होंने अपना स्थानीय संगठन बनाकर अंग्रेजी हुक्मत के विरुद्ध भूमिगत रहकर युद्ध का बिगुल फूँक दिया। अंग्रेजी हुक्मत के साथ सीधे लोहा लेना आसान नहीं था। अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ उन्होंने एक गुरिल्ला एवं छापामार युद्ध छेड़ दिया। उनके साथियों में सोनौरा के सबसे निकटवर्ती गाँव कसौटिया के कुलदीप मिश्र थे जो बाद में स्वतंत्र भारत में प्रियव्रत बाबू के साथ स्वतंत्रता सेनानी पेशनर भी बने। उनके एक अन्य सहयोगी कोल मँझौली गाँव के एक रक्षालाल (रछेया लाल) भी थे। वे भी स्वतंत्रता संग्राम पेशनर थे। देवी बाबू के एकलौते सुपुत्र कुमार राजेन्द्र प्रसाद सिंह थे। वे भी स्वतंत्रता सेनानी पेशनर थे। वे भी अपने अल्प वय में ही आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे। वे बहुत ही सुन्दर कसरती बदन वाले गबरु जवान थे। साढ़े छःफुट ऊँचे कर वाले ललन बाबू का देह धृज्ञा बेमिसाल था। उनकी गर्दन शेर की तरह थी। बड़ी 2 अँखों में बराबर रोब छलकता था। वे कद काठी के ही सादृश्य उत्कृष्ट

जीवट वाले जवान थे। उनको लड़ाने के लिए अयोध्या के नागा पहलवान को गढ़ में स्थायी रूप से रखा गया था। वे अबल दर्जे के घुड़सवार थे। निशानेबाजी में रामजी बाबू को महारत हासिल था। जबकि उनके उनके अनुज और मेरे श्वसुर एक सादगी पसंद संतपुरुष और शास्त्रों के निरंतर अध्येता और जानकार थे। वे एकांत में मोटरहाऊस पर सदा पढ़ते पाये जाते।

ललन बाबू ने अपने चाचाजी प्रियव्रत नारायण सिंह के साथ कदम से कदम मिलाकर अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। देवी बाबू के एक ही सुपुत्र कुमार राजेन्द्र प्रसाद सिंह उर्फ ललन बाबू हुए। प्रियबाबू के दो पुत्र कुमार विरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ रामजी बाबू और कुमार धीरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ लखन बाबू हुए। इनकी आरंभिक शिक्षा गेट हाई स्कूल एवं सेंट कोलम्बस, हजारीबाग (झारखंड) से हुई। ललन बाबू के बड़े लड़के पृथ्वीराज सिंह की भी पढ़ाई लिखाई गेट हाई स्कूल, सेंट कोलम्बस एवं उदय प्रताप क्षत्रिया महाविद्यालय, वाराणसी से हुई।

प्रियव्रत बाबू ने स्थानीय संगठन बनाकर अंग्रेजी हुक्मत के नाक में दम कर दिया। उन्होंने चरन स्थित दारभट्टी में आग लगा दी। इस्टर्न रेलखंड के रेलवे लाइन पर स्थित अंकोरहा स्टेशन को फूँक दिया। वे लोग छापामार युद्ध करते और जंगलों में छिप जाते। वे गाँधी जी के स्वराज्य के अनुयायी होकर भी उनके अहिंसक आंदोलन के पक्षधर नहीं थे। उन्हें सही अर्थों में सुबास चन्द्र बोस के सशस्त्र क्रांति का अनुयायी मानना उचित होगा। उनके नक्शे कदम पर चलकर उन्होंने एक दस्ता तैयार कर लिया था। वे अद्भुत संगठन कर्ता थे। एक दिन में

बीस-पचीस कोस की दूरी पैदल चलते थे। अपनी तीव्र गतिशीलता के कारण ही अंग्रेजों के पकड़ में नहीं आते थे। एक जगह टिककर कभी रहते नहीं थे। नवीनगर पुलिस चौकी को अपने साथियों के साथ मिलकर उन्होंने जला दिया और वहाँ कांग्रेस का झंडा गाइ दिया। इस घटना के बाद अंग्रेजी हुक्मत ने इनकी गिरफ्तारी के लिए जगह 2 छापे मारना प्रारंभ कर दिया। वे पकड़ में नहीं आ रहे थे। खुफिया जानकारी पर एक पलटन उनकी गिरफ्तारी के लिए अंकोरहा स्टेशन से उतरकर सोनौरा गढ़ की ओर बढ़ी। बरसात का दिन था। पुनर्पुन नदी में अचानक भयंकर बाढ़ आ गई थी। पलटन को नदी पार करने के लिए कोई नौका नहीं मिल सकी। नदी पार कर ही सोनौरा पार किया जा सकता था। पलटन को खाली हाथ बेरंग लौटना पड़ा। बाढ़ उत्तर जाने का इंतजार होने लगा और कुछ दिनों के बाद एक सटीक खुफिया जानकारी के आधार पर उन्हें कुछ साथियों के साथ सोनौरा गढ़ से ही गिरफ्तार कर हजारीबाग केन्द्रीय कारावास में भेज दिया गया। उनपर मुकदमा चलाया गया। बाद में बक्सर केन्द्रीय कारावास में स्थानांतरण कर दिया गया। उनको फॉसी की सजा मुकर्रर हुई। यह सुनकर उनकी धर्मपत्नी रानी सोनपरी को जबर्दस्त आघात लगा। वे इस सदमे को बर्दाशत नहीं कर सकीं और अपने दोनों छोटे बच्चे पाँच वर्षीय रामजी बाबू और दो वर्षीय लखन बाबू को अपनी बहू (जो भतीजे ललन बाबू की पत्नी थीं) और काशीपुर स्टेट, बंगाल की राजकुमारी थीं) के गोद में सौंपकर अपने प्राण त्याग दिये। भाभी ने देवरों को पाला-पोसा। प्रियव्रत बाबू के छोटे लड़के दो साल

के लखन बाबू को उन्होंने अपना दूध तक पिलाकर पोषण किया। लखन बाबू ने भाभी को जीवन भर अपनी माँ ही माना और दूध का कर्ज अदा किया। होली में रिश्ते में भाभी लगने पर भी अबीर-गुलाल उनके चरणों में ही डालकर पूजा की। सदा माँ की तरह सम्मान दिया। यह ऐसी घटना है, जिसकी आज कोई मिसाल नहीं मिलती। सहज ही विश्वास नहीं होता पर आज भी सोनौरा गाँव और आस पास के जीवित पुराने लोग इन सारे वाक्यातों के गवाह हैं। यह न तो बहुत पुरानी

बात है और न ही कोई किंवदन्ती ही है। यह शत प्रतिशत सत्य घटनाक्रम है।

देश जब आजाद हुआ तो सभी कैदियों के साथ प्रियव्रत बाबू को रिहाई मिल गई। पाँसी का ट्रायल नहीं हुआ। स्वतंत्र भारत में वे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से नवीनगर के पहले क्षेत्रीय विधायक निर्वाचित हुए। बिहार के प्रथम मुख्य मंत्री श्री कृष्ण सिंह ने बिहार के अपने समकक्ष कदावर नेता एवं अपने चिर प्रतिद्वंदी एवं मंत्री अनुग्रह नारायण सिंह के बाद नवीनगर से दूसरे विधायक निर्वाचित हुए। दूसरी बार देवी बाबू से अनुग्रह बाबू से बड़े थे, अनुग्रह बाबू का जन्मस्थान पुर्झयगा था जो औरंगाबाद के निकट ही है। पुर्झयगा के लोग सोनौरा से ओहदे और जमींदारी में छोटे थे। पुर्झयगा के लोग एक जमींदार थे जबकि सोनौरा माली रियासत का पार्ट था। अतः काफी अनुनय विनय के बाद और सबसे बढ़कर पिता तुल्य बड़े भाई देवी बाबू की मंत्रणा जो उनके लिए आदेश था, प्रियव्रत बाबू बैठने को तैयार हुए और नवीनगर से आजादी के बाद दूसरे चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर चुनकर बाबू अनुग्रह नारायण सिंह विधायक बन सके। यदि प्रियव्रत बाबू

पुनः खड़ा हो जाते तो उनका जितना लगभग नामुमकिन हो जाता।

प्रथम बार श्री बाबू ने गोह(औरंगाबाद) के एक ब्राह्मण नेता को कांग्रेस से नवीनगर से टिकट दिलवाई तथा घमंड की अधिकता में एक शर्मनाक टिप्पणी कर डाली कि नवीनगर से कांग्रेस

के नाम पर यदि कुत्ता भी खड़ा कर दिया जाए तो वह आसानी से जीत जाएगा। औरंगाबाद एक राजपूत बहुल क्षेत्र है और यह सदा से बिहार का 'चितौड़गढ़' माना जाता है। राजपूतों ने इसे आन पर ले लिया। योग्य कैंडिडेट की तलाश होने लगी। सबको प्रियव्रत बाबू ही इसके योग्य लगे। सबका यही विश्वास था कि प्रियव्रत बाबू ही एकमात्र शख्स हैं जो नवीनगर से कांग्रेस के बाहरी उम्मीदवार को आसानी से पटखनी दे सकते हैं। चूँकि वे एक बेमिशाल संगठनकर्ता और जन प्रिय नेता थे, अतः आसानी से जीत गये और कांग्रेसी उम्मीदवार की लगभग जमानत जब्त हो गई। जबकि श्री बाबू ने दस दिन से भी अधिक दिनों तक औरंगाबाद और नवीनगर में कैम्प डाल दिया था और इसे नाक की लडाई बना लिया था। लेकिन अपने कैंडिडेट को एक शर्मनाक हार से नहीं बचा पाये। वे पैदल ही चलते थे और जनसम्पर्क साधते रहते थे। वे आजीवन दबे-कुचलों की आवाज बने रहे। उन्होंने सदा सत्य, इमानदारी और सच्चिदता का अलख जगाया और मूल्यवादी राजनीति की। अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किए। उनका ससुराल घटराईन (औरंगाबाद जिले के ही मदनपुर के पास) गाँव के एक बड़े जमींदार घराने में था। उनकी मृत्यु हर्मिया के आपरेशन के उपरान्त घटराईन में ही हो गई। उस समय उनकी उम्र पचपन साल थी। यह अप्रैल सन्

1968 की बात है। इस तरह से एक सूर्य का अवसान हो गया। बड़े भाई देवी प्रसाद सिंह का देहान्त उनके बाद सन् 11970 में प्रियव्रत बाबू के दो वर्ष बाद हुआ। परन्तु प्रियव्रत बाबू मरकर भी अमर हो गये और उनकी कीर्ति एक जन गाथा बन गई है।

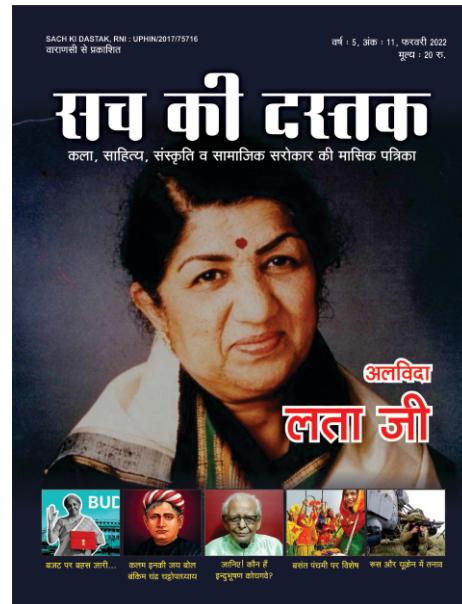
हमारे श्वसुर जी लखन बाबू प्रियव्रत बाबू के कनिष्ठ पुत्र थे। वे अब सात साल पहले स्वर्गवासी हो गये। वे भी एक सच्चिदता और बेहद सरल इंसान थे। सादगीपूर्ण एवं आडम्बरहीन जीवन ही इनकी पूँजी थी। वहीं बड़े भाई रामजी बाबू तेज तरर और गर्म स्वभाव के थे। वे राईफल-बंदूक और शिकार करने के प्रेमी थे। जंगलों से नित हारिल, जांघिल जैसे पक्षी मार लाते। वे निशाने के पक्के थे और मँसाहार के बेहद शौकीन थे। खूब बलिष्ठ भी थे। मेरे श्वसुर जी धार्मिक व्यक्ति थे और मन एवं मिजाज से बड़े भाई से कोई साम्य नहीं रखते थे। वे एक संत थे। अपने मरने का समय और दिन सबको बताकर पूजापाठ करते ब्रह्मलीन हो गये थे। ऐसा सातिक और संस्कारित मौत बिरले लोगों को नसीब होता है। सासू माँ अभी जीवित हैं और करीब अस्सी साल की हो गई हैं। बाबू रामजी सिंह को भी मेरे पाँच साल हो गये। देवी बाबू के पुत्र ललन बाबू के चार पुत्र हैं। बड़े पृथ्वीराज सिंह, भानु प्रताप सिंह, चन्द्रशेखर प्रसाद सिंह उर्फ बीजू बाबू तथा छोटेअरुण बाबू। चारों जीवित हैं और सारा परिवार अपने औरंगाबाद स्थित सोनौरा हाऊस में रहते हैं। भानुप्रताप जी हाई कोर्ट पटना के वरीय अधिवक्ता हैं और सम्प्रति पटना में ही अधिवास करते हैं। चन्द्रशेखर बाबू औरंगाबाद के लोकर कोर्ट के ए पी पी हैं। छोटेअरुण भैया दिल्ली में बिजेश

करते हैं और वहीं घर बनाकर सम्प्रति अधिवास करते हैं। इनकी शिक्षा-दीक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई है।

प्रियव्रत बाबू के बड़े सुपुत्र स्वर्गीय रामजी बाबू के एक मात्र पुत्र पप्पू बाबू हैं। दो पुत्रियाँ जिनमें बड़ी पुष्पा सिंह गिद्धौर स्टेट, मुंगेर में व्याही गई हैं। महली गढ़ में निवास है। सम्प्रति देवघर (रैजनाथ धाम) में घर बनाकर रह रहे हैं। छोटी बेटी राजन दीदी दिनारा के पास बकरा गाँव के उज्जैन परिवार में हाई कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री तेज नारायण सिंह से व्याही गई हैं।

लखन बाबू के दो बेटों में शशिभूषण भैया बड़े हैं जो गाँव पर ही रहकर खेती-बारी देखते हैं। ये परिवार के पहले किसान हैं जो व्यवस्थित रूप से गाँव में रहकर खेती करते हैं। इनके बच्चे और पोते औरंगाबाद के 'सोनौरा हाऊस' स्थित मकान में रहते हैं। छोटेभाई जयभूषण भैया बिलासपुर में नौकरी करते हैं। लखन बाबू की दो पुत्रियाँ हैं मंजु सिंह और कुमकुम सिंह। कुमकुम सिंह मेरी धर्मपत्नी हैं। मंजु सिंह मेरे साथ अग्रज बबन भैया की धर्मपत्नी यानी मेरी भाभी हैं। इस प्रतिष्ठित कुल से जुड़कर हम सभी गौरवान्वित महसूस करते हैं। प्रियव्रत बाबू की सगी पोतियाँ हमारे कुल की शोभा बनीं और अपने सुसंस्कार के सौरभ को परिवार में विकीर्ण कीं जिसके सुगंध से मेरे परिवार का चमन सदा सुबासित एवं बिहँसते रहता है।

मैंने संक्षिप्त रूप से प्रियव्रत नारायण सिंह के जीवन, कृतित्व एवं उनके व्यक्तित्व को इस संस्मरण में बयाँ करने की एक कोशिश की है।



विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से हैं

- कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र
- हाफ पेज ₹ 10000 मात्र
- लैंक एंड व्हाइट फूल पेज ₹ 12000 मात्र
- हाफ पेज ₹ 6000 मात्र
- रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹ 2000 मात्र
- लैंक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹ 1000 मात्र

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**
A/c. No. : **13751652000024**
IFSC Code : **PUNB0137510**
Bank: **Punjab National Bank**

Gpay-
(1) 9045610000
(2) 9621503924

संवेदना

संवेदना मानव जीवन की आत्मा है यह उसके चेतना का सौन्दर्य है , संवेदना की मनोभूमि उपस्थित होने पर किसी अन्य के दुख या संकट की मनोदशा के भीतर स्वयं का प्रवेश करना होता है उसकी भीतरी अनुभूति से तादात्म्य स्थापित करना है ! वस्तुतः संवेदनशील चित की उपस्थिति एक शीतल छाँव है जिसमें ताप की ऊष्मा को शब्द रूपी हवा का आसरा मिलता है , भौतिक दुख वरी अतिशयता चेतनाशून्य दशा की जनक होती है और उस स्थिति में हमारे संवेदना की अनुभूति के दो शब्द !



छगन लाल गर्ग 'विज्ञ'



मानव जीवन अनुभूतियों का आगार है, विषम और सरल पथों पर चलते समय अनेकानेक सुखद और दुखद घटनाओं से साक्षात्कार होता है ! यह जीवन विभिन्न परिस्थितियों में जीने की प्रतिक्रियाओं व अनुभूतियों का जंजाल है कई बार दुख के पलों में बिना प्रतिक्रिया किये भी भीतर की प्रतिक्रियाओं के भाव चेहरे की भाव भंगिमाओं से महसूस किये जा सकते हैं जब हम मौन होते हैं तब भी बहुत कुछ कह जाते हैं! कई बार तो ऐसा देखा गया है कि मौन की दशा में हम होते हैं तभी कुछ कहते प्रतीत होते हैं , हमारे बड़े सुख, बड़े दुख

बिना अभिव्यक्ति के रह जाते हैं, हम मौन रह जाते हैं! स्वजन की मृत्यु हो जाय तो अनेकानेक प्रकार की प्रतिक्रियाएं मिलती हैं कोई छाती पीटता है किसी को उदासी घेर लेती है और चुपचाप आँखें रोने लगती हैं! इन सारी प्रक्रियाओं का मतलब इतना है कि संकट की मनोदशा से मुक्ति पाने की कोशिश करना है ये स्वाभाविक रियेक्शन हैं और भीतर की वेदना को उलीचने की चेष्टा कर रहे हैं ऐसे में जब कोई अन्य परिजन , प्रेमी , आत्मीय सहानुभूति के दो शब्द व्यक्त करता है तभी वह दूसरे व्यक्ति की पीड़ा को हरने में सहयोग करने लगता है , संवेदना ही दुख

या संकट की दशा में सहभागिता की साक्षी बन जाती है ! संवेदना की सधनता जीवन शून्यता और मृत्यु की अन्वेषणात्मक प्रज्ञा की रश्मियाँ प्रस्फुटन करने में मददगार बन जाती हैं!

संवेदना मानव जीवन की आत्मा है यह उसके चेतना का सौन्दर्य है , संवेदना की मनोभूमि उपस्थित होने पर किसी अन्य के दुख या संकट की मनोदशा के भीतर स्वयं का प्रवेश करना होता है उसकी भीतरी अनुभूति से तादात्म्य स्थापित करना है ! वस्तुतः संवेदनशील चित की उपस्थिति एक शीतल छाँव है जिसमें ताप की ऊषा को शब्द रूपी हवा का आसरा मिलता है, भौतिक दुख की अतिशयता चेतनाशून्य दशा की जनक होती है और उस स्थिति में हमारे संवेदना की अनुभूति के दो शब्द, मन व्याकुल दशा की प्रतिध्वनि से रागात्मकता लिए जब कहे जाते हैं तो संकटग्रस्त व्यक्ति के लिए वे जीवन दायी बन जाते हैं !

इस स्थिति में होने वाली जितनी भी प्रतिक्रिया होती है वे मन का हिस्सा है जिसमें भीतरी भावनाओं के तरंगित स्वर है जिसमें सहृदयता की वीणा बजती है इसी के दुखी व्यक्ति के जीवन में नव चेतना की धार बहती है सहानुभूति/ सहृदयता/ संवेदना संसार रूपी सागर में चेतना रूपी नाव है मानव के संतप्त हृदय का सहारा है इस संवेदना रूपी नाव की दुखी जनों के लिए पतगरे बंद नहीं करनी चाहिए ...पाल खुले रखने चाहिए ...प्रभु की ऊर्मिल रश्मियों का प्रवाह नाव को ढूबने से बचा लेता है!

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी.....

पता.....

पिन कोड..... मोबाइल संख्या.....

ईमेल.....

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

Sach Ki Dastak

ब्रजेश कुमार

A/c. No. : 13751652000024

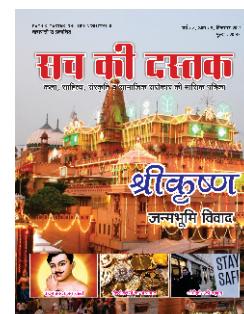
सम्पादक, सच की दस्तक

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

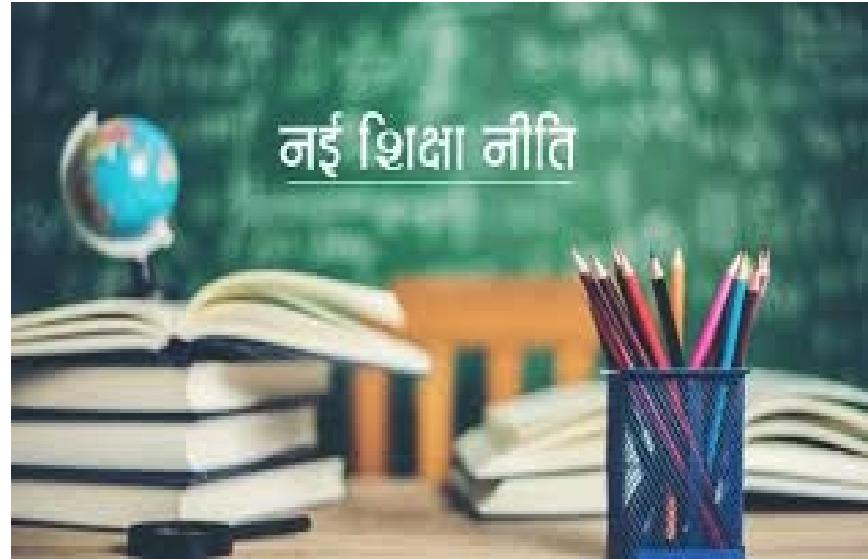
पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924



राष्ट्रीय शिक्षा नीति : एक परिदृश्य

निम्न वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के लिए बढ़ते शोषण को कम करने हेतु तथा दूर दराज एवं दुर्गम स्थान तक शिक्षा की पहुंच को सहज और सुगम बनाने हेतु तथा युवा पीढ़ी को रोजगार युक्त शिक्षा उपलब्ध करवाने हेतु 1986 में दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई जो श्री राजीव गांधी के प्रधानमंत्रीत्व में हुई। जिसकी शिक्षा संरचना 10+2+3 पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई।



प्रत्येक नागरिक के लिए शिक्षा एक मूलभूत आवश्यकता है।

समय की मांग और परिस्थितियों के अनुकूल शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षण विधियों में परिवर्तन आवश्यक माना गया है।

भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है। जिसकी नींव 1835 में लार्ड बैकले के द्वारा रखी गई। तथा इसका उद्देश्य भारत में

प्रशासन के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को और अंग्रेजी बाबुओं को तैयार करना रहा है।

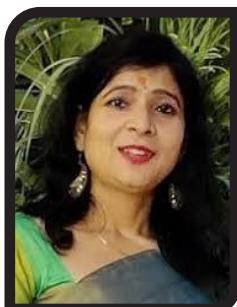
इस शिक्षण पद्धति द्वारा 100 वर्षों में भी भारत की साक्षरता दर में वृद्धि नहीं हो पाई। और उच्च वर्ग तथा श्रमिक वर्ग में भेदभाव की नीति घर कर गई।

शिक्षा प्राप्ति हेतु संस्थानों में गरीबों के साथ शोषण और अत्याचार होने लगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विश्व गुरु कहलाने वाले भारत में शिक्षा के पायदान पर बढ़ने वाले युवकों को तैयार करने हेतु शिक्षा व्यवस्था को संविधान में वर्णित किया गया। तथा शिक्षा की अनिवार्यता एवं समानता का अधिकार प्राप्ति हेतु संविधान के अनु. 45 में 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था का प्रावधान रखा गया।

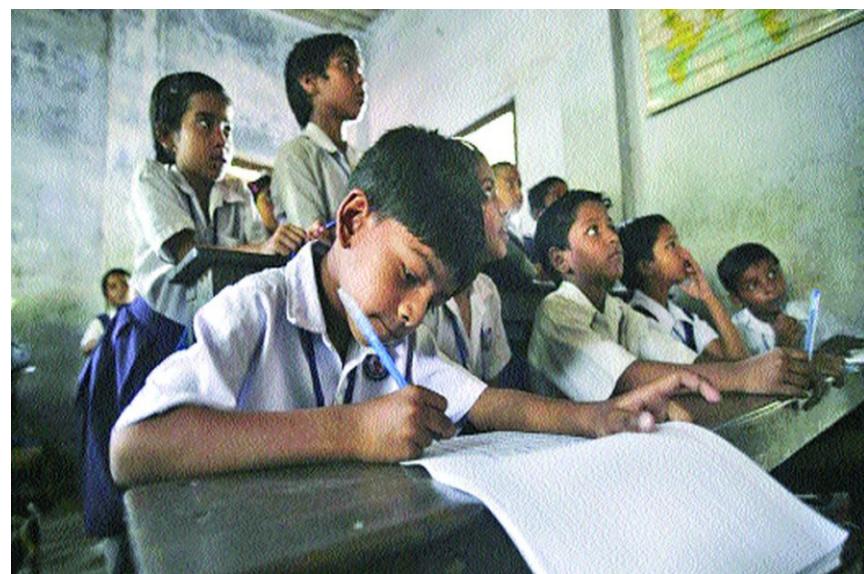
उसके बाद डॉ राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 1948 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग स्थापना हुई। 1968 में पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू हुई जो श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रीत्व में हुई। जिसका उद्देश्य सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना था। लेकिन इस शिक्षा नीति में कई कमियां उभर कर सामने आई जिनमें सुधार हेतु शिक्षा के लिए नई योजना नई नीति तैयार की गई।

निम्न वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के लिए



डॉ निशा अग्रवाल
जयपुर राजस्थान

बढ़ते शोषण को कम करने हेतु तथा दूर दराज एवं दुर्गम स्थान तक शिक्षा की पहुंच को सहज और सुगम बनाने हेतु तथा युवा पीढ़ी को रोजगार युक्त शिक्षा उपलब्ध करवाने हेतु 1986 में दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई जो श्री राजीव गांधी के प्रधानमंत्रीत्व में हुई। जिसकी शिक्षा संरचना 10th & 13th पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भारतीय युवाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक तो किया है लेकिन शैक्षिक बाजार में शिक्षा का भाव केवल आकर्षण का बिंदु और डिग्री बेचने वाली दुकानें बन गया है। जिसके कारण आर्थिक रूप से कमजोर लेकिन प्रतिभाशाली शिक्षित बेरोजगार युवाओं की भीड़ बढ़ गई है। पैसे वालों के घर नौकरियां दस्तक देने लगी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे अनैतिक व्यवहार और भेदभाव को कम करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रतिरूप तैयार किया गया। तथा बढ़ती हुई शिक्षित बेरोजगारी और शिक्षा के बाजारीकरण पर नियंत्रण हेतु 34 वर्ष के बाद 29 जुलाई 2020 को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई है, जो इसरो के अध्यक्ष के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में श्री नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्रीत्व में हुई है। जिसका मुख्य उद्देश्य कुशलता और दक्षता हासिल कराना है। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा नई सोच और नए पाठ्यक्रम से उपलब्ध कराना है। शिक्षा का मानसिक और शारीरिक बोझ कम करके बच्चे को मनोरंजन के साथ रुचिगत क्षेत्र की ओर अग्रसर करना है। खेल शिक्षण पद्धति द्वारा बच्चों में शिक्षा को स्वादिष्ट एवं रुचिकर बनाना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की



शिक्षा संरचना में बदलाव किया गया है। है, जिससे उचित समय पर विषय विशेष 10th & 13th शिक्षण पाठ्यक्रम की जगह में दक्षता हासिल कर बेहतर रोजगार 5th & 8th पाठ्यक्रम किया गया है। एम उपलब्ध हो सकें। उच्च शिक्षा में मल्टीपल एच आर डी का नाम परिवर्तित करके एंट्री एवं मल्टीपल एरिजिट व्यवस्था को शिक्षा मंत्रालय किया गया है। 5 वर्ष से कम वाले बच्चों के लिए बालवाटिका की व्यवस्था पर बल दिया गया है। कक्षा 5 तक के बच्चों की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा/ स्थानीय/ क्षेत्रीय भाषा किया गया है। संगीत, खेल और योग जैसे विषयों को मुख्य पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। शारीरिक और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने हेतु विशेष पहल नई शिक्षा नीति ने की है। शहरी क्षेत्र से ग्रामीण क्षेत्र के सभी दुर्गम इलाकों तक शिक्षा पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। बहुविषयक दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इंजीनियरिंग के छात्र भी एक साथ कला और संगीत जैसे विषयों को भी पढ़ सकेंगे।

कक्षा 1& 2 में गणित और भाषा पर तथा कक्षा 4 & 5 में लेखन पर बल दिया जाना सुनिश्चित किया गया है। कक्षा 9 से विषय चुनने की आजादी दी गई



नयी शिक्षानीति कितनी कारगर?

उस सफलता के लिए बच्चों को अंक केन्द्रित बना दिया है। वैसे भी आधुनिक विश्व की कार्यप्रणाली का एक भाग आंकड़ों (अंकों) पर केन्द्रित हो चुका है। ऐसे लगता है कि जैसे मनुष्य की सभी क्रियाओं को डिजिटल क्रांति ने अपने अधीनस्थ कर लिया है। परीक्षा में ज्यादा अंक लाने की प्रतियोगिता ने छात्रों में मित्रता की भावना ही समाप्त कर दी है। इस दौर में सबको न केवल सौ फीसदी अंक चाहिएं, बल्कि यह भी कि मेरे ही सर्वाधिक अंक आने चाहिएं, किसी और के नहीं।

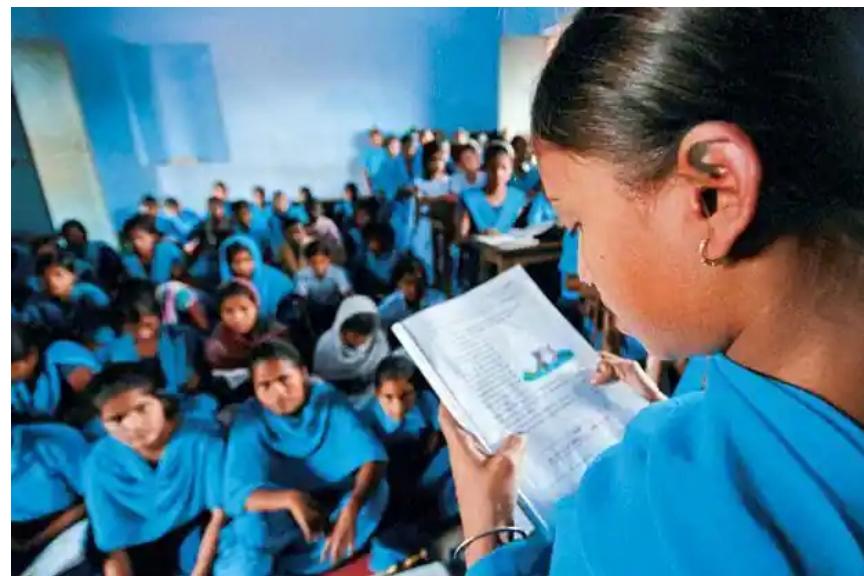


डॉ जय राम झा
ब्यूरो प्रमुख बिहार



राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर काफी चर्चा चल रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का यह कथन बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि तीन दशक से भी अधिक समय के अंतराल के बाद शिक्षा नीति में परिवर्तन हुआ। इस अवधि में देश और दुनिया में बड़े फेरबदल हो चुके हैं और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए शैक्षणिक प्रणाली में बदलाव जरूरी था। प्रधानमंत्री ने 21वीं सदी में स्कूली शिक्षा विषय पर एक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि एक टेस्ट, एक मार्क्सशीट बच्चों के सीखने की, उनके मानसिक विकास का मानक नहीं हो सकती। मार्क्सशीट मानसिक प्रेशर शीट बन चुकी है। जिस तरह की अंकों की स्पर्धा शुरू हो गई है, उससे छात्र मानसिक रूप से प्रताड़ित ही हो रहे हैं। कम नम्बर आने पर वे आत्महत्याएं करने लगते हैं। अभिभावक बच्चों पर इतना दबाव डाल देते हैं कि बस उन्हें तो अपना बच्चा सबसे आगे होना चाहिए और बड़ा होकर नोट उगलने वाला एटीएम बन जाए। समाज समझ ही नहीं पा रहा है कि उन्हें हंसता-खेलता बचपन चाहिए या बुझा हुआ बचपन। सभी बच्चों से एक ही सवाल पूछा जाता है कि कितने नम्बर आए हैं? अब छात्रों को केवल वही सामग्री चाहिए जिसमें वह अधिक से अधिक अंक प्राप्त कर सकें। अंकों की दौड़ में प्रतिभाएं पिछड़ भी रही हैं। परीक्षा में सफलता का आश्वासन देने वाली पुस्तकें भी बाजार में उपलब्ध हैं। यह भी अपनी किस्म का बाजार है। वर्तमान दौर में परीक्षा प्रणाली एक ऐसी प्रतियोगिता में बदल दिया गया है जिसका एक मात्र लक्ष्य केवल सफलता हासिल करना है। उस सफलता के लिए बच्चों को अंक केन्द्रित बना दिया है। वैसे भी आधुनिक विश्व की कार्यप्रणाली का एक भाग आंकड़ों (अंकों) पर केन्द्रित हो चुका है। ऐसे लगता है कि जैसे मनुष्य की सभी क्रियाओं को डिजिटल क्रांति ने अपने अधीनस्थ कर लिया है। परीक्षा में ज्यादा अंक लाने की प्रतियोगिता ने छात्रों में मित्रता की भावना ही समाप्त कर दी है। इस दौर में सबको न केवल सौ फीसदी

अंक चाहिएं, बल्कि यह भी कि मेरे ही सर्वाधिक अंक आने चाहिएं, किसी और के नहीं। अंकों के आधार पर ही बच्चों की योग्यता, क्षमता और कौशल को आंका जाने लगा है। परिणाम यह हुआ कि बच्चों का जीवन एक कमोडिटी में बदल गया है। उसके जीवन का एक मात्र लक्ष्य बाजार में अच्छे पैकेज वाली नौकरी हासिल करना ही रह गया है। अंकों की होड़ में बच्चों की सृजनशीलता खत्म हो रही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति अगर अंकों की होड़ को खत्म कर सके तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। मगर देखना यह भी है कि शिक्षा में भी प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए। प्राथमिक शिक्षा पर कुछ समय पहले एक रिपोर्ट आई थी कि 57 फीसदी बच्चे साधारण जमा-भाग भी नहीं कर पाते, 40 फीसदी बच्चे अंग्रेजी के वाक्य नहीं पढ़ पाते। 76 फीसदी छात्र पैसों की गिनती नहीं कर पाते। 58 फीसदी अपने राज्य का नक्शा नहीं जानते, 14 फीसदी को देश के नक्शे की जानकारी नहीं। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर शिक्षक स्कूलों में क्या कर रहे हैं? अगर बच्चे ठीक तरह से पढ़ नहीं पा रहे तो उनकी तार्किक क्षमता कैसे विकसित होगी। सवाल बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का है। एशिया में जापान और चीन जैसे देशों में अर्थव्यवस्था की मुख्य कड़ी कौशल पर आधारित शिक्षा ही है। इन देशों में इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की एसैम्बलिंग सीख कर छोटे इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का उत्पादन कर लोग आजीविका अर्जित कर रहे हैं। जबकि भारत में छात्रों को व्हाइट कॉलर जॉब के सपने दिखाए जाते हैं। कभी भी उनकी रुचि-अभिरुचि के बारे में पड़ताल नहीं की जाती। राष्ट्रीय



शिक्षा नीति में पांचवीं तक की पढ़ाई हिन्दी में कराने पर बल दिया गया है। इसका अर्थ यही है कि अपनी भाषा में किसी भी पाठ्यक्रम को पढ़ना और समझना आसान होता है। मगर विडम्बना यह है कि भारत में शिक्षा क्षेत्र को निजी क्षेत्र के लिए इतने बेतरतीब ढंग से खोला गया है कि इन शिक्षा संस्थानों की फीसें गरीब आदमी की पहुंच से बाहर हैं। एक तरफ सरकार सर्वशिक्षा अभियान, कन्या शिक्षा अभियान पर भारी धनराशि खर्च करती है, दूसरी तरफ गरीबों के बच्चों को निजी स्कूलों में दाखिला ही नहीं मिलता। शिक्षा के अधिकार का तब तक क्या अर्थ रह जाता है जब गरीब का बच्चा फटेहाल स्कूल में पढ़ेगा और अमीर का बच्चा शानदार एयरकंडीशंड स्कूलों में पढ़ेगा। कौन सी समानता इन स्कूलों में पढ़े हुए बच्चों में होगी। एक के लिए प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र खुला होगा और गरीब के बच्चों के लिए दरवाजे बंद ही रहेंगे। सभी स्कूलों में शिक्षा का स्तर समान होना चाहिए मगर भारत के किसी भी छोटे शहर या गांव के स्कूल में शिक्षा का स्तर क्या है, इसका

अंदाजा हमें वहां जाकर आसानी से लग सकता है। शिक्षा के बाजारीकरण ने ही अंकों की होड़ पैदा की है और मार्क्सशीट प्रेशर शीट बन चुकी है। महंगी शिक्षा गुणवत्ता की गारंटी हो गई है। क्या सिर्फ महंगे संस्थान सेशिक्षा प्राप्त करते ही अच्छी नौकरी मिलती है या अच्छा व्यवसाय करने के काबिल बन जाते हैं?



'लुंगी'

वर्मा जी उन्हें उनके कमरे में ले आए। कमरा तो क्या है, कभी गैराज हुआ करता था लेकिन मां की मृत्यु के बाद जबसे पिताजी गांव से उनके पास आए हैं, गैराज कमरे के तौर पर इस्तेमाल होने लगा है। गैराज में न कोई खिड़की है न रोशनदान छोटा सा कूलर रखा हुआ है, वह भी कई दिनों से खराब है। गैराज का कनेक्शन इनवर्टर से नहीं है अतः बिजली के रहमोकरम पर रहने के अलावा कोई चारा नहीं है।



डॉ. विद्या सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी, देहरादून।

आज फिर वर्मा जी के पिताजी नंगे बदन, पजामे का नाड़ा पकड़े गेट पर खड़े थे। श्रीमती वर्मा ने देखा तो पति को आवाज़ दी, 'देखो पिताजी कहीं गेट से बाहर न निकल जाएं। अब तो हद हो गई है, मेरे वश की बात नहीं है इन पर चौबीस घंटे निगरानी रखना। या तो तुम छुट्टी लेकर इनकी सेवा करो या इन्हें अपने साथ ले जाओ।'

'क्या बात करती हो! जानती हो पहाड़ की ज़िंदगी कैसी होती है? बीमार हो जाएं तो जल्दी डॉक्टर भी नहीं मिलने वाला।' बोलते हुए वर्मा जी गेट पर पहुंच गए थे।

'भीतर चलिए और बनियान कहां गई आपकी? पजामे का नाड़ा क्यों खोल

दिया है?'

'पेशाब आता है तो जल्दी से खोल नहीं पाता हूं। गर्मी बहुत लग रही थी इसलिए बनियान उतार दी।'

वर्मा जी उन्हें उनके कमरे में ले आए। कमरा तो क्या है, कभी गैराज हुआ करता था लेकिन मां की मृत्यु के बाद जबसे पिताजी गांव से उनके पास आए हैं, गैराज कमरे के तौर पर इस्तेमाल होने लगा है। गैराज में न कोई खिड़की है न रोशनदान छोटा सा कूलर रखा हुआ है, वह भी कई दिनों से खराब है। गैराज का कनेक्शन इनवर्टर से नहीं है अतः बिजली के रहमोकरम पर रहने के अलावा कोई चारा नहीं है।

'मुझे कैद करके क्यों रखते हो तुम

लोग? घर में चलने फिरने क्यों नहीं देते?'
‘घर में चलने फिरने से कौन मना करता है?’

‘तुम्हारी बीवी करती है। मेरा रंग काला है न, सहेलियों के सामने उसकी नाक कटती है।’

‘इसलिए नहीं मना करती। पेशाब माननी पड़ेगी। अगर लुंगी में इनको

कर देते हो इधर-उधर इसलिए मना करती है।’

‘तो मुझे लुंगी पहनने दिया करो, जैसे अपने गांव में पहनता था।’

वर्मा जी चुप रहे।

‘सुनो शांति कुछ बातें तो हमें भी

सहूलियत लगती है तो पजामा पहनने के लिए ज़िद क्यों करती हो? पूरी ज़िंदगी गांव में बिताई है, एक आदत हो गई है। यह कोई शर्म की बात नहीं है।’ कमरे में आकर उन्होंने पत्नी को सुनाते हुए कहा।.....



राकेश प्रकाश सक्सेना
वरिष्ठ अधिवक्ता

नेताजी श्री सुभाष चंद्र बोस के अनुसार- कोई भी शासक स्वेच्छा से अपने आधीनों को स्वाधीनता/आत्मनिर्भरता देता नहीं है। अपने शासक से - अपने कर्तत्यपालन व मांग के द्वारा स्वाधीन/आत्मनिर्भर होने के लिए आधीनों को ही अपने स्वाधीनता/आत्मनिर्भरता स्वयं ही हासिल करनी होती है।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के बाद- भारत के शासक प्रधानमंत्रीजी ने स्वयं ही स्वेच्छा से अपने संविधान के द्वारा अपने आधीन भारत के सभी राष्ट्रीय पुरुषों को व उनके राष्ट्रीय जनजीवन के जनहित में उनका मुखिया -भारत का मुख्य न्यायाधीश/चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया/सी.जे.आई दिया है। परन्तु समस्त भारतीय महिलाओं को व उनकी भारतीय जनजीविका के न्यायहित में उनका स्वाधीन विश्वगुरु मुखिया -भारतीय मुख्य न्यायाधीश/इण्डियन

आत्मनिर्भरता में रोड़ा

चीफ जस्टिस/आई.सी.जे नहीं दिया है।

खेद है कि - भारत के किसी भी शासक प्रधानमंत्रीजी से - अपने संविधानिक मुख्य कर्तत्यपालन व मांग के द्वारा स्वाधीन/आत्मनिर्भर होने के लिए व सभी भारतीय नागरिकों को स्वाधीन/आत्मनिर्भर बनाने के लिए, भारत के सभी राष्ट्रीय पुरुषों के मुखिया - भारत के किसी भी मुख्य न्यायाधीशजी ने, समस्त भारतीय महिलाओं के स्वाधीन/आत्मनिर्भर विश्वगुरु मुखिया - भारतीय मुख्य न्यायाधीश साहब को अब तक हासिल नहीं किया है। इसीलिए, सभी महिला व पुरुष भारतीय नागरिकों को, अपने सर्वोच्च मुख्य न्यायालय में - महिलाओं का मुखिया - भारतीय मुख्य न्यायाधीश साहब व पुरुषों का मुखिया - भारत का मुख्य न्यायाधीशजी, एक साथ समान रूप से हासिल नहीं हैं। इसीलिए, सभी भारतीय नागरिकों को, अपने सभी प्रकार के आई.डी.प्रूफ में दर्ज अपने नाम के साथ - अपने माता व पिता का नाम, एक साथ समान रूप से दर्ज हासिल नहीं है। इसीलिए, सभी अन्यायपीड़ित भारतीय महिलाओं को व उनकी विवादित भारतीय जनजीविका को एवं सभी अपराधपीड़ित भारत के राष्ट्रीय पुरुषों को व उनके बाधित राष्ट्रीय जनजीविन को,

अपने संबंधित न्यायालय से अपना तत्काल, निष्पक्ष, स्वच्छ, सम्पूर्ण, निःशुल्क व ईश्वरीय न्याय एक साथ समानरूप से हासिल नहीं है। वर्तमान में देश के सभी न्यायालयों में मिलाकर लगभग 4.90 करोड़ जीविका व जीवन के मामले विचाराधीन हैं। इसीलिए बेरोजगारी, बेरोजगारों के लिए बहुत बड़ी समस्या है।

इसीलिए भारत - स्वाधीन/आत्मनिर्भर, विश्व की सर्वोच्च मुख्य न्याय व अर्थव्यवस्था, विश्वविजयी कृषि व सैन्य शक्तिशाली, आध्यात्मिक व अत्याधुनिक, ज्ञानी, विज्ञानी व अनुसंधानी, गौरवशाली विश्वगुरु अखण्ड भारत, वसुधैर कुटुम्बकम नहीं हैं। क्या इस लैंगिक समानता का जिम्मेदार व आत्मनिर्भरता में रोड़ा, कर्तव्य विमुख महिला विराधी, महिलाओं के मुखिया - भारतीय मुख्य न्यायाधीश साहब का विरोधी अन्याय व अपराध का, विभाजन व विनाश का, तथा विश्व अशांति व दानवता का शौकीन - भारत का मुख्य न्यायाधीश स्वयं नहीं है? डा. भीमराव अम्बेडर के अनुसार - मैं कह सकता हूँ कि कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नहीं होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य अधम था।

गीत



'जाल अभी तक फेंक रहा हूँ'

बाहर रूप अनेक भले हों, भीतर से मैं एक रहा हूँ।
सूख गया है ताल किंतु मैं जाल अभी तक फेंक रहा हूँ।

घाट-घाट पर आग लगी है, सूखा ताल बुझाने में।
छोटी-छोटी नादानी पर उम्र गई समझाने में।
काँप रहे हैं पैर किंतु मैं सुंदर लाठी टेक रहा हूँ।
सूख गया है ताल किंतु मैं जाल अभी तक फेंक रहा हूँ ॥

एक बराबर रहे हमेशा, आग-आग पानी-पानी।
कितना मुश्किल है कुछ कहना, किसकी कितनी नादानी।
कौन कहेगा आज यहाँ पर, मैं भी कितना नेक रहा हूँ।
सूख गया है ताल किंतु मैं जाल अभी तक फेंक रहा हूँ ॥

भरना है हर हालत ताल को, मीन पास भी आएगी।
पहले छवियों के उत्सव में तड़प-तड़प मुस्काएगी।
बुझे-बुझे अंगार जलाकर अपनी रोटी सेंक रहा हूँ।
सूख गया है ताल किंतु मैं जाल अभी तक फेंक रहा हूँ ॥

मेरा मीन ताल से नाता, जल से भी याराना है।
पुश्टैनी घर बार पुलिन पर, उत्सव यहीं मनाना है।
मेल परस्पर रहा सभी से, पर थोड़ा व्यतिरेक रहा हूँ।
सूख गया है ताल किंतु मैं जाल अभी तक फेंक रहा हूँ ॥

चितवन-चितवन जाल-जाल के, जड़ जंजाल समेटे हैं।
पानी के पवमान परिंदे पर शैवाल लपेटे हैं।
बंशी के चारे में लिपटे काँटों को मैं छेंक रहा हूँ।
सूख गया है ताल किन्तु मैं जाल अभी तक फेंक रहा हूँ ॥



शिव मोहन सिंह
उपसंपादक

गुज़ाल



बलविन्द्र 'बालम'
गुरदासपुर

नई उल्फत नई उम्मीद के झूले झुलाता है।

खुशा-ए-दिल ज़माना साल नौ के गीत गाता है।

तेरे जाने से मेरा दिल मुझे क्या-क्या दिखाए रंग,
कभी मुझ को हंसाता है कभी मुझ को रुलाता है।

ग़रीबी में किसी बूढ़े से शादी कर के बेटी की,
किसी मां का कलेजा खून के आंसू बहाता है।

फसल बोने से कटने तक उसे कुछ भी नहीं बचता,
कर्ज़ में झूब कर मज़दूर बस इक ग़म बचाता है।
भरोसा रख तू अल्ला पर खुशी के दिन भी आएंगे,
सदा यह दिन नहीं रहते यह ग़म आता है जाता है।

तुम्हारी याद का भोसा मेरे होठों को छू जाए,
सुबह की झील में जब झूब कर सूरज न हाता है।
चला जाता हूं बचपन में वक्त की सीढ़ियां चढ़ कर,
कोई निर्धन, भिखारी बन के जब नगमे सुनाता है।

यह बंदा कुछ नहीं 'बालम' यह अपने कर्म पर निर्भर,
किसी को कौन देता है, किसी का कौन खाता है।



बसन्त-गीत



हरित हर गुल्म हर डाली,
हरा पावन महीना है ।
हमारे नेह का यह माह,
ऋतुओं में नगीना है ।

न जाने कब चले जाने
की बातें आप कर देते ।
हमारी पीर बढ़ जाती,
तभी मल्हार गा देते ।
अरे! अभिसार की बातें,
हमारी तुम भुला दोगे?
मदिर चितवन की वे रातें,
सजन हमको रुला दोगे।
चले यदि तुम गए प्रियतम,
हमारा व्यर्थ जीना है ।
हमारे नेह का यह माह,
ऋतुओं में नगीना है ।

कूकती कोकिला कल-
कण्ठ से मधु रागिनी गाती।
मयूरी नृत्य में मदहोश हो,
प्रिय हेतु सज जाती।
धरल बक-पाँति हो उन्मुक्त,
नभ में यूँ उड़ी जाती,
हों जैसे तीर मन्मथ के,
लक्ष्य संधान कर पाती।
बसन्ती इन हवाओं से,
सभी को अमिय पीना है,
हमारे नेह का यह माह,
ऋतुओं में नगीना है ।



प्रो. राजेश तिवारी विरल
हिन्दी विभाग
डी.ए-वी.कालेज, कानपुर



इस्क का नूर

खेलना तो अब बंद हो
गया था पर मेरे घर में एक
लाइब्रेरी थी तो वो अक्सर एक
किताब लेकर मुझसे थोड़ी दूर
पर बैठ कर पढ़ने लग जाता
था । लगता जैसे किताब पढ़
रहा है ,पर मैं जानती थी की
वो मेरा चेहरा पढ़ रहा है , मेरी
बढ़ती हुई धड़कनों को गिन
रहा है । हम अक्सर दुनिया
भर की बातों को डिसक्स
करते थे । पर न कभी उसने
कहा वो मुझसे प्यार करता है
न मैंने पूछा । बस हमारे दिल
ही जानते थे दिल की दास्ताँ ।



मंजु श्रीवास्तव 'मन'
वर्जीनिया, अमेरिका

प्रेम , अंतर्मन की आशा , किसी के
लिए पूर्णतः समर्पित हो जाने की
अभिलाषा । प्रेम जिसके रूप अनेक ,
जन्म से मृत्यु तक विभिन्न रूप में करे
जीवन का अभिषेक । प्रेम मन मंदिर में
जलता दिया, जिसने तन मन में ऊषा
भरी , जीवन को उजियारा किया । जी हाँ
प्रेम को परिभाषित करना आसान नहीं ।

अगर यह प्यार का पौधा कहीं
बचपन में पल्लिवत हो तो कितने भी उतार
चढ़ाव आयें, या कितने भी मोड़ आये वो
अपने लिये जगह बनाए रखता है । उसकी
जड़ें दिल की जमीन पर मज़बूती से
फैलती जाती हैं ,बशर्ते वो प्यार सच्चा हो
महज़ शारीरिक भोग की चाह न हो ।

हर लड़की मन में एक ऐसे इंसान
का तस्सवुर रखती है जो उसकी आशाओं

,अपेक्षाओं के अनुरूप हो । वो अलग बात
है कि उसकी हाथों की रेखाओं में ईश्वर ने
कैसा प्यार , कैसा पति लिखा है कोई
नहीं जानता । चुनती तो हर लड़की एक
अच्छा ही पुरुष है पर फिर भी भी
दर्दनाक हादसे हो जाते हैं , वो शायद
उनकी बदकिस्मती होती है ।

प्यार एक शाश्वत गीत ,जिसे सब
गुनगुनाते हैं , मिले या न मिले मन का
मीत । ऐसी ही कहानी है प्रेम चकोरी
मिसेज़ ब्रिंगेंजा की । बस उनके सामने
इश्क का जिक्र करदो तो उनके यादों के
पिटारे से उनकी अनगिनत अनुभूतियाँ ,
अहसास बिखरने के लिए बेचैन होने
लगते थे । गाहे बगाहे मैं उनके पास जाकर
बैठ जाती थी । उनकी बातें सुनना मुझे
बहुत अच्छा लगता था । आज भी बातों

बातों में इश्क का जिक्र छिड़ गया तो मिसेज ब्रिगेंजा बोली ' मेरी प्रेम कहानी सुनोगी ?' मैं तो उछल कर कुर्सी से उठकर उनकी रजाई में घुस गई जिससे फुरसत से पूरी दास्तान सुन सकूं ।

मैंने जब पूँछा कि उनका नाम क्या था तो बोली ' गॉड को किसी भी नाम से बुला लो ,क्या फर्क पड़ता है । '

'आप कितनी बड़ी थी जब आपको इश्क हुआ ?'

'दस साल की थी । दस वर्ष का अल्हड़ बचपन जो जानता भी नहीं कि प्यार व्यार क्या होता है , फिर भी कोई इतना अपना लगने लगे कि हर पल उसको देखने की खाहिश हो तो वो प्यार नहीं तो और क्या है ? पर इस अहसास को समझने के लिए यह उम्र बहुत छोटी होती है । मेरे साथ भी ऐसा ही था ।

वो यानि मेरा प्यार , मेरा खुदा , मेरी जान हमारे घर के बगल के घर में ही रहता था । मेरे भाई का दोस्त था इसलिए उसे घर आने जाने में कोई रोक टोक नहीं थी । वो आता हम सब मिलकर लूडो , कैरम ,छुपन छुपाई खेला करते थे । उसकी उम्र रही होगी कोई पंद्रह साल । वो हमेशा मुझे आप कहकर बात करता था और मैं नादान तो उससे वैसे ही तू तड़क करती थी जैसे अपने भाई से करती थी । आखिर एक दिन मैंने उससे पूँछ ही लिया " तुम तो मुझसे बड़े हो फिर मुझे आप आप क्यों कहते हो ? मैं तो जैसे भाई को तुम कहती हूँ तुम्हें भी तुम कहती हूँ । "

वो बोला 'बस मेरा दिल ऐसा ही कहता है , मैं आपकी बहुत इज़्ज़त करता हूँ । जिस दिन कभी आपको भी ऐसा महसूस हो तो आप भी मुझे आप कहने

लगना ।"

उसकी बात उस समय मेरे सर के ऊपर से निकल गई । सोचा की भाई को तो मैं कभी भी आप न बुलाऊंगी तो फिर इसको क्यों बुलाऊंगी । बात आई गई हो गई दो तीन साल गुजर गए । धीरे धीरे वो मेरी आदत बनने लगा । जिसदिन वो न दिखता लगता आज कुछ तो मिसिंग है ।

और फिर कब चुपके से यौवन ने दिल की दहलीज पर दस्तक दी कि बहुत कुछ अनकहा भी सुनाई देने लगा , बहुत कुछ उससे कहने का दिल करने लगा और मुझे पता भी नहीं चला कब मैं उसे आप बुलाने लग गई । जब भी उसको देखती गुलमोहर से दहकने लगते मेरे गाल । वो जब बात करता तो लगता जैसे हरसिंगार के फूल झर रहे हैं और मैं उनकी भीनी भीनी खुशबू में नहा रही हूँ । समझ में तो आने लगा की शायद यही प्यार है ।

खेलना तो अब बंद हो गया था पर मेरे घर में एक लाइब्रेरी थी तो वो अक्सर एक किताब लेकर मुझसे थोड़ी दूर पर बैठ कर पढ़ने लग जाता था । लगता जैसे किताब पढ़ रहा है ,पर मैं जानती थी की वो मेरा चेहरा पढ़ रहा है ,मेरी बढ़ती हुई धड़कनों को गिन रहा है । हम अक्सर दुनिया भर की बातों को डिसक्स करते थे । पर न कभी उसने कहा वो मुझसे प्यार करता है न मैंने पूँछा । बस हमारे दिल ही जानते थे दिल की दास्ताँ । पता नहीं वो बुजदिल था या मैं बुजदिल थी या फिर इश्क को लेकर हमारी सोच एक जैसी थी ।

एक दिन मैं घर पर नहीं थी तब वो आया शायद , उन दिनों मैं शेक्षणियर की बुक 'मैकबेथ' पढ़ रही थी । रात को

जब मैंने किताब खोली तो फ्रंट पेज पर पेसिल से लिखा था 'एडोरेबिल चोर' , मैं तेजी से पन्ने पलटने लगी । फिर तो कितनी ही चोर की उपाधियां दिख गई रेस्पेक्टेड चोर , लवेबिल चोर , मोस्ट ब्यूटीफुल चोर , मैंने उसका दिल जो चुरा लिया था । उसदिन लगा जैसे मुझे सारे जहां की खुशियां मिल गई ।

अगले दिन वो जब आया तो लगा ही नहीं की जैसे कल वो मेरी किताब में कुछ कारउज़ारी करके गया है । मैंने भी कुछ नहीं कहा पर हाँ उस किताब को मैंने आज तक संभाल कर रखा है , वही तो एकमात्र प्रेमपत्र है मेरे पास , सबसे प्रेशस सर्टिफिकेट है ।

कुछ दिनों बाद उसकी नौकरी लग गई । जिस दिन वो जा रहा था मिलने नहीं आया शायद जुदाई के पल को बर्दाश्त करने की हिम्मत नहीं थी , यकीन करोगी उसदिन मुझ बावली ने गॉड से कितनी मन्त्र मांगी कि उसकी ट्रेन छूट जाये और वो जा न पाये । अब सोचती हूँ तो हँसी आती है कि क्या एकदिन ट्रेन छुड़वा कर उसको जिंदगी भर के लिये रोक सकती थी ? पर जाने वाले कब रुकते हैं ,वक्त कब ठहरता है ? वो चला गया । मैं भी कुछ दिन बाद पढ़ने बाहर चली गई । एक दिन मुझे लगा जैसे वो मुझे कहीं से देख रहा है । दो तीन बार ऐसा लगा फिर एकदिन हॉस्टल के पते पर उसका खत आया ,सिर्फ चार लाइने लिखी थी - 'आपको देखने की बहुत इच्छा हो रही थी ,इसलिए आया था ।आपको नजर भर देख लिया । आपकी पढ़ाई डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था इसलिये मिला नहीं ।वापस जा रहा हूँ । कहीं भी

रहूँ , हमेशा आपके आस पास ही रहूँगा मन से ,आत्मा से । ”

कैसे वो इतना निर्मल हो सकता था । क्या मेरा मन उसको देखने का नहीं करता । पर मैं तो लड़की हूँ उसके शहर जा भी नहीं सकती थी एक नज़र देखने के लिए । साल दर साल बीत रहे थे । दो तीन बार ऐसा हुआ कि जब मैं अपने घर गई तो वो भी आया हुआ था । बस जीभर कर देखकर आँखों में तस्वीर को बसा कर अपने अपने शहर चले जाते थे । फिर मेरी शादी हो गई । वो मेरी शादी में नहीं आया जबकि भाई ने उसे निमंत्रण भेजा था । मुझे इंतजार था कि शायद आ जाये और एकबार उसे देख लूँ , पर वो नहीं आया ।’

इतना कहकर मिसेज ब्रिगेंजा चुप हो गई ,जैसे उसके अक्स को कहीं खोज रही हों ।

मैंने पूछा ‘आप लोगों ने कभी प्यार का इज़हार क्यों नहीं किया ?आप लोगों में हिम्मत नहीं थी घर वालों से कुछ कहने की , या कोई ख्वाहिश नहीं थी शादी करने की ?’

“ नहीं बिज़ी , हम बुजदिल नहीं थे , कह सकते थे , शादी भी कर सकते थे , पर हमारे लिए प्यार इबादत था ,इसलिये आज भी उसकी लौ हमारे दिल में जल रही है । ”

“पर अब तो आप उनको देख भी नहीं पाती । ”

“ तो क्या हुआ भगवान किसको दिखता है , फिर भी हम उसको पूजते हैं न ? बस मेरे लिए तो वो मेरा गौड़ है , मेरी झुह में बसा है । कहते हैं न कि भगवन तो दिल में रहते हैं । ”

बुढ़ापे से धूमिल हो चली उनकी था और मैं अनायास ही उनके प्रति आँखों में प्यार की एक ऐसी रौशनी नज़र न तमस्तक थी । काश कि आज की युवा आ रही थी जिससे उनका झुर्री पड़ा चेहरा पीढ़ी भी ऐसा प्यार कर सके तो प्यार एक ओज से दमक रहा था । यह इश्क का कभी बदनाम न हो ।
नूर था जो उनको दिव्यता से जगाया रहा

सुबोध के दोहे

तन मन गन्धित हो गया, फलीभूत उपवास।
रजनीगंधा का हुआ, जबसे मन में गास॥1॥

देखे, सोचे, हँस पड़े, गाये, रुठे, मौन।
विधि ने सब उसको दिया, मुझको पूछे कौन॥2॥

जब से कान्हा ने छुआ, मिटे सभी संदेह।
चन्दन जैसी हो गई, यह माटी की देह॥3॥

सम्मोहन सा हो गया, रहा न खुद का भान।
हुई बावरी गोपियाँ, सुन मुरली की तान॥4॥

आपस में लड़ने लगे, डाली, पत्ते, आम।
जड़ की जो हालत हुई, केवल जानें राम॥5॥

सम्बन्धों में अड़ गया जब से धन का लोभ।
वैमनस्य बढ़ने लगा, उपजा केवल क्षोभ॥6॥

इसी आस में कट गए, बूढ़ी माँ के साल।
बेटा लेने आएगा, किसी एक दिन हाल॥7॥

द्वंदों में ऐसा फँसा, मानव का संसार।
बाहर बाहर हर्ष है, अंदर हाहाकार॥8॥

इस्क करना गुनाह नहीं अश्लीलता फैलाना गुनाह है

ऐसे ही मनचले प्रेमियों की हरकत के चलते कुछ शहरों में पार्क को म्युनिसिपल कार्परेशन वालों ने ताले लगा दिए हैं। थियेटर में फ़िल्म देखने जाओ तो वहाँ पर भी वही हाल। आगे वाली रों या अगल-बगल से प्रेमियों के वार्तालाप, चुम्बनों की आवाज़ और बेशर्मी का तांडव दिख ही जाता है। पर्दे पर चल रही फ़िल्म देखें या आसपास चल रही। तब खय़ाल आता है कि समाज किस दिशा में जा रहा है? सरेआम लड़के लड़कियाँ प्रेम के नाम पर छिछोरेपन का प्रदर्शन कर रहे होते हैं।



भावना ठाकर 'भावु'
बैंगलोर



आजकल के युवाओं के लिए प्रेम का अर्थ एहसासों की आप ले करने से ज़्यादा शारीरिक उन्माद को शमन करने का ज़रिया बन गया है। चलो मान लेते हैं एक उम्र के चलते उन्मुक्त होते हल्की सी हँद पार हो जाती है। पर जो क्रिया शादी के बाद सात फ़ेरे लेकर, विधिवत पति-पत्नी बनने के बाद बंद दरवाज़े के पीछे अकेले दो लोगों के बीच होनी चाहिए वो अब खुल्लम-खुल्ला होने लगी है। इश्क करना हरिग़ज़ गुनाह नहीं अश्लीलता फैलाना बेशक गुनाह है।

समय के साथ प्यार करने का तरीका भी बदल गया है। जगह की कमी की वजह से या महंगे होटलों में रोज़-रोज़ मिल पाने में असमर्थ होने की वजह से; प्रेमी जोड़े सार्वजनिक स्थलों का रुख करते पार्क गार्डन और थिएटर को घूमने और मनोरंजन की जगह के बदले प्रेम क्रिड़ा का मैदान बना रहे हैं। आसपास के

लोगों की उपस्थिति को अनदेखा करते लड़के, लड़कियाँ एक दूसरे से चिपक कर प्रेम क्रिया में इतने झूबे होते हैं कि पार्क के वॉचमैन को पास में खड़ा रहकर लाठी ज़मीन पर ठोक कर दोनों को हिदायत देनी पड़ती है कि अलग हो जाओ, कुछ तो शर्म करो ये पल्लिक प्लेस हैं फिर भी अलग नहीं होते। या तो किसी पेड़ के नीचे एक ही दुपट्टे में लिपटे सो रहे होते हैं। सुबह जब सैलानी वॉकिंग करने पार्क में जाते हैं तो कॉन्डम चप्पल से चिपक जाते हैं।

आजकल की युवा पीढ़ी ने शर्म और संस्कार मानों बेच खाए हो।

सोलह साल की लड़कियाँ और बीस साल के लड़के प्रेम के नाम पर शारीरिक उन्माद का शमन कर रहे होते हैं। न उम्र होती है, न प्रेम की परिभाषा मालूम होती है! महज़ शारीरिक आकर्षण

वास्ते



सुष्मा सिंह
वाराणसी

को प्रेम का नाम देकर परिवार वालों की पीठ पीछे गंदगी के गुल खिला रहे होते हैं।

ऐसे ही मनचले प्रेमियों की हरकत के चलते कुछ शहरों में पार्क को म्युनिसिपल कार्पोरेशन वालों ने ताले लगा दिए हैं। थियेटर में फ़िल्म देखने जाओ तो वहाँ पर भी वही हाल। आगे वाली रों या अगल-बगल से प्रेमियों के वार्तालाप, चुम्बनों की आवाज़ और बेशर्मी का तांडव दिख ही जाता है। पर्दे पर चल रही फ़िल्म देखें या आसपास चल रही। तब खयाल आता है कि समाज किस दिशा में जा रहा है? सरेआम लड़के लड़कियाँ प्रेम के नाम पर छिछोरेपन का प्रदर्शन कर रहे होते हैं। उनको तो कोई फ़र्क नहीं पड़ता पर टहलने आए या फ़िल्म देखने आए बड़े, बुजुर्ग बेचारे शर्म के मारे नतमस्तक होते रास्ता बदल लेते हैं। हर शहर में इस छिछोरेपन पर रोक लगाने के लिए पुलिस या कार्यकर्ता नियुक्त करने की जरूरत है। साथ ही माँ-बाप को अपने बच्चों को सही समझ देकर समाज को साफ़ सुथरा बनाने की जरूरत है। बच्चे कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं और कैसे मित्रों की संगत है इसकी खबर रखनी चाहिए। संस्कार घर से ही मिलते हैं संगत बाहर से मिलती है। ऐसे पल्लिक जगहों पर लड़के, लड़कियाँ ऐसी हरकत करते जब पकड़े जाते हैं तब खुद तो दुपट्टे से या रुमाल से मुँह छुपाकर नतमस्तक होते हैं, साथ में परिवार की इज़्जत भी ढूबते हैं।

क्यूँ युवाओं की अशालीनता के प्रति कोई जागरूक नहीं होता? कहीं न कहीं उनकी शर्मनाक हरकतों को सभी देखते ही होंगे, अभी ये हाल है तो आगे जाकर क्या-क्या देखने को मिलेगा इस दिशा में जल्दी ही कोई ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

■ ■

पितृ पक्ष में, माँ रोज पितरों के लिए ग्रास निकालती, फिर गाय, कुत्ता और कौवा को पिताजी बहुत श्रद्धा से भोजन देते।

बंटी, जिसकी उम्र पन्द्रह वर्ष की थी, वह माँ को ऐसा करते कई दिनों से देख रहा था, आज उत्सुकता वश पूछने लगा, 'माँ, तुम यह भोजन किनके वास्ते निकालती हो, और क्यों?'

माँ प्यार से बोली, बेटा यह तुम्हारी दादी के लिए है। तुम्हारे दादा-परदादा-परदादी, के लिए है! जो तुम्हारी दादी को पसंद था, देखो वही सब बनाई हूँ। बंटी फिर से प्रश्न किया, क्या दादी यह खाना खा लेंगी?

माँ बोली, बेटा तुम अभी इन सब बातों को नहीं समझोगे! जाओ अपनी पढाई करो।

वह जिद करने लगा, माँ बताओ ना---!

देखो बेटा, गाय-कुत्ता-कौवा के माध्यम से पितर भोजन ग्रहण करते हैं और हमें आशीर्वाद देते हैं। तुम तो जानते हो आत्मा अमर है।

पितृपक्ष में हमारे पितर, हमारे घर आते हैं। भोजन ग्रहण करते हैं। हमें उनका आशीर्वाद मिलता है।

हम उनकी पूजा -आराधना करते हैं

बंटी के मन में कुछ सन्देह था, माँ से कहने लगा, मुझे नहीं लगता कि दादी भोजन करती भी होंगी, दादा परदादी भी भोजन, शायद ही ग्रहण करती होंगी!

माँ व्यंग और हंसी के लहजे में बोली, क्यों पुरनिया पंडित जी! ऐसा क्यों कह रहे हो! जरा हमें भी तो बताओ!

बेटा बिल्कुल शांत होकर कहने लगा, वो इसलिए माँ, क्योंकि दादी को मैं देखता था, कि हमेशा दादा के भोजन करने के बाद ही कुछ खाती थी। तुम ही बताओ दादा भूखे हैं, वह कई बार खाना मांग चुके हैं, तुम उन्हें जल्दी खाना नहीं देती हो, यह देखकर क्या मेरे परदादा, परदादी खुश होकर भोजन ग्रहण करते होंगे!

यदि मैं भूखा रहूँ, तो क्या तुम खुशी-खुशी भोजन कर लोगी!

माँ, बेटे के मुंह से इतनी गंभीर और ज्ञान की बातें सुनकर स्तब्ध सी रह गई। वह सर झुकाए, ससुर जी के लिए थाली लगाने किचन में

चली गई।

■ ■

आजाद ख्याली पर मजहब भारी

ईरान को छोड़ हम अपने देश की ही बात करें तो मुस्लिम देश के भीतर सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है और सबसे बड़ी बात यह है कि आज भी इक्कीसवीं सदी के भारत में इस समुदाय की महिलाएं अपेक्षाकृत अधिक पिछड़ी हुई हैं। मुस्लिम समुदाय की महिलाओं की स्थिति और वेदना की समझ विकसित करना है, तो सच्चर कमेटी की रिपोर्ट इस विषय में विशेष जानकारी देती है। सच्चर कमेटी के अनुसार मुस्लिम समाज विशेषकर मुस्लिम स्त्रियां काफ़ी पिछड़ी हुई हैं।



सोनम लववंशी



किसी भी समाज की वास्तविक स्थिति उस समाज में रहने वाली स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है। तभी तो स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि, 'जो जाति नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उत्तरि कर सकी और न आगे उत्तरि कर सकेगी।' वास्तव में स्त्री, इस धरा पर सृजनात्मकता की प्रतीक है। स्त्री ही है, जो समाज की खेवनहार है। विज्ञान की देन ने स्त्री और स्त्रीत्व की जगह लेने की भले ही कोशिश की हो, लेकिन इसकी भी अपनी एक सीमा है। वंशवृद्धि और वंश को आगे ले जाने में आज भी महिलाओं की महिती भूमिका है। स्त्री ही है, जो कई रूपों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। जन्म के समय वो किसी की बेटी होती है, थोड़ी बड़ी होती है तो बहन, युवावस्था में प्रेमिका या किसी की पत्नी और एक

समय बाद माँ बनकर स्वयं बच्चे का पालन-पोषण करती है। सच पूछिए तो एक स्त्री एक ही जीवन में कई जीवन जीती है। फिर इस दौरान आने वाले सुख-दुःख उसके लिए विशेष मायने नहीं रखते हैं। स्त्री की बस एक ही इच्छा होती है कि उसका घर-परिवार सुखी रहे। ऐसे में एक व्यक्ति के नाते, एक सामाजिक प्राणी की बदौलत हमारी भी ये जिम्मेदारी बनती है कि हम उसे अबला नहीं, बल्कि सबला के रूप में स्वीकार करें। स्त्री-पुरुष दोनों एक-दूसरे के सहभागी हैं और जब हम पुरुष-स्त्री सामान्य रूप में न लिखकर अक्सर 'स्त्री-पुरुष' ही लिखते हैं। जिसमें स्त्री पहले आ रहा है। फिर हम उस स्त्री को अबला क्यों मान लेते हैं? क्यों हम यह मनाने पर विवश हो जाते हैं, कि - 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल

में है दूध और आँखों में पानी।'

अब यह स्थिति बदलनी चाहिए और इसकी शुरुआत कहीं न कहीं हो चुकी है। महिलाओं ने मोर्चा खोल दिया है। हिंदू समाज में महिलाओं को अधिकतर अधिकार पुरुषों की भाँति वैदिक काल से ही मिले हुए थे, लेकिन समय, काल और परिस्थितियों के आवेग में आकर कई बार हिंदू समाज की महिलाओं के अधिकारों पर भी कुठाराघात हुआ। प्राचीन काल में भारतीय नारी को लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता था, धीरे-धीरे परिस्थितियों में बदलाव हुआ और मुग़लकाल में स्त्रियों की दशा बिगड़ती चली गई। फिर अंग्रेजी हुकूमत के आगमन और देश की आज़ादी के बाद स्वतंत्र भारत में शनैः शनैः महिलाओं को पुनः स्वतंत्रता और समानता का हक मिला। जिसकी बदौलत आज स्त्री समाज धरती से लेकर आकाश तक बुलंदी छू रही हैं। दूसरी तरफ मुस्लिम समाज में आज भी महिलाएं कई तरीके से मजहबी बंदिशों से घिरी हुई हैं। जिससे आज़ादी वक्त की मांग है और हालिया दौर के घटनाक्रम देखकर यह सहज अन्दाज़ा लगाया जा रहा है कि इसके लिए महिलाएं अब आगे भी बढ़कर आ रही हैं। मुस्लिम समाज की महिलाएं बुर्का का विरोध कर रही हैं। ईरान में लंबे समय से चल रहे विरोध को दुनिया ने बड़े नज़दीकी से अनुभव किया।

ईरान को छोड़ हम अपने देश की ही बात करें तो मुस्लिम देश के भीतर सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है और सबसे बड़ी बात यह है कि आज भी इककीसवीं सदी के भारत में इस समुदाय की

महिलाएं अपेक्षाकृत अधिक पिछड़ी हुई हैं। मुस्लिम समुदाय की महिलाओं की स्थिति और वेदना की समझ विकसित करना है, तो सच्चर कमेटी की रिपोर्ट इस विषय में विशेष जानकारी देती है। सच्चर कमेटी के अनुसार मुस्लिम समाज विशेषकर मुस्लिम स्त्रियां काफी पिछड़ी हुई हैं और जब हम इस पिछड़ेपन का कारण ढूढ़ते हैं, तो इसमें धर्म और पर्दाप्रथा यानी बुर्का का अहम योगदान झलकता है। ऐसे में अगर मुस्लिम महिलाओं ने इस्लामिक राष्ट्रों में बदलाव के लिए मुहिम छेड़ दी है और उन्हें सफलता भी मिल रही है तो भारत की मुस्लिम महिलाओं को भी अपने हक की आवाज बुलंद करनी होगी, क्योंकि हमारा संविधान समानता की बात करता है। संविधान के अनुच्छेद-14 में, स्त्री-पुरुष दोनों को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। अनुच्छेद 15, महिलाओं को समानता का अधिकार प्रदान करता है। फिर वो किसी भी समुदाय विशेष से क्यों न आती हो? वहीं अनुच्छेद- 39, सुरक्षा, समान काम के लिए समान वेतन की वकालत करता है। इसके अलावा भी कई कानून हैं। जो महिलाओं को संवैधानिक दृष्टिकोण से सबल बनाने का काम करते हैं।

स्त्रियां किसी भी समाज से जुड़ी हो। अक्सर वो परम्पराओं, सिद्धान्तों और नियमों की बेड़ी में बंधी होती हैं और जब यहीं परंपरा तोड़कर आधी आबादी पूरी सांस लेने की कोशिश करती है। फिर उसके ऊपर कई प्रकार के लांछन लगाए जाते हैं। कई बार तो होता यह है कि पूरा

समाज स्त्रियों के विरोध में खड़ा हो जाता है। वर्तमान समय में देखें तो मुस्लिम परिवारों में स्त्री की स्थिति अत्यंत पिछड़ी और दयनीय है, लेकिन इसी बीच कुछ बदलाव की बयार वैश्विक स्तर पर देखने को मिली है। जो एहसास दिलाती है कि जल्द ही मुस्लिम समुदाय की महिलाएं भी स्वतंत्र और निर्भीक होकर अपना जीवन जी पाएंगी। आज के दौर की बात करें, तो मुस्लिम समाज की स्त्रियां तलाक संबंधी अधिकार, धार्मिक कट्टरता, बहु-पत्नी विवाह, पर्दा प्रथा और कई अन्य मसलों पर अपने को निम्न दर्ज़ का पाती हैं। कई बार स्थिति ऐसी हो जाती है कि उन्हें पढ़ने, लिखने, संगीत और टीवी देखने तक की आज़ादी नहीं होती। जो कहीं न कहीं एक विकसित होती सभ्यता पर सवाल खड़े करती है।

इसी बीच ईरान में धर्म की नाजायज बन्दिशों तोड़ने के लिए मुस्लिम महिलाएं सड़कों पर उतरने में गुरेज नहीं की। जिसका नतीजा यह हुआ कि ईरान जैसे इस्लामिक कट्टरपंथी देश को भी झुकाना पड़ा। इतना ही नहीं सदियों से हम सुनते आ रहें हैं कि धार्मिक न्यायाधिकारी के रूप में काम करने वाले काजी के पद पर पुरुषों का ही वर्चस्व रहा है लेकिन अब मुस्लिम महिलाएं भी काजी बन रही हैं। अफरोज बेगम और जहांआरा ने बाकायदा महिला काजी की ट्रेनिंग ली है। नादिरा बबर, शबाना आजमी, नज़मा हेपतुल्लाह, मोहसिना किदर्वई जैसी कई ऐसी मुस्लिम महिलाएं भी हैं जिन्होंने अपने बूते कामयाबी हासिल कर अपना अलग मुकाम बनाया है। इसी बीच सऊदी अरब सरकार का उदारवादी चेहरा

'पाती बरखा की'

(नवगीत)

भी दुनिया के सामने आया है। एक समय तक सऊदी अरब कड़े प्रतिबंधों वाला इस्लामिक देश रहा है, लेकिन कुछ वर्षों से स्त्रियों को अधिकार देने के मामले में भी यह देश उदार बना है। यहां महिलाओं से जुड़े कई नियमों में बदलाव किए जा रहे हैं ताकि दुनिया की नजरों में सऊदी अरब 'खुले विचारों वाले मुल्क' के रूप में पहचान बना सके। हाल ही में मशहूर फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो को लेकर सऊदी अरब का एक कानून चर्चा में रहा। गौरतलब हो कि कोई भी पुरुष बिना शादी के सऊदी अरब में नहीं रह सकता, लेकिन रोनाल्डो और उनकी गर्लफ्रेंड जॉर्जिना के लिए सऊदी अरब ने छूट प्रदान की। जो यह दर्शाता है कि वक्त के साथ बदलाव अवश्यम्भावी हो जाता है और दुनिया अब इसी दिशा में बढ़ चली है। जहां से स्त्री समाज की प्रगति के नए रास्ते खुलते हैं और यह एक सभ्य समाज के लिए आवश्यक है।



डॉ. प्रमोद शुक्ल

बरखा की पाती है आई, प्राणी मत घबरा मैं आई ।

उमसीले मौसम की आह,

स्वेदकणों की करुण कराह,

कैद पवन की इतनी चाह,

मुक्त करो अब वायुप्रवाह,

सूरज की फिर हुई खिंचाई, हुई बहुत अब तेरी ढिठाई ।

बरखा की पाती है आई, प्राणी मत घबरा मैं आई ॥

धीरे-धीरे चली बयार,

उमड़ाया मौसम का प्यार,

प्यार भरी जब सुनी पुकार,

शरमाई ऋतु पाकर यार,

घड़ी फैसले की जब आई, तब दोनों की हुई सगाई ।

बरखा की पाती है आई, प्राणी मत घबरा मैं आई ॥

अब सावन ने पकड़ी राह,

उगली मन की सारी दाह,

करूँ मैं कजरी से ही ब्याह,

संग उसी के हो निर्वाह,

रिश्ते को तब टेक लगाई, बूँदों ने की गोद भराई ।

बरखा की पाती है आई, प्राणी मत घबरा मैं आई ॥

कजरी का सुंदर श्रृंगार,

सावन इठलाए सौ बार,

धानी चुनरी बनी बहार,

फूल बनाएँ हैं गलहार,

चारों ओर खुशी लहराई, आओ हम भी कहें बधाई ॥

बरखा की पाती है आई, प्राणी मत घबरा मैं आई ॥

वेलेंटाइन और अकेलापन डांस फ्लोर पर नाचता दुख!

आठ अरब लोगों की दुनिया में एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जो अपने लिए दोस्त तलाश रहे हैं ताकि उसके साथ बैठ कर खुद को शेयर कर सकें, अपनी तन्हाइयों के बारे में, अपनी उम्मीदों के बारे में और अपने अनुभवों के बारे में उसे बता सके और उसकी बातें सुन सकें। वह चाहे वियतनाम हो या भारत हो, जिंदगी सड़कों पर दौड़ रही होती है। हर तरफ उत्साह फैला होता है और अकेलेपन का एहसास किसी कोने में छिपा होता है।



सुशील उपाध्याय



आप किसी क्लब में होते हैं तो डांस फ्लोर पर होना अच्छा लगता है, लेकिन जब डांस फ्लोर पर अकेले होते हैं तो यह उतना ही कठिन हो जाता है। दुनिया भर में ट्रैंड है कि जब भी वेलेंटाइन वीक होता है, वे सारे लोग जो किसी साथी की तलाश में तरस रहे हैं, इन डांस फ्लोर पर कुछ ज्यादा ही संख्या में नजर आते हैं।

हनोई में जिस क्लब में हम लोग गए, वहां लगभग एक-डेढ़ हजार की भीड़ थी। इस तरह के क्लब में एक बुनियादी शर्त है कि आप अकेले जा सकते हैं, जोड़े में नहीं जा सकते। उसी फ्लोर पर आपको किसी का साथ ढूँढ़ना है। और वह साथी अचानक मिलेगा, ऐसा मान लिया जाता है, पर अचानक कुछ होता नहीं। आप अकेले वहां जाते हैं, पर कोई ना कोई ऐसा होता जरूर है जो आपको पहले से पहचानता है या फिर आपके आने का इंतजार करता

होता है। आसपास देखिए, बहुत सारे लोग ऐसे मिलेंगे जो सच में अकेले हैं और अजनबी बन कर जी रहे हैं। उन्हें किसी की तलाश है, जिसके साथ और जिसका हाथ पकड़कर पूरे अधिकार से उस डांस फ्लोर पर नाच सकें। इसे महसूस करने के लिए विएतनाम जाने की भी जरूरत नहीं है।

बाहर से जो नाचता दिखता है, भीतर से वह कहीं ओर होता है। अकेलेपन का ये वो मुकाम है, जब आप रोते कम हैं, नाचते ज्यादा हैं। तब बाहर के लोगों को लगता है कि कितने खुश हैं आप। वेलेंटाइन वीक आता है और आप एक खास तरह का दबाव महसूस करने लगते हैं। यह दबाव शहरी जिंदगी में कुछ ज्यादा है और वह शहर दुनिया के किसी भी हिस्से में हो सकता है। वहां अकेलापन

ही आप की असहनीय पूँजी हो जाता है, जिससे आप पीछा छड़ाना चाहते हैं, लेकिन वह वैताल की तरह आपसे चिपक जाता है। अकेलेपन के इस वैताल से पीछा छड़ाने के लिए आपको लगता है कि कलब जाना बेहतर विकल्प हो सकता है, क्योंकि अपने छोटे से फ्लैट में आप एक कमरे से दूसरे कमरे में जा सकते हैं, बालकनी में खड़े होकर झांक सकते हैं या फिर अपने पालतू कुत्ते के साथ वक्त बिताने की कोशिश सकते हैं, लेकिन वक्त कहां बीतता है। जब पूरा बाजार गुलाबों से पटा हो, चारों तरफ सुर्ख रंग दिख रहे हैं, आपका इनबॉक्स दिखावटी और ओपचारिक मैसेज से भर गया हो, तब अकेले वक्त बिता पाना आसान नहीं होता।

इस सारी प्रक्रिया के दौरान आप किसी ऐसे की तलाश में होते हैं जो आपका अपना हो, जिसके लिए आपको इंतजार ना करनी पड़े, जिसको लुभाने के तौर-तरीके ढूँढ़ने पड़े, जो आप पर थोड़ा-सा अधिकार जata सके और जो जरूरत के वक्त गर्मजोशी के साथ आपका स्वागत कर सके।

दुनिया में अजनबी होना और अकेला पड़ जाना सबसे बड़ी सजा है। जब हर तरफ वेलेंटाइन वीक की धूम मची हुई हो, तब आपका अकेलापन ज्यादा बड़ा और गहरा हो जाता है। अपने आसपास किसी ऐसे दोस्त को देखिये जो इस बात से दबाव में आ जाता है कि वैलेंटाइन आ गया है। वह भी बाकी लोगों की तरह है, जिसे उम्मीद है कि किसी रोज उसका मनमीत अचानक दरवाजे पर आकर खड़ा होगा, लेकिन यह सब फिल्मों में होता है।

आप हजार साल इंतजार कीजिए, कोई दरवाजे पर आकर खड़ा नहीं होता। खुद ही इतना मजबूत होना होता है कि अकेलेपन को अपना साथी मान ले, जो आसान तो कर्तव्य नहीं होता।

ज्यों ज्यों उम्र बढ़ती जाती है, यह संभावना कम होती जाती है कि आपको ऐसा कोई साथी मिल पाएगा, जो सच में आपकी तरह का हो, वह भी आपकी तरह अकेलेपन को देख सके, उसे महसूस कर सके और हर स्थिति में साथ खड़ा हो सके। अकेलापन एक ऐसी लड़ाई है, जिससे आप जितना चाहे लड़ सकते हैं, लेकिन उससे जीत पाना लगभग असंभव होता है। यह अनन्त और सतत चलने वाली लड़ाई है।

ऐसा नहीं कि उस कलब में सारे लोग ही अकेलेपन के शिकार थे, लेकिन बेसुध होकर नाचते लोगों के भीतर कोई न कोई ऐसी बात जरूर थी, जो यह महसूस कराती है कि आप भी उनमें से एक हैं। हमारे दूर गाइड कहते हैं कि आप को अपने अजनबीपन से खुद लड़ा होगा, कोई बाहर का व्यक्ति इसमें मदद नहीं कर सकता और ये केवल साथी या पार्टनर की अनुपलब्धता का मामला नहीं है, अपनी धरती और अपने लोगों से दूरी भी अकेलापन पैदा करती है। यह अकेलापन इतना डरावना और भयानक होता है कि एक वक्त के बाद आपको खुद पर शर्मिंदगी होने लगती है। फिर, रह-रहकर उन रिश्तों को याद करने लगते हैं, जो कभी आपके जीवन में मौजूद थे, लेकिन अब वे सब अतीत हो गए हैं। किसी एक पल में लगता है कि आपका सबसे खूबसूरत रिश्ता आपके कारण खत्म हुआ है, आप

इस योग्य नहीं थे कि उस रिश्ते को संभाल पाते। फिर अचानक तुलना का खेल शुरू हो जाता है, अपने दोस्तों के बारे में आप सोचते हैं, उनके पार्टनर के बारे में सोचते हैं और फिर ख्याल आता है कि क्या जिंदगी ऐसे अकेले ही गुजर जाएगी ? जिंदगी रुकती नहीं, गुजरती जाती है, भले ही आपको लगता हो कि सब कुछ ठहरा हुआ है और आपके आसपास के सारे लोगों की जिंदगी बहुत सुंदर ढंग से चल रही है, पर ऐसा होता नहीं है। केवल इतनी बात है कि आप जिस अकेलेपन से रुबरू हैं, जिस अकेलेपन से लड़ रहे हैं, अभी आप उस तरह के लोगों के संपर्क में आए नहीं हैं।

आठ अरब लोगों की दुनिया में एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जो अपने लिए दोस्त तलाश रहे हैं ताकि उसके साथ बैठ कर खुद को शेयर कर सकें, अपनी तन्हाइयों के बारे में, अपनी उम्मीदों के बारे में और अपने अनुभवों के बारे में उसे बता सके और उसकी बातें सुन सकें। वह चाहे वियतनाम हो या भारत हो, जिंदगी सड़कों पर दौड़ रही होती है। हर तरफ उत्साह फैला होता है और अकेलेपन का एहसास किसी कोने में छिपा होता है, जैसे कि कोई बाघ अपने शिकार की तलाश में रहता है, आप ऊर्जा और उम्मीद की तलाश में बाजार में जाते हैं और जैसे ही उस बाघ की रेंज में आते हैं, वह तुरंत आपको लपक लेता है, दबोच लेता है। सारी चमक-दमक और तमाम बाहरी खुशियों के बावजूद एक बार फिर आप अकेले हो जाते हैं।

कलब में शराब तैर रही होती है, खाली बोतलें कोनों में उदास पड़ी होती हैं,

पर दुनिया की बेहतरीन से बेहतरीन शराब भी आपके अकेलेपन का खात्मा नहीं कर सकती। सबसे भव्य और बेहतरीन सुविधाओं से सजी जिंदगी भी इस बात की गारंटी नहीं देती कि आपका भयानक खालीपन खत्म हो जाएगा। किसी वक्त में आपको लगता है कि आज सबसे बेहतरीन फ्रेस पहनी जाएगी, जो कभी आपके पार्टनर को पसंद थी। आप उसे देखते हैं और देख कर दुख से भर जाते हैं क्योंकि उसके साथ पार्टनर की वो यादें जुड़ी हुई हैं, जिन्हें आज याद नहीं रखना चाहते, लेकिन वे आपका पीछा कभी नहीं छोड़ती। दुनिया आगे बढ़ रही है और आगे बढ़ती दुनिया में बहुत सारे लोग ऐसे हैं, जो अकेले रहने के लिए अभिशप्त हैं। ऐसा नहीं कि वे सभी अकेला रहना चाहते हैं और ऐसा भी नहीं है कि उनमें कोई ऐसी अयोग्यता है कि उन्हें एक साथी ना मिल सके। सवाल सही वक्त पर सही जगह होने का है, लेकिन तमाम कोशिश के बावजूद आप सही वक्त पर सही जगह नहीं होते। दार्शनिक रॉल्फ इमर्सन कहता है कि जीवन की सफलता सुसंगत परिस्थितियों की सुसंगत श्रृंखला है। इस श्रृंखला में से कोई एक कड़ी टूट जाए तो फिर जीवन सफल नहीं दिखाई देता। डांस फ्लोर पर नाचते हुए लोगों को देखकर लगता है कि शायद ही अकेलेपन की इससे बेहतर कोई दवा हो, पर आप जब ऐसा सोचते हैं तो आप डांस फ्लोर से बाहर खड़े होते हैं। जब खुद डांस फ्लोर पर नाच रहे होते हैं तो आप नहीं, आपका दुख नाच रहा होता है और नाचता हुआ दुख भले ही दूसरे लोगों को सुख की अनुभूति कराता हो, लेकिन आपके भीतर कशमकश कम नहीं होती। नई दुनिया के

तमाम नए साधनों ने यह भरोसा दिलाने की कोशिश की है कि आप किसी दूसरे इंसान के बिना भी जिंदा रह सकते हैं और खुश रहकर आगे बढ़ सकते हैं, पर असली दुनिया में ऐसा होता नहीं। एक वक्त के बाद आप इन नए साधनों से ऊब जाते हैं तो फिर किसी जीवित जाग्रत व्यक्ति की तलाश करते हैं, जो आपको सुन सके, जिसे आप महसूस कर सकें। लोगों की इस भीड़ में कहीं बाहर से कोई मदद मिल सकती है, इस पर मेरा यकीन नहीं है, अगर ऐसी कोई मदद मिलती होती तो इस वक्त दुनिया में करोड़ों लोग अजनबियत और अकेलेपन के शिकार नहीं होते। यह ठीक है कि इसमें बहुत बड़ी संख्या महिलाओं की है, लेकिन पुरुषों का आंकड़ा भी कोई छोटा नहीं है। जब तक समाज पिरूसत्तात्मक रहा तब तक स्त्री और पुरुष चाहे-अनचाहे तौर पर एक दूसरे के जीवनसाथी बनते रहे, लेकिन जैसे-जैसे स्त्री को आर्थिक आजादी प्राप्त हुई, उसने अपने ढंग से रहना और जीना सीखना शुरू किया तो उसके अकेले रहने की संभावनाओं के बीच अकेलेपन का शिकार हो जाने की स्थितियों का निर्माण भी हुआ। अब चाहे वैलेंटाइन डे आए या फिर अन्य कोई त्योहारी सीजन, अकेलापन जैसे इंतजार में दरवाजे के बाहर ही बैठा रहता है। आप एक रास्ता देखते हैं और उस रास्ते से कई सारी सँझें एक जगह आकर मिलती हैं, तब ये तय नहीं कर पाते कि आपके लिए कौन सी सँझ की ठीक है। डांस फ्लोर भी ऐसा ही होता है। वहां कोई आपकी तरफ हाथ बढ़ाता है नाचने के लिए और उसके बराबर में आप देखते हैं कि किसी और ने

भी आपकी तरफ हाथ बढ़ाया है। तब तय नहीं कर पाते कि इनमें से कौन सा हाथ सही था और कौन सा हाथ सही नहीं था। एक बहुत ही नाजुक-सा स्पर्श होता है, उस शोर-शराबे, भारी भीड़, बहुत तेज रोशनी और कानों को गहरे तक चीरता हुआ संगीत आपको समझने नहीं देता कि उस स्पर्श की अनुभूति क्या है। आप जब कलब से बाहर आते हैं तो अपने आप से यह सवाल जरूर करते हैं कि क्या मैं सच में यहां आने को तैयार था, क्या मुझे सच में इन जगहों पर आना चाहिए ? दुनिया सुख गुलाबों की महक में झूबी हुई है और कोई व्यक्ति अपने अकेलेपन के साथ हनोई के कलब में बेसुध होकर नाच रहा है ताकि अपने ऊपर हावी वैलेंटाइन के प्रभाव को कम कर सके।

'कल से करेंगे'
यही वो वाक्य है
जो पूरे जीवन मनुष्य को
{ कामयाबी }
तक नहीं पहुँचने देता

पेठा बनाने रेसिपी

गैस पर एक बर्तन में 2-3 का पानी रखें और और उसमें पेठे के टुकड़ों को डाल देंगे तथा उसे ढककर 5 मिनट तक उबाल लेंगे। और 5 मिनट बाद 5 मिनट बाद टुकड़ों में दूधपिक डाल कर देखेंगे। अगर दूधपिक अंदर चली जाती है, तो पेठे को बाहर निकालकर ठंडे पानी में डाल देंगे। फिर उसका सारा पानी निकाल कर अलग कर लेंगे। अब एक कढ़ाई में चीनी और पेठे के टुकड़ों को डालकर 20-25 मिनट के लिए छोड़ देंगे।



आगरा का मशहूर मिठाइया म से एक पेठा का नाम तो आपने सुना ही होगा। यह मिठाई खाने में बहुत स्वादिष्ट होती है। आज अंगूरी पेठा, चॉकलेट पेठा, केसर पेठा आदि तरह के पेठा बाजार में उपलब्ध हैं। हम लोग मुख्य रूप से मिठाई की दुकान से ही पेठा लाते हैं। क्योंकि हमें लगता है कि इस मिठाई को बनाना काफी कठिन है। और बाजार जैसा स्वाद घर पर बने हुए पेठा में नहीं आ सकता। लेकिन आज हम आपको ऐसी विधि बताने जा रहे हैं जिससे घर पर आप आसानी से पेठा बना सकते हैं। हालांकि इसे बनाने में थोड़ा समय लग सकता है, परंतु एक बार यह स्वादिष्ट पेठा बनाने के बाद आप बार-बार इसे बनाना चाहेंगे।

आवश्यक सामग्री

- पेठा बनाने के लिए आपको चाहिए आधा किलो पेठा कट्टा,
- एक चम्मच खाने वाला चूना, 5-6 बूंद केवड़ा एसेंस और 200 ग्राम शक्कर।

बनाने की विधि

कट्टा को बीच में से काट लें। इसके

पश्चात उसके बीच वाले मुलायम भाग को निकाल कर बाकी कट्टा के छोटे-छोटे टुकड़े कर लेंगे।

फिर उसके हरे वाले छिलके को काट कर हटा देंगे। तथा दूधपिक की सहायता से उसमें अंदर तक छेद कर देंगे।

फिर एक कटोरे में 2-3 कप पानी लेंगे और खाने वाले चूने को उसमें डाल देंगे। पेठे के टुकड़ों को चार-पांच घंटे के लिए उसमें डाल कर छोड़ देंगे। इसके बाद टुकड़ों को चूने के पानी से निकालकर साफ पानी से चार-पांच बार धो लेंगे।

गैस पर एक बर्तन में 2-3 का पानी रखें और और उसमें पेठे के टुकड़ों को डाल देंगे तथा उसे ढककर 5 मिनट तक उबाल लेंगे। और 5 मिनट बाद 5 मिनट बाद टुकड़ों में दूधपिक डाल कर देखेंगे। अगर दूधपिक अंदर चली जाती है, तो पेठे को बाहर निकालकर ठंडे पानी में डाल देंगे। फिर उसका सारा पानी निकाल कर अलग कर लेंगे। अब एक कढ़ाई में चीनी और पेठे के टुकड़ों को डालकर 20-25 मिनट के लिए छोड़ देंगे।

जब चीनी पूरी घुल जाए तो उसे गैस पर मध्यम आंच पर पकाएं। इसके बाद उसने केवड़ा एसेंस डालें और शक्कर को गाढ़ा होने तक पकाएं।

जब पेठे के ऊपर थोड़ा रस दिखने लगे तो गैस को बंद कर देंगे। फिर उसके बाद पेठे को जाली वाले बर्तन पर निकाल लेंगे ताकि जो भी एक्स्ट्रा रस है वो निकल जाए। हमारा पेठा बनकर तैयार है, इसे किसी कटोरी में निकाल लेंगे। ■ ■



तुर्की- सीरिया भूकंप से लें सीख

भूगर्भ वैज्ञानिकों का मानना है कि कई छोटे भूकम्प बड़ी तबाही का संकेत होते हैं। वैसे भी भारत गुजरात के भुज वाला कहर भूला नहीं नहीं। भूकम्प आने के खतरे को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों को कुल पांच जोन में बांटा गया है, जिनमें सर्वाधिक खतरनाक सिस्मिक जोन 5 है और उसके बाद सिस्मिक जोन 4 है। दिल्ली सिस्मिक जोन 4 में आती है और दिल्ली में कुछ क्षेत्र सिस्मिक जोन 4 से भी ज्यादा खतरे वाली स्थिति में हैं। ऐसे में दिल्ली में भूकम्प का खतरा हमेशा बना रहता है।



भूकम्प मतलब प्रकृति का भयावह कोप। फिर भी इंसान समझता है कि मैं ही सबकुछ हूँ। इंसान का अंहकार ही उसके पतन का कारण है। अति महत्वाकांक्षी इंसानों को चुनना होगा कि पैसा या जीवन। बता दें कि 6 फरवरी को 7.8 की तीव्रता के शक्तिशाली भूकम्प से तुर्किये और सीरिया में हुए महाविनाश में 20 हजार से भी ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। अब सवाल उठता है कि तुर्किये में इतने भूकंप क्यों आते हैं? दरअसल, तुर्किये की जटिल भौगोलिक संरचना उसे भूकंप के लिहाज से बहुत ज्यादा संवेदनशील बना देती है। इसका अधिकांश हिस्सा मुख्य रूप से अनातोलिया के 'टेक्टोनिक ल्लाक' पर स्थित है। इसके अलावा यह तीन तरफ से तीन बड़ी टेक्टोनिक प्लेट से घिरा हुआ है। ये हैं अफ्रीकन प्लेट, अरेबियन और यूरेशियन प्लेट। अनातोलियन प्लेट पर इन तीनों प्लेट की ओर से दबाव पड़ता है तो इसमें हलचल होती है जिससे तुर्किये में अक्सर भूकंप आते हैं। 1999 में तो यहां भूकम्प से 18 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। इस बीच, तुर्की और सीरिया में मौत

और निराशा के दृश्यों को भारत के सामने आने वाले जोखिमों की एक अतिदेय अनुस्मारक के रूप में भी काम करना चाहिए। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने तुर्की और सीरिया में मानवीय संकट की बात करते हुए भुज भूकंप का उल्लेख किया। लेकिन दो दशक से अधिक समय के बाद, भारत की राष्ट्रीय राजधानी, जो एक उच्च क्षति जोखिम क्षेत्र में बैठती है, बड़े भूकंपों के लिए बुरी तरह से तैयार है। 2019 में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि शहर की 90% इमारतें भूकंप रोधी नहीं हैं। यह संभवतः नई दिल्ली तक ही सीमित नहीं है और पार्टी लाइनों में आपराधिक रूप से लापरवाह शासन के दशकों का परिणाम है। बत आदें कि आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिक भारत में भी तुर्किये तैसे ही तेज भूकम्प की आशंका जata रहे हैं। उनके मुताबिक आगामी एक-दो वर्षों में या एक-दो दशक में कभी भी भारत के कुछ हिस्सों में 7.5 से भी ज्यादा तीव्रता के भूकम्प आ सकते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक देश का करीब 59 प्रतिशत हिस्सा विभिन्न तीव्रताओं वाले भूकम्प के जोखिम पर है। खासकर दिल्ली-



एनसीआर। दिल्ली-एनसीआर में 3 फरवरी, 24 जनवरी- 5 जनवरी की रात दिल्ली-एनसीआर से लेकर जम्मू-कश्मीर तक में 5.9 तीव्रता के भूकम्प के झटके महसूस किए गए थे। उससे पहले दिल्ली एनसीआर में नए साल की शुरुआत भी 3.8 तीव्रता के भूकम्प के झटकों के साथ ही हुई थी। नवम्बर माह में तो दिल्ली-एनसीआर में दो बार ऐसे बड़े भूकम्प आए, जिनमें से एक अति गंभीर श्रेणी का रिक्टर स्केल पर 6.3 तीव्रता का था, जिसका असर उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड सहित सात राज्यों के अलावा चीन और नेपाल तक महसूस किया जा चुका था। 2020 के बाद से भी दिल्ली-एनसीआर का इलाका लगातार भूकम्प से झटकों से थर्ड रहा है। लेकिन दिल्ली एनसीआर सहित उत्तर भारत में कई हल्के और मध्यम भूकम्प के झटके हिमालय क्षेत्र में किसी बड़े भूकम्प की आशंका को बढ़ा रहे हैं। ऐसे में यदि जल्द कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया तो वह दिन दूर नहीं, जब दिल्ली-एनसीआर का हाल भी तुर्किये और सीरिया जैसा ही होगा। उत्तराखण्ड के जोशीमठ में आयीं भयंकर दरारें भी प्रकृति के कोप का इशारा हो सकता है। भूगर्भ वैज्ञानिकों का मानना है कि कई छोटे भूकम्प बड़ी तबाही का संकेत होते हैं। वैसे भी भारत गुजरात के भुज वाला कहर भूला नहीं नहीं। भूकम्प आने के खतरे को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों को कुल पांच जोन में बांटा गया है, जिनमें सर्वाधिक खतरनाक सिस्मिक जोन 5 है और उसके बाद सिस्मिक जोन 4 है। दिल्ली सिस्मिक जोन 4 में आती है और दिल्ली में कुछ क्षेत्र सिस्मिक जोन 4 से भी ज्यादा खतरे वाली स्थिति में हैं। ऐसे में दिल्ली में भूकम्प का खतरा हमेशा

बना रहता है। एनसीएस के वैज्ञानिकों के मुताबिक दिल्ली को हिमालयी बेल्ट से काफी खतरा है, जहां 8 की तीव्रता वाले भूकम्प आने की भी क्षमता है। दिल्ली से करीब दो सौ किलोमीटर दूर हिमालय क्षेत्र में अगर 7 या इससे अधिक तीव्रता का भूकम्प आता है तो दिल्ली के लिए बड़ा खतरा है। हालांकि ऐसा भीषण भूकम्प कब आएगा, इस बारे में वैज्ञानिकों का कहना है कि इसका कोई सटीक अनुमान लगाना संभव नहीं है। दरअसल भूकम्प के पूर्वानुमान का न तो कोई उपकरण है और न ही कोई मैकेनिज्म। विशेषज्ञों के अनुसार दिल्ली में बार-बार आ रहे भूकम्प के झटकों से पता चलता है कि दिल्ली-एनसीआर के फॉल्ट इस समय सक्रिय हैं और इन फॉल्ट में बड़े भूकम्प की तीव्रता 6.5 तक रह सकती है। इसीलिए विशेषज्ञ कह रहे हैं दिल्ली को नुकसान से बचने की तैयारियां कर लेनी चाहिए। दिल्ली हाईकोर्ट ने कुछ समय पहले भी दिल्ली सरकार, डीडीए, एमसीडी, दिल्ली छावनी परिषद, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद को नोटिस जारी करते हुए पूछा था कि तेज भूकम्प आने पर लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं? अदालत द्वारा चिंता जताते हुए कहा गया था कि सरकार और अन्य निकाय हमेशा की भाँति भूकम्प के झटकों को हल्के में ले रहे हैं जबकि उन्हें इस दिशा में गंभीरता दिखाने की जरूरत है। अदालत का कहना था कि भूकम्प जैसी विपदा से निपटने के लिए ठोस योजना बनाने की जरूरत है क्योंकि भूकम्प से लाखों लोगों की जान जा सकती है। दिल्ली सरकार तथा एमसीडी द्वारा दाखिल किए गए जवाब पर सख्त टिप्पणी करते हुए अदालत यहां तक कह चुकी है

कि भूकम्प से शहर को सुरक्षित रखने को लेकर उठाए गए कदम या प्रस्ताव केवल कागजी शेर हैं और ऐसा नहीं दिख रहा कि एजेंसियों ने भूकम्प के संबंध में अदालत द्वारा पूर्व में दिए गए आदेश का अनुपालन किया हो। एक स्टडी के मुताबिक दिल्ली में करीब 90 फीसदी मकान क्रंकीट और सरिये से बने हैं, जिनमें से 90 फीसदी इमारतें रिक्टर स्केल पर छह तीव्रता से तेज भूकम्प को झेलने में समर्थ नहीं हैं। एनसीएस के अध्ययन के अनुसार दिल्ली का करीब 30 फीसदी हिस्सा जोन-5 में आता है, जो भूकम्प की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक रिपोर्ट में भी कहा गया है कि दिल्ली में बनी नई इमारतें 6 से 6.6 तीव्रता के भूकम्प को झेल सकती हैं जबकि पुरानी इमारतें 5 से 5.5 तीव्रता का भूकम्प ही सह सकती हैं। विशेषज्ञ बड़ा भूकम्प आने पर दिल्ली में जान-माल का ज्यादा नुकसान होने का अनुमान इसलिए भी लगा रहे हैं क्योंकि करीब 2.25 करोड़ आबादी वाली दिल्ली में प्रतिवर्ग किलोमीटर दस हजार लोग रहते हैं और कोई बड़ा भूकम्प 300-400 किलोमीटर की रेंज तक असर दिखाता है। यक्ष प्रश्न यह है कि निरन्तर आ रहे भूकम्पों के मद्देनजर ऐसे क्या कदम उठाए जाएं, जिससे जनजीवन भी प्रभावित न हो और प्रकृति को भी नुकसान न हो ताकि आने वाले समय में भारत के दिल्ली जैसी शहर तुर्किये और सीरिया जैसी भयावह त्रासदी झेलने को विवश न हों। इसके लिए राजनीति से अलग मानवता भाव रख कर गम्भीरता से काम करने की जरूरत है और तुर्की - सीरिया भूकंप से भविष्य के लिए सीख लेने की जरूरत है और पूरे विश्व को जरूरत है। ■ ■

मैं कोई बागी नहीं हूँ।

“ यह एक ऐसी चीज है जिस पर मुझे बहुत गर्व है क्योंकि यह जरूरी नहीं कि मैं दूसरों से अलग रहूं। मैं आपके लिए अलग हो सकती हूं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं कोई बागी हूं, या किसी तरह के नियम तोड़ रही हूं।” पिछले कुछ वर्षों में भारतीय खेल में बहुत कुछ बदल गया है, लेकिन हाल के वर्षों तक महिला एथलीटों को स्वीकृति और मान्यता के लिए संघर्ष करना पड़ा था। उन्हें खेल में करियर बनाने के योग्य भी नहीं माना जाता था और अगर कोई मुस्लिम परिवार से था तो उसके लिए और मुश्किलें थी।



मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक



खेल जगत में सानिया मिर्जा की अलग ही पहचान है और आज उन्होंने ट्रोल करने वालों को कड़क जवाब से नहला दिया दिया बता दे कि कई लोग सानिया को नये मानदंड (ट्रैंड-सेटर) स्थापित करने वाले मानते हैं जबकि कुछ उन्हें बंधनों को तोड़ने वाला करार देते हैं। खुद सानिया हालांकि इन बातों से इत्तेफाक नहीं रखती। उनका मानना है कि वह बस ‘अपनी शर्तों पर’ जीवन जीना चाहती है। सानिया ने टेनिस में आश्चर्यजनक सफलता हासिल की है जिसके आसपास कोई भी भारतीय महिला टेनिस खिलाड़ी नहीं है।

सानिया ने एक प्रेरक जीवन जिया है। सानिया ने दुबई में अपने आवास पर ‘पीटीआई-भाषा’ से की गयी बातचीत में कहा जो लोग अपने तरीके से काम करने की हिम्मत करते हैं उसे लेकर समाज को मतभेदों को स्वीकार करना चाहिए और

किसी को ‘खलनायक या नायक’ के तौर पर पेश करने से बचना चाहिये।

अंतर्राष्ट्रीय टेनिस को अलविदा की घोषणा कर चुकी सानिया ने कहा, “मुझे नहीं लगता कि मैंने किसी नियम या बंधन को तोड़ा हैं। ये कौन लोग हैं जो इन नियमों को बना रहे हैं और ये कौन लोग हैं जो आदर्श होने की परिगढ़ रहे हैं।” दुबई में अपना आखिरी दूर्नामेंट (डब्ल्यूटीए) खेल रही सानिया ने कहा, “मुझे लगता है कि हर व्यक्ति अलग है और हर व्यक्ति को अलग होने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।”

इस 36 साल की भारतीय खिलाड़ी ने कहा, “मुझे लगता है कि एक समाज के रूप में यही वह जगह है जहां हम शायद बेहतर कर सकते हैं। हमें सिर्फ इसलिए लोगों की प्रशंसा या बुराई नहीं करनी चाहिये क्योंकि वे कुछ अलग कर

रहे हैं।” सानिया ने कहा, “ हम सब अलग-अलग तरह से बातें करते हैं, हम सबकी अलग-अलग राय है। मुझे लगता है कि एक बार जब हम सभी स्वीकार कर लेते हैं कि हम सभी अलग हैं तो हम नियमों को तोड़ने की बात को छोड़कर उन मतभेदों के साथ मिलजुल कर रह सकते हैं।”

छह ग्रैंड स्लैम युगल खिताब और साल के अंत में डब्ल्यूटीए चैम्पियनशिप ट्रॉफी हासिल करने के साथ ही एकल करियर में 27वें स्थान के साथ सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग के बाद भी, अगर सानिया ‘ट्रैंड-सेटर’ नहीं हैं तो वह क्या है? सानिया ने कहा, “ मैं खुद ईमानदारी के साथ रहने की कोशिश करती हूं। मैंने यही करने की कोशिश की है। मैंने खुद के प्रति सच्चे रहने की कोशिश की है। और मैंने जिंदगी को अपनी शर्तों पर जीने की कोशिश की है।” उन्होंने कहा, “मुझे लगता है कि हर किसी को ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए और ऐसा करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। किसी के लिए यह नहीं कहना चाहिये कि आप नये मानदंड गढ़ रहे हैं। आप नियम तोड़ रहे हैं क्योंकि आप कुछ ऐसा कर रहे हैं जो आप करना चाहते हैं।”

इस दिग्गज खिलाड़ी ने कहा, “ यह एक ऐसी चीज है जिस पर मुझे बहुत गर्व है क्योंकि यह जरूरी नहीं कि मैं दूसरों से अलग रहूं। मैं आपके लिए अलग हो सकती हूं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं कोई बागी हूं, या किसी तरह के नियम तोड़ रही हूं।” पिछले कुछ वर्षों में भारतीय खेल में बहुत कुछ बदल गया है, लेकिन हाल के वर्षों तक महिला एथलीटों को स्वीकृति और मान्यता के लिए संघर्ष

करना पड़ा था। उन्हें खेल में करियर बनाने के योग्य भी नहीं माना जाता था और अगर कोई मुस्लिम परिवार से था तो उसके लिए और मुश्किलें थी।

सानिया ने कहा कि महिला एथलीटों का समर्थन नहीं करना सिर्फ मुस्लिम परिवारों तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने कहा, “मुझे नहीं लगता कि यह सिर्फ मुस्लिम समुदाय का मुद्दा है। यह समस्या उपमहाद्वीप में ही है। अगर ऐसा नहीं होता तो हमारे पास सभी समुदायों से बहुत अधिक युवा महिलाएं खेलती हुई दिखती।” उन्होंने कहा, “आपने मैरीकॉम को भी यह कहते हुए सुना होगा कि लोग नहीं चाहते थे कि वह मुक्केबाजी करे। वास्तव में इसका किसी समुदाय से कोई लेना-देना नहीं है। मैं एक ऐसे परिवार से आती हूं जो अपने समय से बहुत आगे था, जिसने अपनी युवा लड़की को टेनिस खेलने के लिए प्रेरित किया।

उस समय टेनिस जो एक ऐसा खेल था जो हैदराबाद में अनसुना सा था और फिर विंबलडन में खेलने का सपना देखना, किसी ने सोचा भी नहीं था।” उन्होंने कहा, “ मुझे नहीं पता कि खेल को लेकर मेरे माता-पिता पर कोई दबाव था या नहीं। लेकिन उन्होंने मुझे वह दबाव महसूस नहीं होने दिया। उन्होंने मुझे सुरक्षित रखा, जब तक मैं थोड़ी बड़ी नहीं हुई तब तक मैं वास्तव में इसे ज्यादा समझ नहीं पायी थी।”

सानिया ने कहा, “ मैंने अपने चाचा-चाची से इधर-उधर कानाफूसी सुनी थी कि ‘खेलने के कारण काली हो जाएगी तो क्या होगा, शादी कैसे होगी।’ उपमहाद्वीप में की कोई भी लड़की इन

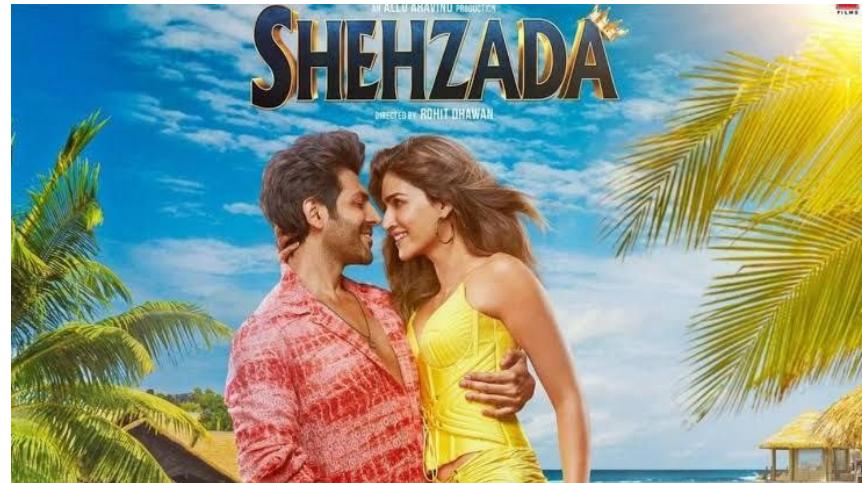
बातों को बता सकती है।” उन्होंने कहा, “एक युवा महिला को केवल तभी संपूर्ण माना जाता है जब वह अच्छी दिखती है या एक निश्चित तरह की दिखती है, शादी हो जाती है, एक बच्चा होता है। ऐसी मानसिकता है कि इन चीजों के बाद ही एक लड़की पूर्ण बनती है।”

सानिया ने कहा, “ मां बनने के बाद मैंने खेल में गापसी की क्योंकि मैं यह दिखाना चाहती थी कि मां बनने के बाद भी आप चैम्पियन बन सकते हैं और आजादी के साथ जीवन जी सकते हैं।” सानिया ने कहा, “इसका मतलब यह नहीं है कि आपको अपने जीवन के कुछ हिस्सों का त्याग करना होगा। आप मां, पत्नी या बेटी नहीं बन सकतीं। आप ऐसा करने के बाद भी चैम्पियन बन सकती हैं। सानिया ने बिल्कुल सही कहा और हाल ही में लड़कियों ने स्वर्ण जीतकर देश को एक नयी सौगात दे दी। बता दें कि भारतीय निशानेबाजों ने सोमवार को यहां आई एसाएसाएप्ट (3ं तरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ) विश्व कप में मिश्रित टीम एयर पिस्टल और राइफल स्पर्धाओं में क्लीन स्वीप किया। आर नर्मदा नितिन और मौजूदा विश्व चैम्पियन रुद्राक्ष बालासाहेब पाटिल ने 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धा जीतकर भारत को पहला स्वर्ण दिलाया। इसके बाद रविवार को व्यक्तिगत स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने वाले वरुण तोमर और रिदम सांगवान ने 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम प्रतियोगिता जीतकर भारत को दो स्वर्ण और एक कांस्य के साथ पदक के साथ तालिका में शीर्ष पर पहुंचा दिया



शहजादा

फिल्म शहजादा में कार्तिक आर्यन ने अच्छी कॉमेडी की है, एक्शन भी किया है और अपने अभिनय क्षमता से दर्शकों को कहीं कहीं इमोशनल भी कर दिया है। पर ऐसा लगता है कि फिल्म के डायरेक्टर रोहित धवन ने पूरी फिल्म अपने भार्ड वरुण धवन को ध्यान में रखकर रिराइट की है और जब उन्होंने कार्तिक आर्यन को इस फिल्म में रखा तो फिल्म उनके हिसाब से थोड़ी बहुत बदल दी। इसीलिए रोहित धवन के निर्देशन में कार्तिक आर्यन पर्दे पर वरुण धवन ही बने दिखाई देते हैं।



कलाकार - कार्तिक आर्यन, कृति रीमेक है फिल्म शहजादा। सेनन, मनीषा कोइराला, परेश रावल, रोनित रॉय और सचिन खेडेकर।

निर्माता- भूषण कुमार, कृष्ण कुमार, अमन गिल, अल्लू अरविंद, एस राधा कृष्णा और कार्तिक आर्यन।

निर्देशक- रोहित धवन

तमाम दिक्कतों को पार करके हाल ही में अभिनेता कार्तिक आर्यन की नई फिल्म शहजादा रिलीज हो गई है। यह सच बयां करती है कि हिंदी फिल्म बनाने वाले लोग समाज से कितने कट चुके हैं। आज जमाना 21वीं सदी के 23 वें साल में पहुंच गया है लेकिन फिल्मी दुनिया के ये लोग ना जमाने की समझ रखने की कोशिश करते हैं और ना ही जमाने में हो रहे बदलाव को जानते हैं। उन्हें तो बस दक्षिण भारत की हिट फिल्में को अपने हिसाब से बदलना और उसका हिंदी रिमेक तैयार करना आता है। अल्लू अर्जुन की सुपरहिट तेलुगु फिल्म 'अला बैकुंठपुरमूल' का अधिकारिक हिंदी

इस फिल्म के डायरेक्टर कॉमेडी फिल्मों के किंग कहे जाने वाले डेविड धवन के बेटे रोहित धवन हैं। उन्होंने सुपरहिट तेलुगु फिल्म के स्क्रिप्ट पर मसालेदार एंटरटेनर फिल्म बनाई है। यह एक फैमिली फिल्म एंटरटेनर है। इंटरवल से पहले फिल्म में कॉमेडी और लवस्टोरी का तड़का दिया गया है जबकि इंटरवल के बाद कार्तिक आर्यन अपनी असली फैमिली के तारणहार बनकर सामने आते हैं फिल्म में एक्शन इमोशन से लेकर कॉमेडी तक सब कुछ है। लेकिन फिल्म की मूल कहानी में निर्देशक रोहित धवन ने अपनी ओर से कुछ जोड़कर मूल फिल्म का मजा किरकिरा कर दिया है। इसी कारण कहानी थोड़ी कमजोर दिखाई पड़ती है।

तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में अब भी मेलोड्रामा चलता है जहां बच्चों की अदला-बदली की कहानी पर फिल्में बनती हैं। हिंदी सिनेमा में बच्चों की अदला-बदली

पर 70 और 80 के दशकों में फिल्में बना करती थी। शहजादा की कहानी बस इतनी है कि जिंदल इंटरप्राइजेज के मालिक रणदीप जिंदल की पत्नी और उनकी कंपनी में ही काम करने वाले एक कलर्क बाबू की पत्नी को एक ही दिन हॉस्पिटल में बच्चे पैदा होते हैं। अपने बच्चे की मालिक के घर पर परवरिश होने का खाब देख कर बाबू दोनों बच्चों को अदल बदल देता है और जब राज से पर्दा उठता है तब क्या होता है.... बस यही कहानी है फिल्म शहजादा की।

बंदू (कार्तिक आर्यन) एक मिडिल क्लास परिवार से ताल्लुक रखता है। उसके पिता बाल्मीकि (परेश रावल) बचपन से ही उसे काफी प्यार दुलार करते हैं। जिंदगी में पहली बार बंदू को समारा (कृति सेनन) से प्यार हो जाता है। बंदू उसे चाहने लगता है। लेकिन इसी बीच बंदू को अपनी जिंदगी के कड़वे सच के बारे में पता चलता है। उसे पता चलता है कि असल जिंदगी में वह एक अरबपति परिवार का गारिस है। क्या बंदू अपने असली परिवार को वापस पा लेगा। यही फिल्म का कार्य कलाइमैक्स है।

फिल्म के हीरो कार्तिक आर्यन हिंदी सिनेमा के उन सितारों में से आते हैं जिनका बॉलीवुड में कोई गॉडफादर नहीं है। पिछले साल बड़ी हिट फिल्मों में शामिल भूल भुलैया 2 से कार्तिक आर्यन की गिनती बॉलीवुड के बड़े स्टारों में होने लगी है।

फिल्म शहजादा में कार्तिक आर्यन ने अच्छी कॉमेडी की है, एक्शन भी किया है और अपने अभिनय क्षमता से दर्शकों को कहीं कहीं इमोशनल भी कर दिया है।

पर ऐसा लगता है कि फिल्म के डायरेक्टर रोहित धर्वन ने पूरी फिल्म अपने भाई वरुण धर्वन को ध्यान में रखकर रिराइट की है और जब उन्होंने कार्तिक आर्यन को इस फिल्म में रखा तो फिल्म उनके हिसाब से थोड़ी बहुत बदल दी। इसीलिए रोहित धर्वन के निर्देशन में कार्तिक आर्यन पर्दे पर वरुण धर्वन ही बने दिखाई देते हैं। वैसे ही चलने का अंदाज, वैसे ही मुस्कुराने का अंदाज और वैसे ही नाचने का अंदाज।

फिल्म की हीरोइन कृति सेनन के पास फिल्म में करने के लिए कुछ खास नहीं है। वे इस फिल्म में वकील बनी हैं पर एक वकील के पेशे की गिरिमा के हिसाब से इस फिल्म में कुछ भी करती नजर नहीं आई है। फिर भी रुपहले पर्दे पर कार्तिक आर्यन और कृति सेनन की जोड़ी जमी है।

अगर इस फिल्म में अभिनय की बात करें तो अभिनय की पूरी जिम्मेदारी बंदू के पिता के रोल में अकेले परेश रावल ने संभाल रखी है। लेकिन उनकी अदाकारी में अब रिपीटेशन नजर आने लगा है। मनीषा कोइराला को लंबे समय के बाद एक कमर्शियल फिल्म में देखकर अच्छा लगता है। फिल्म के एक सीन में दिखे राजपाल यादव ने कमाल किया है। रोनित राय, सचिन खेड़ेकर ने सपोर्टिंग रोल अच्छे से निभाया है।

यह फिल्म टी सीरीज की फिल्म है लेकिन उसका संगीत औसत से भी कम है। टी सीरीज जैसे म्यूजिक कंपनी की फिल्म का म्यूजिक इतना भी कमजोर नहीं होना चाहिए था। फिल्म में संगीत प्रीतम ने दिया है। टाइटल सॉन्ग के अलावा फिल्म का कोई दूसरा गाना फिल्म

देखकर निकलने के बाद याद नहीं रह पाता।

कोरियोग्राफर गणेश आचार्य और बॉस्को सीजर की कोरियोग्राफी में भी कुछ नयापन देखने को नहीं मिलता है। बस वन टू थ्री फोर है।

रोहित धर्वन फिल्म में शुरू से लेकर आखिर तक कुछ खास ऐसा नहीं दिखा सके हैं कि फिल्म शहजादा देखने के लिए वे दर्शकों को सिनेमा घर तक खींच लाएं। इंटरवल तक तो फिल्म दर्शकों को अच्छा पकाती है लेकिन इंटरवल के बाद फिल्म रफ्तार थोड़ी बढ़ी है। जिन लोगों ने तेलुगू फिल्म 'अला बैकुंठपुरमलु' देखी है या फिर यूट्यूब पर उसका हिंदी संस्करण देखा है, वे दर्शक तो इस फिल्म से दूर ही रहेंगे।

जिन्होंने ओरिजिनल फिल्म नहीं देखी और फैमिली के साथ बढ़िया टाइम पास करना चाहते हैं तो कार्तिक आर्यन की फिल्म शहजादा सिनेमाघर में जाकर देख सकते हैं। ■ ■



कॉमेंट करने का नतीजा

मालूम होता कि लोग हर तरह का विडियो डाल देते हैं। किसी का कोई उपर जाने वाला है उस पर कामेंट पाने के लिए भी, कोई हास्पिटल का चक्कर लगा रहा उस पर भी, कोई श्मशान घाट में आग दे रहा उस पर भी, कोई सर का केश मुड़वा रहा उसका भी। कोई मुंह में राक्षस की तरह खा रहा उस पर भी। बड़े भैया को नया मोबाइल हाथ लगा था, बस क्या था एक ही फार्मूला पर सारी समस्या का समाधान करते गए, साल्व करते गए।



राजेन्द्र कुमार सिंह



एक वर्त ऐसा था कि बड़े भैया चला जाए।

जहमतलाल फेसबुक, यूट्यूब या किसी अन्य प्लेटफार्म पर प्रेषित किसी रचना या विचार को पढ़े ही लंबा-चौड़ा कमेंट मार देते थे। हाँ, इतना जरूर था कि उस पर अन्य लोगों ने क्या कमेंट किया है उसी फॉर्मेट को देखकर पढ़ने में क्या समय देना बस इसी को ध्यान में रखकर अपने बहुमूल्य विचारों से अवगत करा देते थे—बहुत बढ़िया, लगे रहिए, ऐसे लोगों से बचकर रहिए, सफर में संभलकर चलना चाहिए, कोई खाने को दे तो उसे भूलकर भी नहीं खाना चाहिए। क्या मालूम उसमें जहर हो। आप खा लिए तो कहीं आपका जीवन में कहर बनकर दुट जाए। वह सामान लूट कर टाटा-बाय-बाय कहकर

हालांकि ये सारा कॉमेंट उस समय किया करते थे जब एक लंबे अरसे के बाद स्किन टच मोबाइल उनके हाथ लगा था। पहले वाला मोबाइल में उस तरह की सुविधा तो थी नहीं। कॉलआता-जाता था लेकिन जब नया मोबाइल आया था नेट का कनेक्शन साथ-साथ आ गया था। जिसका बड़े भैया उसका पूरा-पूरा उपयोग करने लगे थे। नतीजा यह हुआ कि बिना सोचे-समझे काम का अंजाम जाने वारे लंबे समय से बनाए गए इज़्ज़त को कौड़ी के भाव नीलाम कर नींद हराम कर लिए।

आज के लोग मोमेंट जैसा भी हो

उस पर कॉमेंट बहुत पसंद करते हैं। यही कारण है कि हर तरह का ऑडियो या वीडियो डाल देते हैं। जिस पर कॉमेंट मांगते हैं। ऐसे में किसी को फुर्सत है तो ठीक है पढ़ा और कामेंट किया। लेकिन जिसके पास समय नहीं किआपके कचरे को बारीकी से चेक करे, पढ़ें। ये जहमतलाल भैयाजी से होने वाला नहीं था। इसलिए वगैर पढ़े उस पर कमेंट कर देते थे।

इनको लगा कि फेसबुक पर खुशी में बिताए क्षण या व्यतीत किए पल का ही वीडियो बनाकर अपलोड करते हैं। मालूम होता कि लोग हर तरह का विडियो डाल देते हैं। किसी का कोई उपर जाने वाला है उस पर कामेंट पाने के लिए भी, कोई हास्पिटल का चक्कर लगा रहा उस पर भी, कोई श्मशान घाट में आग दे रहा उस पर भी, कोई सर का केश मुड़वा रहा उसका भी। कोई मुंह में राक्षस की तरह खा रहा उस पर भी। बड़े भैया को नया मोबाइल हाथ लगा था, बस क्या था एक ही फार्मूला पर सारी समस्या का समाधान करते गए, साल्व करते गए। एक ही झाँट से चाहे बाहर का हो या भीतर का अपने कॉमेंट झाइते गए।



जाहमतलाल अपना वीडियोऑडियो सेंड करने को लेकर कभी गंभीर नहीं दीखे। इससे इनको कुछ लेना देना नहीं है। हालांकि ये अपने आप में एक भारी कलाकार हैं। लेकिन इनको लंबी रेस का

घोड़ा बनने या कुछ करने में दिलचस्पी नहीं है। यदि अपने कला को प्रदर्शित कर दे तो यूट्यूब से बढ़िया पैसा पीट सकते हैं, खींच सकते हैं। सुपर हिट हो सकते हैं। लेकिन इनको जो मजा कमेंट करने में आता है इसके सिवा इनको कुछ नहीं भाता है। यहां तक इनके दोस्तों ने इनका नाम कॉमेंट बॉय तक रख दिया है। इनका मन इसी में रमता है, लगता है, खुब जमता है। इसलिए इनका मोबाइल बंद नहीं बल्कि चौबीस घंटा चालू रहता है। रात में उठ-उठकर भी कॉमेंट करते हैं।

एक दिन की बात है। इनके एक शायर मित्र महोदय के किसी नजदीकी मित्र का निधन हो गया। इन्होंने आगे पीछे

कुछ देखा नहीं कॉमेंट ठोक दिया। जाने दीजिए बहुत बढ़िया हुआ। आपको तो खुश होना चाहिए।

प्रत्युत्तर में वह भी कॉमेंट मारे। दो मिनट भी नहीं हुआ होगा कि दो सौ से ऊपर कॉमेंट का कोपभाजन बनना



पड़ा। जब यह बारीकी से मुआयना किए तो मामला समझ में आया।

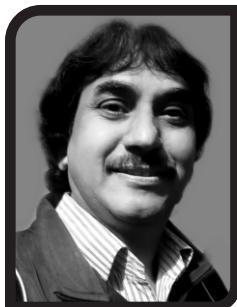
एक महाशय का बच्चा परीक्षा में फेल हो गया। इन्होंने लिख मारा-इसी तरह तरकी करते रहो। बस माता-पिता का नाम रोशन करते रहो। ईश्वर आपको ऐसा मौका आपके जीवन में बार-बार दे। तरकी ऐसे ही नहीं मिलती है।

एक नई-नई शादी हुई थी। लाल जोड़े का सीन देकर एक जबरदस्त कमेंट कर दिए-जीवन और मृत्यु जीवन का कटु सत्य है। उनके आत्मा को शांति मिले। राम नाम सत्य है। लिख दिए। आप लोग समझ गए होंगे। लानतों का कितनी बरसात हुई होगी इन पर।

मैं भी जहमतलाल भैया के पग चिन्हों पर चलने ही वाला था कि इनके हरकतों पर हमला देख मामला समझ में आ गया कि वगैर पढ़े किसी पर कमेंट करना मूर्खता है। भली-भाँति मामले को देखकर समझ कर उचित निर्णय लें कहीं ऐसा ना हो कि आज उनपर जो बरस रही है। आगे का राज ही रहने दीजिए। आपलोग खुद समझदार हैं.....।

राज कपूर नरगिस लव स्टोरी किसने किसको धोखा दिया

धीरे-धीरे इन दोनों के रिश्ते के 9 साल बीत गए। दोनों ने एक साथ 16 फिल्मों में काम किया। अब नरगिस चाहती थी कि राजकपूर उनसे शादी करें और घर बसा ले। उन्होंने इस बात का जिक्र कई बार राजकपूर से किया लेकिन वे बात टाल देते थे। धीरे-धीरे नरगिस को यह एहसास होने लगा कि राजकपूर उनसे शादी का वादा तो कर रहे हैं लेकिन वादा पूरा नहीं कर रहे हैं। नरगिस को ऐसा लगने लगा कि राजकपूर अपनी पत्नी कृष्णा को कभी नहीं छोड़ेंगे।



बृजेश श्रीवास्तव मुन्ना



जब राजकपूर को नरगिस की शादी के बारे में पता चला तो उनको जोर का झटका लगा। वे पूरी तरह से टूट गए। वे शराब पीकर घर आते और बाथटब में बैठकर फूट-फूटकर सारी रात रोते। सबसे यही कहतेउसने मुझे धोखा दिया है। अपने शरीर को सिगरेट से जलाते कि कहीं वे सपना तो नहीं देख रहे हैं।

हिंदी सिनेमा की दुनिया में कई ऐसी प्रेम कहानियां हैं जो परवान चढ़ी पर अपनी मंजिल नहीं पा सकी। इन प्रेम कहानियों में एक कहानी राजकपूर और नरगिस की भी है। उस दौर में राज कपूर और नरगिस की लव स्टोरी बहुत फेमस थी। दोनों के चर्चे हर किसी की जुबान पर थे।

नरगिस की राजकपूर से पहली

मुलाकात साल 1946 में हुई थी जब वे अपने निर्देशन में बन रही पहली फिल्म 'आग' के लिए स्टूडियो की तलाश में नरगिस की माँ जद्दनबाई के घर गए थे। जद्दनबाई उन दिनों पर फेमस प्रोड्यूसर, डायरेक्टर, म्यूजिक कंपोजर थी और 'महिला शो मैन' के नाम से चर्चित थी। जद्दनबाई घर पर नहीं थी। रसोई में नरगिस पकौड़े तल रही थी। राजकपूर ने घंटी दबाई तो नरगिस बेसन लगे हाथ से ही दरवाजा खोले आई। उनके माथे पर बेसन लग गया। यह सीन हुबहू आपने बॉबी फिल्म में देखा होगा।

उन्नीस बसंत देख चुकी नरगिस की मासूमियत और भोलेपन को देखकर राजकपूर उनके दीवाने हो गए। उस पहली मुलाकात में ही राजकपूर नरगिस को दिल दे बैठे। वे नरगिस के साथ काम



करने को बेताब हो गए। नरगिस से मुलाकात के बाद राजकपूर सीधे इंदरराज आनंद के घर पहुंचे, जो राजकपूर की पहली फ़िल्म आग की स्क्रिप्ट लिख रहे थे। राजकुमार ने उनसे कहा कि स्क्रिप्ट में किसी तरह से नरगिस का रोल जोड़ दो, क्योंकि मैं उनके साथ काम करना चाहता हूं। फ़िल्म आग की शूटिंग के समय दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई। फ़िल्म 'आग' बॉक्स ऑफिस पर बहुत सफल तो नहीं रही लेकिन रुपहले पर्दे पर राजकपूर और नरगिस की रोमांटिक जोड़ी को बहुत पसंद किया गया।

धीरे-धीरे दोनों की नजदीकियां बढ़ी और दोस्ती प्यार में बदल गई।

लेकिन दोनों के प्यार में एक बड़ी अझचन यह थी कि जब नरगिस राजकपूर की जिंदगी में आई तो वे शादीशुदा थे। दो साल पहले ही उनकी शादी कृष्णा से हुई थी और बच्चे भी थे। लेकिन इसके बावजूद राजकपूर नरगिस की बेइंतहा खूबसूरती के कारण उनसे करीब होते रहे और दोनों का रिश्ता हर दिन परवान चढ़ता रहा। ऐसे में दोनों की जोड़ी एक साथ कई फ़िल्मों में नजर आई। साल

1950 में फ़िल्म बरसात, साल 1951 में आवारा में दोनों साथ नजर आए। दोनों की जोड़ी को लोगों ने काफी पसंद किया।

फ़िल्म सुपरहिट रही और दोनों फ़िल्मों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली।

नरगिस के प्यार में दीवाने राजकपूर ने नरगिस से यह वादा कर दिया कि वे अपनी पत्नी कृष्णा को तलाक देकर उनसे शादी करेंगे। इस वादे पर भरोसा करके नरगिस ने अपना जीवन राजकपूर के भरोसे छोड़ दिया। उनका पूरा फ़िल्मी कैरियर राजकपूर और आर.के. स्टूडियो के इर्द-गिर्द घूमने लगा।

कपूर परिवार पर आधारित मध्य जैन ने अपनी किताब 'फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन सिनेमा- द कपूर्स' में लिखा है कि "नरगिस ने अपना दिल, अपनी आत्मा और यहां तक कि अपना पैसा भी राज कपूर की फ़िल्मों में लगाना शुरू कर दिया था। जब 'आवारा' फ़िल्म की शूटिंग के समय आर. के. स्टूडियो के पास पैसों की कमी हुई तो नरगिस ने अपने सोने के कंगन तक बेच डाले।

इस दौरान राज कपूर ने नरगिस को लेकर एक बड़ा फैसला किया। उन्होंने कहा कि- अब नरगिस किसी बाहर के निर्माता की फ़िल्म पर काम नहीं करेंगी। फ़िल्मी दुनिया से जुड़े लोगों ने इस फैसले का विरोध किया लेकिन राजकपूर के प्यार में पागल नरगिस ने उनकी यह बात मान ली और कई बड़े निर्माताओं के फ़िल्म ऑफर को ठुकरा दिया।

धीरे-धीरे इन दोनों के रिश्ते के 9 साल बीत गए। दोनों ने एक साथ 16 फ़िल्मों में काम किया। अब नरगिस

चाहती थी कि राजकपूर उनसे शादी करें और घर बसा ले। उन्होंने इस बात का जिक्र कई बार राजकपूर से किया लेकिन वे बात टाल देते थे। धीरे-धीरे नरगिस को यह एहसास होने लगा कि राजकपूर उनसे शादी का वादा तो कर रहे हैं लेकिन वादा पूरा नहीं कर रहे हैं। नरगिस को ऐसा लगने लगा कि राजकपूर अपनी पत्नी कृष्णा को कभी नहीं छोड़ेगे। नौ साल से इंतजार कर रही नरगिस, राजकपूर से ही शादी करना चाहती थी इसलिए वे इस सिलसिले में महाराष्ट्र के तत्कालीन गृह मंत्री मोरारजी देसाई से भी मिली पर कोई रास्ता नहीं निकला। मोरारजी देसाई ने बोला ऐसा सोचना भी मत।

नरगिस के भाई ने भी सलाह दी कि... बेबी शादी करके घर बसा लो। उसके चक्कर में मत पड़ो।

उधर राजकपूर के पिता पृथ्वीराज कपूर भी इस रिश्ते के सख्त खिलाफ थे।

राजकपूर बार-बार नरगिस से वादा करते कि वे अपनी पत्नी कृष्णा को तलाक देकर उनसे शादी करेंगे.....पर वे कृष्णा को तलाक देकर अपने घर से बगावत करना नहीं चाहते थे।

दूसरी ओर राजकपूर अपनी फ़िल्मों में अब नरगिस को जो रोल दे रहे थे उससे नरगिस पूरी तरह ऊब चुकी थी। बाहर की फ़िल्में साइन नहीं करने के कारण एक समय ऐसा आया कि नरगिस के पास आर.के. स्टूडियो की फ़िल्म श्री 420 को छोड़कर कोई फ़िल्म नहीं थी। फ़िल्म की शूटिंग में देरी थी और वे आर. के. स्टूडियो के एक कमरे में बैठकर इंतजार करती थी कि कब शूटिंग शुरू होगी। श्री 420 बनकर जब रिलीज हुई तो इस



फिल्म में नरगिस का रोल ग्लैमरस नहीं था। इससे नरगिस बहुत खफा हो गई। अपने फिल्मी कैरियर के भविष्य को लेकर आशंकित नरगिस ने राजकपूर और आर.के. स्टूडियो से दूरी बनानी शुरू कर दी। अपने भाई की मदद से बाहर की फिल्में साइन की और उनमें काम करना शुरू कर दिया। राजकपूर को यह एहसास ही नहीं था कि नरगिस अब उनसे दूर जा चुकी है।

नरगिस ने राजकपूर को बिना बताए महबूब खान की फिल्म 'मदर इंडिया' साइन की शूटिंग करने मुंबई से बाहर चली गई। नरगिस के इस कदम से राजकपूर सच्च रह गए। यहाँ से दोनों के रिश्ते में ऐसी दरार आए जो कभी भर नहीं पाई। दोनों के रास्ते हमेशा के लिए जुदा हो गए।

राजकपूर और नरगिस की अंतिम फिल्म थी 'जागते रहो' जिसके लास्ट सीन में नरगिस प्यासे राजकपूर को पानी पिला रही हैं। यही उनका अंतिम सीन था। इसके बाद वे कभी किसी फिल्म में साथ नजर नहीं आए।

मदर इंडिया के शूटिंग के समय एक दिन सेट पर आग लग गई। नरगिस चारों ओर से आग में गिर गई। फिल्म में उनके बेटे की भूमिका कर रहे सुनील दत्त ने हिम्मत करके नरगिस की जान बचाई। इसमें सुनील दत्त बुरी तरह झुलस भी गए। अस्पताल में नरगिस ने सुनील दत्त की काफी सेवा की। दोनों में नजदीकियां बढ़ीं और राजकपूर के प्यार में टूटी तन्हा नरगिस को सुनील दत्त का सहारा मिल गया। इसी सहारे के साथ नरगिस अपने जीवन में आगे बढ़ी। एक दिन कार से घर छोड़ने जाते समय सुनील दत्त ने नरगिस को प्रपोज किया। कुछ दिनों बाद सुनील दत्त को अपनी बहन से पता चला कि नरगिस मान गई हैं। वर्ष 1958 में नरगिस और सुनील दत्त ने शादी कर ली। इसके बाद नरगिस ने कभी भी राजकपूर की तरफ पलट कर नहीं देखा। नरगिस ने राजकपूर के साथ जो सपने देखे थे उन सपनों को सुनील दत्त ने पूरा किया। कहा जाता है कि सुनील दत्त से शादी करने के बाद नरगिस जितनी खुश दिखाई देती थी उतनी पहले कभी नहीं दिखी।

फिल्म 'मदर इंडिया' के कारण इस

शादी को कुछ दिनों के लिए गोपनीय रखा गया था क्योंकि इस में सुनील दत्त, नरगिस के बेटे की भूमिका में थे। जब राजकपूर को नरगिस की शादी के बारे में पता चला तो उनको जोर का झटका लगा। वे पूरी तरह से टूट गए। वे शराब पीकर घर आते और बाथटब में बैठकर फूट-फूटकर सारी रात रोते। सबसे यही कहते 'उसने मुझे धोखा दिया है।' अपने शरीर को सिगरेट से जलाते कि कहीं वे सपना तो नहीं देख रहे हैं।

कहा जाता है कि आर.के. स्टूडियो में राजकपूर के कॉटेज के पीछे नरगिस का भी एक कमरा था। जब नरगिस आर.के. स्टूडियो और राज कपूर को छोड़कर गई तो राजकपूर ने नरगिस के कमरे को कई सालों तक वैसा ही रखा जैसा वे छोड़ कर गई थी। राजकपूर को ऐसा लगता था कि एक दिन नरगिस उनके पास वापस लौट आएंगी।

पर ऐसा कभी हो न सका.....।

बीबी और पांच बच्चों की जिम्मेदारी का एहसास होने पर राजकपूर धीरे-धीरे संभल गए और कुछ समय बाद वैजयंती माला के साथ उनके इश्क के चर्चे शुरू हो गए।

3 मई 1981 को कैंसर से पीड़ित नरगिस दत्त की मौत की खबर जब राजकपूर को मिली तब वे पहले हंसे.... उसके बाद हंसते-हंसते रोने लगे। नरगिस के जनाजे में राजकपूर अपनी आंखों के आंसुओं को काले चश्मे से ढके सबसे पीछे चल रहे थे।

राजकपूर अक्सर कहा करते थे.... उनके बच्चों की मां कृष्णा है लेकिन उनके फिल्मों की मां नरगिस....। ■ ■

रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें! रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें!

AGRAWAL FOOD & SHOPPE

Shiv Kumar Agrawal

Deals in : All types of Grocery & Departmental Store
Online Grocery Store

Add : Kailashpuri Road, Near Shiv Mandir, Mughalsarai,
Dist- Chandauli, Mob. : 9565007915, 6386647094



रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें! रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें!

संदीप कुमार सिंह

पूर्व मंडल अध्यक्ष
जनपद चन्दौली भाजपा
जिलाध्यक्ष
एकल विद्यालय ग्राम स्वराज, चन्दौली



रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें! रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें!

डॉ. मु. हुजैफा

बी.यू.एम.एस (बी.यू)
पूर्व आर.एम.ओ जनता सेवा हॉस्पिटल वाराणसी
वर्तमान पता मैनाताली, कूड़ा बाजार चौकी के पास
पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर, जनपद चन्दौली



रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें! रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें!

डॉ विजय कुमार के.के. हॉस्पिटल

चकिया बाईपास के बगल में मुगलसराय चकिया मार्ग
जनपद चन्दौली



RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)

C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA, CHETGANJ, VARANASI
Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com
Mob. : 8299678756, 9598056904

FEBRUARY, 2023

PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

रंगो के पर्व होली की शुभकामनायें



सावित्री देवी

पति स्वर्गीय प्रेम प्रकाश आर्य



दीपक कुमार आर्य

(पौत्र- स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय केदारनाथ आर्य वैद्य)

क्षेत्रीय मंत्री, (काशी क्षेत्र)

भाजपा (पिछड़ा मोर्चा)

जनपदीय चेयरमैन व प्रभार पं० बंगाल

विशाल भारत संस्थान जनपद चन्दौली

पं० दीनदयाल नगर, जिला : चन्दौली

भारतीय जनता पार्टी

श्री अखिल भारतीय कान्यकुञ्ज वैश्य सभा
राष्ट्रीय व्यापार प्रांतीय संयोजक